केरल ज्योति

अगस्त 2023

ISSN 2320-9976
UGC Care - List Sr. No.58

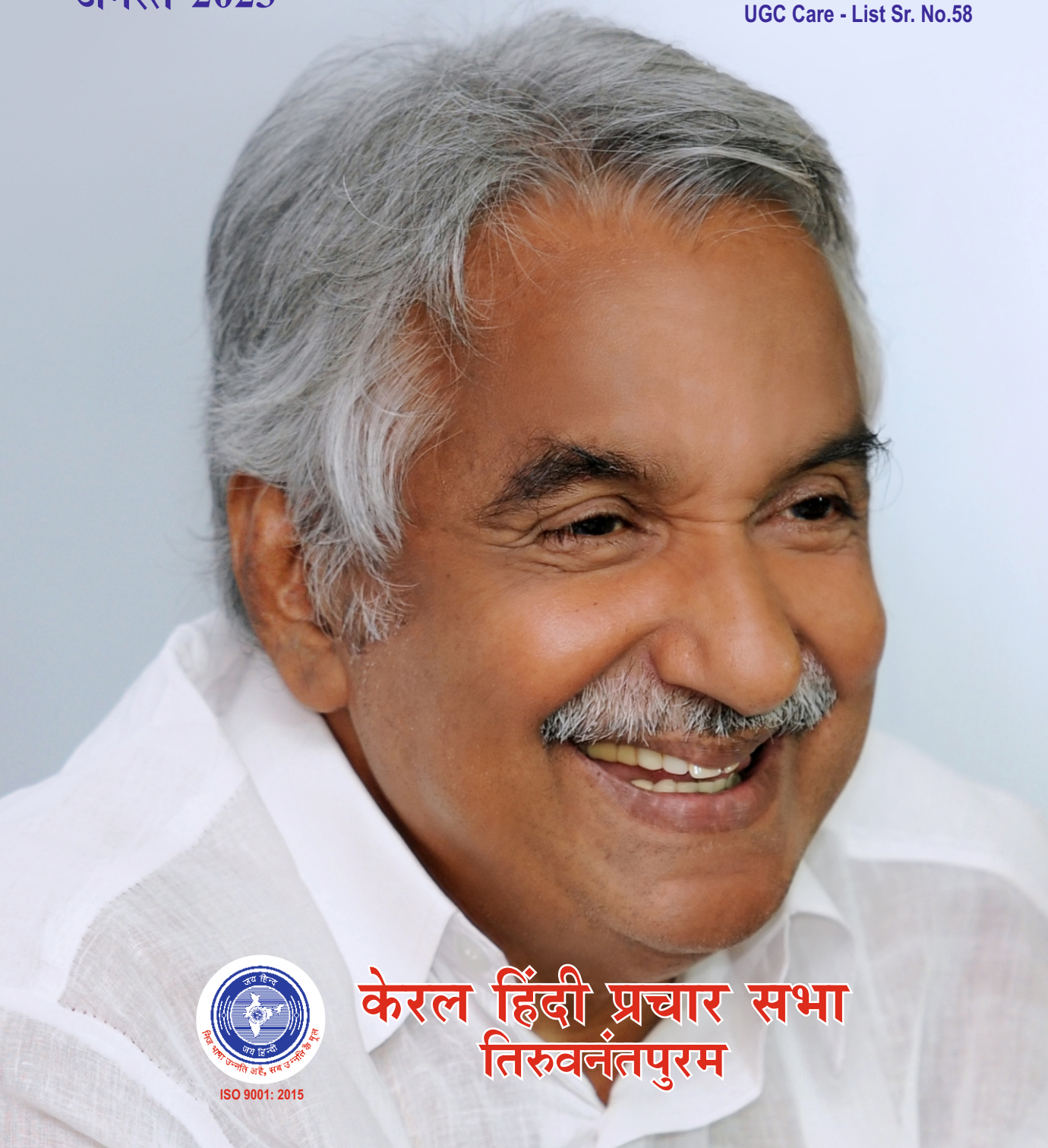

ISO 9001: 2015

केरल हिंदी प्रचार सभा
तिरुवनंतपुरम

सभा के कोषाध्यक्ष श्री.जी.सदानन्दन द्वारा रचित 'न आणे रे'
पुस्तक का प्रकाशन श्री.जोर्ज ओणक्कूर कर रहे हैं।

प्रबोध हिंदी कॉलेज के वार्षिकोत्सव में सभा की विश्व हिन्दी पुरस्कार प्राप्ति पर
सभा के मंत्री का अभिनन्दन श्री.एम.विन्सेंट एम.एल.ए. कर रहे हैं।

स्वर्गीय के वासुदेवन पिल्लै
अनुस्मरण सम्मेलन का उद्घाटन
भाषण प्रो.जी.बालचन्द्रन दे रहे हैं।

केरलज्योति

केरल हिंदी प्रचार सभा की मुख पत्रिका

(केंद्रीय हिंदी निदेशालय की वित्तीय सहायता से प्रकाशित)

पूर्व समीक्षा समिति

प्रो.(डॉ). एन.रवींद्रनाथ
डॉ. के.एम. मालती
प्रो.(डॉ.) आर. जयचन्द्रन
प्रो.(डॉ). जयश्री.एस.आर

परामर्श मंडल

डॉ.तंकमणि अम्मा एस
डॉ.लता पी
डॉ. रामचन्द्रन नायर जे

प्रबन्ध संपादक

गोपकुमार एस (अध्यक्ष)

मुख्य संपादक/संपादकीय दायित्व

प्रो.डी.तंकप्पन नायर

संपादक

डॉ. रंजीत रविशैलम

संपादकीय मंडल

सदानन्दन जी
श्रीकुमारन नायर एम
प्रो.रमणी वी एन
चन्द्रिका कुमारी एस
एल्सी सामुवल
आनन्द कुमार आर एल
प्रभन जे एस
अधिवक्ता मधु बी (मंत्री)

सूचना : लेखकों द्वारा प्रकट किये गये मत उनके अपने हैं। उनसे संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।

पुष्प : 60 दल : 5 अंक: **अगस्त 2023**

अनुक्रमणिका

संपादकीय 5

केरल हिंदी प्रचार सभा के कर्मठ प्रचारक और समर्पित हिंदी सेवी स्व. के.पी.के पिषारटी (संस्मरण) -**अधिवक्ता मधु.बी** 6

स्त्री कविता : संवेदना के स्तर - **डॉ. गणेश.एम.** 7

सूतपुत्र : एक वजूद की दास्तान - **डॉ. शीतल दुर्गाडे** 9

'झरोखे' उपन्यास में बाल-मनोविज्ञान - **डॉ. माजिदा.एम** 12

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी महिला कहानीकार : एक अंतरंग पहचान **डॉ. राजेष कुमार.आर** 14

क्या मैं याद रखूँ? (कविता) **सुजित.एस** 15

रंग संगीत : नाट्यभाषा की आत्मा - **अभिषा. एम.एम** 16

हे दुःख! विदा, अलविदा (कविता) **डॉ.जे.रामचन्द्रन नायर** 18

अकाल और उसके बाद :
प्रयोगधर्मिता एवं संरचना की नज़र में -**प्रो.(डॉ.) मनु** 19

'छावनी में बेघर' कहानी संग्रह में चित्रित नारी समस्याएँ-**हीरा चंद्रन** 22

'उतनी दूर मत ब्याहना बाबा' कविता में स्त्री विमर्श-**डॉ.षेर्लिन** 26

दो परछाइयाँ (कविता) - **डॉ.नवीना.जे.** 27

प्रवासी हिन्दी कहानियाँ - चेतना और चिंतन -**डॉ.सिन्धु.एस.एल** 28

शकेबा उपन्यास में नारी - **सजिता.एस.आर** 32

समकालीन कविता में घरेलू औरत की जिन्दगी - **डॉ.सुजित एन तंपी** 35

मुक्तिबोध की कविता ज़िंदगी का रास्ता एक विश्लेषण-
डॉ.जस्टी इम्मानुएल 38

अतिक्रमण (कविता) - **डॉ.के.एम.मालती** 41

दूनी गाँठ की गठरी - **मूल : के.एल. पॉल**
अनुवाद : प्रो.डी.तंकप्पन नायर व अधिवक्ता मधु.बी. 42

चेतन भगत के कथा साहित्य 'फाइव पाइंट समवन' पर आधारित फिल्म थ्री इडियट्स में वर्तमान शिक्षा प्रणाली का चित्रण
डॉ.रिंकू भाटिया / डॉ.पायल भाटिया 44

हिंदी साहित्य और साइबर स्पेस - **डॉ.एम.संगीता** 47

देवयानम् (आत्मकथा)
मूल : डॉ.वी.एस. शर्मा, अनुवाद : प्रो. के.एन.ओमना 50

नागरिक (कविता) - **राजपुष्पम पीटर** 53

प्रश्नोत्तरी - **डॉ. एस. श्रीदेवी** 54

मुखचित्र : केरल के पूर्व मुख्यमंत्री स्व.उम्मन चांडी

लेखकों से निवेदनः

• हिन्दी और इतर भारतीय भाषाएँ, साहित्य, संस्कृति आदि पर लिखी गयी उच्च स्तरीय मौलिक एवं अप्रकाशित रचनाएँ आमंत्रित हैं। • भाषा, साहित्य, संस्कृति आदि पर आयोजित समारोहों, चर्चाओं, संगोष्ठियों के समाचारों का भी स्वागत है। इन समाचारों को प्रस्तुत करनेवाले का नाम और पूरा पता भी लिख भेजें। • भारतीय भाषाओं से अनूदित कविता, कहानी भी भेजें। उनके साथ मूल लेखक से प्राप्त अधिकार पत्र भी प्रेषित करें। • प्राकाशनार्थ रचनाएँ साफ-साफ अक्षरों में लिखकर अथवा टंकित कर या **डी.टी.पी.** करके **सी.डी.** में भेजें। कृपया कार्बन प्रति न भेजें। • स्वीकृत रचनाएँ यथासमय पत्रिका में प्रकाशित की जाएँगी। • आप ई-मेल द्वारा भी अपनी रचनाएँ भेज सकते हैं। ई-मेल में Microsoft Word or Pagemaker फाइल में भेजिए। ई-मेल आईडी :khpsabha12@gmail.com • अपनी रचना के साथ पूरा पता (जिला, राज्य और पिनकोड सहित), लघु परिचय और फोटो भी भेजें।

संपादक, 'केरल ज्योति', केरल हिन्दी प्रचार सभा,
तिरुवनन्तपुरम-695 014

सभा का मुख्यालय और उसकी गतिविधियाँ

केरल की राजधानी तिरुवनंतपुरम के वषुतक्काड़ में सभा का मुख्यालय स्थित है। सभा के मुख्य परिसर में सभा के संस्थापक मंत्री की पावन स्मृति में श्री वासुदेवन पिल्लै स्मारक हिंदी ग्रंथालय, स्नातकोत्तर अध्ययन अनुसंधान केंद्र, साहित्याचार्य महाविद्यालय, केंद्रीय हिंदी महाविद्यालय, टंकण और आशुलिपि संस्थान, परीक्षा भवन, राष्ट्रवाणी मुद्रणालय, राष्ट्रज्योति पब्लिशेर्स के प्रकाशन अधिकारी का कार्यालय, हिंदी अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालय (बी.एड़) और केरल विश्वविद्यालय की मान्यता प्राप्त शोध केंद्र हैं।

विज्ञापन दर (साधारण अंक)

	मासिक	वार्षिक
आवरण पृष्ठ 4 (रंगीन)	रु.2500.00	25,000.00
आवरण पृष्ठ 2 एवं 3 (रंगीन)	रु.2000.00	20,000.00
साधारण पृष्ठ पूरा	रु.1000.00	10,000.00
साधारण पृष्ठ 1/2	रु.600.00	6,000.00
साधारण पृष्ठ 1/4	रु.350.00	3,500.00

एक प्रति का मूल्य रु. 25/- आजीवन चंदा : रु. 2500/- वार्षिक चंदा : रु. 250/-

A /c No. 57022786007 IFS Code : SBIN0070033
State Bank of India, Vazhuthacaud Branch

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा, वषुतक्काडु, तिरुवनन्तपुरम-695 014.
दूरभाष:0471-2321378, 2329200, 2329459. फैक्स:0471-2329200 ई-मेल : khpsabha12@gmail.com

दूरभाष : 0471-2321378, 2329200, 2329459
फैक्स : 0471-2329459
मोबाईल : मुख्य संपादक : 9995680289 संपादक : 7898515222
E-mail : khpsabha12@gmail.com
Website : www.keralahindipracharsabha.com

केरलज्योति
सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका
अगस्त 2023

संपादकीय

केरल के पूर्व मुख्यमंत्री स्व.उम्मन चांडी को हार्दिक श्रद्धांजलियाँ

केरल के पूर्व मुख्यमंत्री का हाल ही में निधन हुआ जिसका गहरा आघात जन-हृदयों में हुआ है। उन्होंने कॉग्रेस के वरिष्ठ नेता के रूप में, कई बार मंत्री के रूप में और अंत में मुख्यमंत्री के रूप में जो अमूल्य सेवा की है उसकी याद केरल की जनता सदा करेगी। मृत्यु के समय वे 79 वर्ष के थे। जब उनकी मृत्यु की जानकारी मिली तब भारत के गणमान्य व्यक्तियों ने उनके निधन पर शोक प्रकट किया। उन लोगों में भारत के प्रधान मंत्री माननीय नरेंद्र मोदीजी, उनके मंत्री मंडल के कई सदस्य, कांग्रेस के संसदीय दल की प्रमुख सोणिया गाँधी, राहुल गाँधी, कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड्गे आदि ने दिवंगत नेता को श्रद्धांजलि दी। खड्गे ने पत्रकारों से कहा कि उम्मन चांडी का निधन देश और केरल राज्य के लिए बड़ी क्षति है। केरल के मुख्य मंत्री श्री पिणरायी विजयन और उनके मंत्री मंडल के अन्य सदस्यों ने भी दिवंगत नेता को श्रद्धांजली अर्पित की।

उम्मन चांडी विगत कुछ समय से बीमार थे और उपचार के लिए बंगलूरू में थे। यद्यपि उनका निधन आकस्मिक नहीं कहा जा सकता तो भी केरल की जनता के लिए असहनीय वेदना का कारण बना।

उन्होंने अपने अधिकार को जनसेवा के लिए उपयोग किया। उन्होंने श्रम, वित्त और गृह मंत्री के रूप में जो महत्वपूर्ण सेवा की, वह अविस्मरणीय दक्षता का परिचय देती है। जब पत्रकार उनसे अप्रिय प्रश्न पूछा करते थे तब भी मुस्कराहट के साथ जवाब दिया करते थे। जब वे मंत्री और मुख्यमंत्री रहे थे तब भी विधान सभा के सदस्यों के प्रति भी यह रवैया अपनाते थे। उनके जीवन में सबके प्रति सौहार्द का व्यवहार होता था। इसीलिए विपक्षी सहित सभी दलों के लोग उनका सम्मान करते थे। एक प्रकार से राजनीति के क्षेत्र में वे एक 'अजातशत्रु' हैं। उनका संपूर्ण जीवन जनसंपर्क में रहा। इस कारण जनता के कष्टों तथा उनको सताती समस्याओं के प्रति उन्हें सही जानकारी थी। जनहृदय का स्पंदन समझनेवाले जननेता होने के कारण और उनकी समस्याओं को दूर करने के लिए भरसक प्रयत्न करने के कारण उन्होंने जन-हृदयों में अमिट स्थान पाया है। इसीलिए तो उनकी विलाप यात्रा में लाखों लोगों ने भाग लिया था।

उन्होंने लगातार 53 साल तक एक ही (पुतुप्पल्ली) निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। यह भारत के संसदीय इतिहास में एक रिकार्ड है। लोगों का विश्वास है कि यह रिकार्ड, रिकार्ड होकर ही रहेगा। 'केरलज्योति' परिवार जनप्रिय दिवंगत नेता स्वर्गीय उम्मन चांडी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

प्रो.डी.तंकप्पन नायर

संस्मरण

केरल हिंदी प्रचार सभा के कर्मठ प्रचारक और समर्पित हिंदी सेवी स्व. के.पी.के पिषारटी

अधिवक्ता मधु.बी

केरल में हिंदी भाषा का प्रचार बीसवीं सदी के दूसरे दशक में शुरू हुआ था। महात्मा गाँधीजी का आह्वान सुनकर केरल के अनेक लोग हिंदी सीखने-सिखाने को तैयार होकर आये। उनमें एक थे श्री के.पी.के. पिषारटी।

त्रिश्शूर जिले के कोटकरा गाँव में 1927 मई 18 को उनका जन्म हुआ था। चात्तनाक्कल पिषारत चक्रपाणी पिषारटी तथा कूट्टाले पिषारतेतु कुंजुकुट्टी पिषारस्यार उनके माता-पिता थे। गरीबी में उनका बचपन बीता था। उन्होंने दीर्घ-अवधि तक केरल हिंदी प्रचार सभा की शासक समिति का सदस्य रहकर हिंदी प्रचार कार्य में सहयोग दिया था। इन्होंने श्रेष्ठ हिंदी प्रचारक का सम्मान भी पाया था। उनके हर सत्कर्म में उनकी पत्नी पार्वती. पी.वी. का सहयोग मिलता रहा।

1962 में उन्होंने तिरुवनंतपुरम के शास्तमंगलम में एक हिंदी विद्यालय खोला-नवभारत हिंदी विद्यालय। वहाँ हिंदी के विविध परीक्षाओं के पाठ्यक्रमों में छात्र-छात्राओं को शिक्षण देने लगे। बड़ी तादाद में बच्चे पढ़ने यहाँ आते थे।

1981 में नवभारत हिंदी विद्यालय का नामकरण किया गया - नवभारत हिंदी कॉलेज। 12-6-1987 को इस विद्यालय की रजतजयंती समारोह मनाया गया। 24-5-1997 में इन कर्मठ प्रचारक का सप्तति समारोह मनाया गया। 3-5-2004 में वे देशीय हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा सम्मानित किए गए। 29-7-2005 में केरल हिंदी साहित्य अकादमी द्वारा वी.जे.टी. हॉल में आयोजित सम्मान-समारोह में वे समादृत हुए थे।

महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू, इंदिरागाँधी, जयप्रकाश नारायण आदि महान राजनैतिक नेताओं को निकट से देखने का सौभाग्य उनको मिला था। भूतपूर्व मुख्य मंत्री करुणाकरण, पनंपिल्ली गोविंद मेनोन, इ.एम.एस नंबूतिरिप्पाटु जैसे महान नेताओं से भी इनका संबंध था।

2012 अगस्त के चौथे दिन इनका देहावसान हुआ। उनका बेटा श्री पी.पी.मुरलीधरन अब हिंदी के प्रचार कार्य में तल्लीन हैं और सभा की कार्यकारिणी के सदस्य के रूप में स्तुत्य कार्य कर रहे हैं। उनकी पत्नी श्रीमती रमादेवी भी केरल हिन्दी प्रचार सभा की प्रचारिका है।

स्व.पिषारटी मास्टर के कई शिष्य आज केरल के शीर्षस्थ प्रतिभावान सज्जन हैं। भूतपूर्व मुख्य सचिव श्री जिजी तॉम्सण आई.ए.एस., श्री के.मुरलीधरन एम.पी., वटकरा, पद्मजा वेणुगोपाल, के.पी.सी.सी सचिव, इंडियन एक्सप्रेस के भूतपूर्व मुख्य संपादक श्री माधवनकुट्टी, भूतपूर्व जिला जज श्री देवपाल, तिरुवनंतपुरम के भूतपूर्व डेप्यूटी मेयर श्रीमती राखी रविकुमार आदि उनकी शिष्य परंपरा में आते हैं।

पिषारटीजी के शिष्यगण हर साल चार अगस्त को उनके स्मृति दिवस के रूप में मनाते है। आप मेरे लिए गुरुतुल्य हैं और मेरे मन में उनके प्रति असीम श्रद्धा एवं अत्यन्त आदर का भाव है। उनकी स्मृति के समक्ष नतमस्तक होकर प्रणाम करता हूँ।

मंत्री, केरल हिंदी प्रचार सभा

स्त्री कविता : संवेदना के स्तर

डॉ. गणेश.एम.

अपने जीवन के अनुभवों को अभिव्यक्त करने का सशक्तमाध्यम है कविता। साहित्य को विकसित करने का सबसे श्रेष्ठ माध्यम कविता है। कविता का जैविक संबंध मानव के जीवन से ही होता है। उसके जीवन से उर्जा पाकर ही कोई भी महान कृति प्रणीत होती है। मानव जीवन जितना पेचीदार बनता जा रहा है,उतना ही उसकी कविता भी संवेदना और संरचना दोनों स्तरों पर संकीर्ण होती है।

संवेदनाएँ मनुष्य का अभिन्न अंग हैं। हम संवेदनहीन मनुष्य की कल्पना भी नहीं कर सकते। प्रत्येक व्यक्ति अपने हृदय में उठने वाले भावों, मनोविकारों को अनुभव करने के बाद ही उसे प्रेक्षणीय बनाता है। जिस प्रकार चित्रकार अपने भावों को चित्र के द्वारा, शिल्पकार मूर्ति के द्वारा, कुम्हार अपने घडों के द्वारा अपनी भावनाओं को व्यक्तकरता है, उसी प्रकार साहित्यकार भी अपने विचारों को, संवेदनाओं को, अनुभवों को अपनी रचना के द्वारा व्यक्तकरता है।

सामान्य मनुष्य और साहित्यकार में अंतर केवल यही है कि सामान्य मनुष्य संवेदनाओं को अनुभव करता है लेकिन उसका साधारणीकरण नहीं कर पाता। लेकिन साहित्यकार अपने जीवन, समाज, संस्कृति, धार्मिकता,सांसारिकता,आदि स्रोतों से जो अनुभव प्राप्त करता है, उसे अपनी रचना के द्वारा लोगों तक प्रेषित करता है।

हिंदी कवयित्रियों ने भी अपनी कविताओं के द्वारा माननीय संवेदनाओं को उजागर किया है। इंदु सिन्हा जी अपनी 'बेटी के प्रति' कविता में बहुत दिनों के बाद जब एक माँ अपनी बेटी की आवाज सुनती है तो उसे जो सुख का अनुभव होता है, उसे इन पंक्तियों में व्यक्तकिया है - "आज बहुत दिनों के बाद/तुम्हारा फोन आया है।/तुम्हारी मीठी आवाज/घुंघरू सी खनखनाती तुम्हारी हँसी,/बहुत दिनों की बात सुनी है मैंने।/ ढेर सारे फूल खिल गए।/ मंजरीत हो गया मन का कोना।"[1] (बेटी के पति -पृष्ठ 34) कविता में एक माँ के अंतःकरण की भावनाओं का चित्रण है।

मनुष्य का जीवन सुख और दुख का संगम है। दुख जीवन का वास्तविक सत्य है, जिसे प्रत्येक व्यक्ति को भोगना ही पड़ता है। गगन गिल जी 'दुख उसने' कविता में एक बौद्ध भिक्षु का वर्णन करते हुए कहती है कि -"दुख उसने/ बहुत दिन हुए/ पीछे छोड़ दिए थे/ भिक्षु की पीड़ा में/संसार जलता है अब।[2] (दुख उसने -पृष्ठ -14)

बौद्ध भिक्षु जीवन के सभी सुख, दुख, इच्छाएँ, आशायें आदि का त्याग करके निर्वैयक्तिक जीवन यापन करते हैं। उनका एकमात्र लक्ष्य होता है - लोक कल्याण। मानव को अपने व्यवहार में परिवर्तन लाकर विश्व शांति के लिए प्रयास करना चाहिए। कात्यायनी जी ने कहा है कि अपरिचित रह जाना दुख है- वही सबसे बड़ा दुख होता है। व्यक्तिको सुख और दुख को समान रूप से ग्रहण करते हुए जीवन को सफल बनाना चाहिए।

मनुष्य जाति के विकास के लिए कामपरक संवेदना आवश्यक है। काम भावना के अभाव में यह सृष्टि आगे नहीं बढ़ सकती। समकालीन कवयत्रियाँ भी अपनी कविताओं के माध्यम से इसी काम भावना को नाना रूपों में उजागर करती हैं - निर्मला पुतुल जी भी अपनी 'सुगिया' कविता में कहती हैं कि - "सुबह से शाम तक दिनभर मरती खटती सुगिया/सोचती है अक्सर/यहाँ हर पाँचवाँ आदमी उससे/ उसकी देह की भाषा में क्यों बताता है।"[3] (सुगिया -पृष्ठ -81)

सुगिया एक गांव की लड़की है, गांव के सभी पुरुष सुगिया का हँसना,गाना, उसके होंठ,उसकी आँखें आदि सभी शारीरिक अंगो का वर्णन करते हैं। यह सब सुनकर सुगिया सोचती है कि क्यों पुरुष लोग सिर्फ मेरे शारीरिक अंगों का ही वर्णन करते हैं और क्यों मेरी मेहनत, ईमानदारी

और भोलापन आदि गुणों की प्रशंसा नहीं करते। कवयित्री कहना चाहती है कि पुरु षों को केवल नारी का शरीर चाहिए। उसे नारी के गुण, इच्छाएँ,आशाएँ आदि से कोई संबंध नहीं होता।

'सिर्फ शरीर' कविता में कवयित्री ममता कालिया जी प्रेमी और प्रेमिका के माध्यम से कहती है कि -"उसने मांगा सिर्फ शरीर/और संतुष्ट हो गया।"[5] (सिर्फ शरीर -पृष्ठ 46)

कवयित्री कहना चाहती है कि प्रेमी और प्रेमिका एक दूसरे से बहुत कुछ माँग सकते हैं जैसे हँसी,इरादे, खुशियाँ, कार्यक्रम, बातें, विचार,-विमर्श और किस्से। लेकिन उन दोनों ने एक दूसरे से सिर्फ शरीर मांगा और संतुष्ट हो गए। लेकिन जब वे दोनों उठे तो दोनों उतने ही अकेले थे जितने कि दो अंधे लैंपपोस्ट। कविता का तात्पर्य यह है कि प्रेम में केवल शारीरिक मिलन का ही महत्व नहीं होता। जब तक प्रेमी और प्रेमिका के बीच एक दूसरे की भावनाएँ, विचार विमर्श, खुशियाँ, इच्छाएँ आदि का समन्वय ना हो, तब तक उनका प्रेम सफल नहीं हो सकता। इन भावनाओं को त्याग कर केवल शारीरिक संबंध बनाते हैं, तो उनके बीच अजनबीपन की भावना अवश्य आएगी। इसलिए प्रेमी व प्रेमिका को पहले एक दूसरे को समझना आवश्यक है।

समकालीन कवयित्रियों ने काम भावना के अनेक रू पों को चित्रित किया है। मनुष्य के जीवन में क्रोध की भावना नितांत बनी रहती है। मनुष्य को जब अपने दुख के कारण का ज्ञान होता है,तो उसमें क्रोध की भावना उत्पन्न होती है। आधुनिक युग में मनुष्य हर प्रकार के अत्याचारों को सहने का आदी हो गया है। उस पर राजनीति,आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक आदि गंदी व्यवस्था पर अनेक प्रकार का शोषण कर रहा है, लेकिन वह इस व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह करने के बदले सब कुछ सहन करते हुए चुपचाप बैठा है। कात्यायनी जी अपनी 'ऐसा किया जाए कि' कविता में कहती है कि " एक साजिश रची जाए/ बारूदी सुरंगे बिछा कर/ उड़ा दी जाए/चुप्पी की दुनिया।"[6] (ऐसा किया जाए -पृष्ठ -43)

इसलिए कवयित्री इसी चुप्पी को बारूद से उड़ाना चाहती है, अर्थात जनता में नारी शोषण के विरुद्ध विद्रोह की मनोभावना जाग्रत करना चाहती है। अपनी कविताओं के द्वारा यह निरूपित किया गया है कि स्वस्थ समाज और भ्रष्टाचार मुक्त व्यवस्था के लिए जनता को जागृत रहना आवश्यक है।

रमणिका गुप्ता जी अपनी 'हत्या या युद्ध ' कविता में द्वितीय विश्वयुद्ध में जापान पर गिराए गए अणु बम से हुए विनाश पर करुणा व्यक्तकरते हुए कहती है कि –"एक बम फ़ेंका था बस/ एक रोशनी हुई थी/अद्वितीय सुंदर अकल्पनीय/ जिसने / सबकी आंखों की रोशनी छीन ली/ एक मोहक सी महक फैली/ जिसने असंख्य प्राणों की/ गंध छीन ली/रोशनी/फैल गई/लाखों, लाख मृत/ अपंग/कराहते झुण्ड/पीढ़ीयों तक नस्लें खराब हो गईं।"[7] (हत्या या युद्ध, पृष्ठ -14)

रमणिका जी ने प्रस्तुत कविता में युद्ध से होने वाले विनाश का चित्रण करने के साथ-साथ उस विनाश का शिकार हुए लोगों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की है। करुणा की भावना एक सात्विक भावना है। मनुष्य को प्रत्येक जीव के प्रति करुणा दिखानी चाहिए। जिस प्रकार मनुष्य को कष्ट, समस्याएँ और दुख का सामना करना पड़ता है,उसी प्रकार संसार के अन्य जीवों को भी अनेक प्रकार की कठिन परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है। तब अगर मनुष्य उन पर दया दिखाता है तो वह मनुष्य होने में सार्थकता का अनुभव करता है। आधुनिक काल में जहाँ मनुष्य इतना स्वार्थी हो गया है कि वह केवल अपने लाभ के बारे में ही सोचता है जिससे हर जगह पर हिंसा, भ्रष्टाचार,अत्याचार की घटनाएँ बढ़ रही हैं।

सहायक प्रोफसर, हिंदी विभाग
सरकारी आर्ट्स & साइन्स कॉलेज,
चेलक्करा, त्रिश्शूर

सूतपुत्र : एक वजूद की दास्तान

डॉ. शीतल दुर्गाडे

हिंदी नाटक की परंपरा में विनोद रस्तोगी लोकप्रिय नाटककार हैं। उन्होंने रंगमंच को आधार बनाकर नाटक लिखे हैं। रेडिओ नाटककार के रूप में भी उन्हें ख्याति प्राप्त हुई। उनके द्वारा लिखित काव्य नाटक 'सूतपुत्र' सन् 1974 में प्रकाशित हुआ। हिंदी काव्यनाटक की परंपरा में 'अंधा युग', 'एक कंठ विषपायी', 'संशय की एक रात', 'उत्तर प्रियदर्शी' आदि सफल काव्य नाटक माने जाते हैं। इस परंपरा में 'सूतपुत्र' यह काव्य नाटक भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है।प्रस्तुत नाटक रंगमंच के साथ -साथ आकाशवाणी से भी सफलता से प्रसारित हुआ है। आज भी इस नाटक के कई सफल मंचन हो रहें है, जो नाटक की रंगमंचीय क्षमता को सिद्ध करतें है । महाभारत का पात्र कर्ण के व्यक्तित्त्व और जीवन पर आधारित यह नाटक आधुनिक युग में हर उस व्यक्ति के जीवन संघर्ष को चित्रित करता है जिसे विशिष्ट व्यवस्था द्वारा हाशिए पर रखा गया हो। वैसे हिंदी की पौराणिक नाट्य लेखन परंपरा में कर्ण के जीवन को आधार बनाकर बहुत से नाटक लिखे गए जो कर्ण की दानवीरता, मित्र प्रेम और करुणा, सहृदयता को स्पष्ट करतें हैं। इस नाटक में भी कर्ण के व्यक्तित्व की यह विशेषताएँ प्रस्तुत हुई हैं लेकिन साथ-साथ यह नाटक कर्ण के जीवन की वेदना और यातना को हमारे सम्मुख रखता है।

मुख्यतः मनुष्य का जीवन उसके अस्तित्व पर निर्भर होता है। जिसमें उसकी अपनी गरिमा अहमियत रखती है। हर व्यक्ति की यही कामना होती है की, उसके अस्तित्त्व को समाज द्वारा स्वीकारा जाए, उसे एक सही पहचान मिलें। उसका कर्म, उसके सम्मान का साधन बन सकें। नाटक के आरंभ से ही कर्ण परिवार और समाज की अवहेलना का शिकार होते दिखाई देते हैं। प्रथम अंक की शुरुआत ही कौरवों द्वारा आयोजित शस्त्र- अस्त्र प्रदर्शन में कर्ण के हिस्सा लेने की घटना से होती है। इस प्रकार के प्रदर्शन केवल उच्चकुलीन लोगों के लिए होते है यह समझाते हुए माता राधा कर्ण को शस्त्रास्त्र प्रदर्शन में शामिल होने से मना करती है। लेकिन इन सब बातों का विरोध कर कर्ण प्रदर्शन में शामिल होता है। राजकुमारों के इस अस्त्र शस्त्र प्रदर्शन में गुरुद्रोणाचार्य और अर्जुन द्वारा कर्ण को कुल और वंश के कारण अपमानित किया जाता है।

"अर्जुन : सूतपुत्र ! तू करेगा मेरी समानता ?
अज्ञात कुलशील, वंश का पता नहीं
पहले यह बता तेरे माता- पिता कौन है !"[1]

अर्जुन और कर्ण के बीच घटित उपर्युक्त संवाद वंशभेद को स्पष्ट करता है। इस प्रकार चाहते हुए भी इस प्रदर्शन में कर्ण को अपना कौशल दिखाने से रोका जाता है। जिसका मुख्य कारण था, कर्ण के प्रति द्रोणाचार्य और अर्जुन की मानासिकता, जो व्यक्ति को व्यक्ति के रूप में स्वीकार करने से कतराती है ।

साथ ही दुर्योधन के आग्रह पर कर्ण पांचाल में द्रोपदी स्वयंवर में शामिल होता है । स्वयंवर के नियमानुसार लक्ष्य भेद करने जैसे ही कर्ण उपस्थित होता है तब भरी सभा में "मै कदापि नहीं वरूँगी एक सूतपुत्र को।"[2] यह कहकर योग्यता होने के बावजूद भी द्रोपदी द्वारा कर्ण को अपमानित किया जाता है। कर्ण की इसी स्थिति को स्पष्ट करते हुए डॉ.राजेंद्र मोहन भटनागर कहते है, "नाटक में वर्ग विशेष को महत्त्व देकर व्यक्तिकी महानता को अस्वीकारा गया है। कर्ण सूतपुत्र है। उसके व्यक्तित्त्व को नकारने के लिए तत्कालीन कौलिन्य समाज के पास यही कारण पर्याप्त है। वह राधा द्वारा पालित है। अधीरथ ने उसको पिता का नाम दिया है। उसने जब भी अपने पौरुष का परिचय देना चाहा है तभी उसको वंश आदि के कारण नीचा देखना पड़ा है।"[3] इस प्रकार समाज द्वारा निर्धारित वर्णभेद, वंशभेद और जातिभेद इन साँचों को कर्ण अपने कर्म के माध्यम से बदलना चाहता है। व्यक्ति जन्म से नहीं बल्कि कर्म से महान बन सकता है इसी विचारधारा को लेकर कर्ण जीवन में आगे बढ़ता है। खुद के अस्तित्व को एक पहचान देना उसके जीवन का प्रमुख साध्य है। उसे खुद पर विश्वास है। वह माता राधा से कहता है -

"जन्म लेकर नीच वंश में भी,
व्यक्तियदि चाहे तो महान बन सकता है!
माँ! मैं जन्म से हूँ मात्र एक सारथी;
किंतु पुरुषार्थ से बनूँगा महारथी।"[4]

जन्म से शुरू हुआ कर्ण का संघर्ष विविध पडाओं से गुजरता है। उसकी यह लड़ाई अपनों तक ही सीमित नहीं रहती बल्कि गुरु - शिष्य संबंधों पर भी इसके परिणाम दिखाई देते हैं। द्रोपदी द्वारा हुए अपमान का बदला लेने हेतु कर्ण ब्रम्हास्त्र विद्या सीखने के लिए विश्वरूप धारण कर गुरु परशुराम के पास जाता है। लेकिन जब गुरु परशुराम को एक घटना के द्वारा पता चलता है की विश्वरूप धारण किया हुआ यह शिष्य सूतपुत्र है तब गुरु परशुराम कर्ण की योग्यता को बढ़ावा देने के बजाय उसके कुल और वर्ण पर प्रश्नचिह्न उपस्थित करते है। वह कर्ण को उनके द्वारा सीखी हुई ब्रम्हास्त्र विद्या भुलाने का शाप देता है। गुरु परशुराम का यह बर्ताव हमें द्रोणाचार्य की याद दिलाता है। जिनके लिए ज्ञानदान से भी ज्यादा महत्वपूर्ण बात वंश और कुल का श्रेष्ठत्व था।

नाटक के दूसरे अंक के एक प्रसंग में पहली बार कुंती महाभारत के युद्ध से पहले कर्ण को मिलने आती है। वह कर्ण को उसके जन्म का रहस्य बताती है तथा कर्ण से पांडवों के प्राणों की रक्षा एवं सहायता माँगती है। उसके पाँचों पुत्र जीवित रहेंगे यह आश्वासन कर्ण देता है। लेकिन कुंती को कर्ण की मृत्यु की कोई चिंता नहीं है। तब कर्ण की आतंरिक वेदना निम्न संवादों में स्पष्ट हुई है -कर्ण : "जन्म यदि मिलता निम्न कुल में - वैधता से, मैं तान सीना, सिर उठाकर चल पाता! किंतु यह अवैध जन्म, अवांछित पुत्र, परित्यक्त जनक-जननी से, अस्वीकृत अस्तित्व ! ओह आप नहीं समझेंगी - मैंने क्या भोगा है!"[5]

उपर्युक्त संवादों में 'अवांछित पुत्र' यह शब्द कर्ण के हृदय की पीड़ा को व्यक्त करता है। उसकी अस्तित्वबोध की छटपटाहट यहाँ दिखाई देती है। किसी भी व्यक्ति के अपनत्व का पहला पड़ाव उसका परिवार होता है। परिवार का साथ आत्मविश्वास निर्माण का मुख्य बिंदु होता है। लेकिन जन्म के बाद कुमारी माता द्वारा अस्वीकृत और बाद में एक सारथी द्वारा सँभाला जाना यह दो बातें कर्ण के वजूद का मुख्य कारण बनती हैं। मुख्यतः अपनों द्वारा तथा समाज द्वारा मिली इसी अवहेलना को मिटाने का प्रयत्न कर्ण करता है। तत्कालीन समाज व्यवस्था के बीच कर्ण अपने अस्तित्व के मूल प्रश्नों से टकराता है। अपने जन्म की घटना, अधिरथ द्वारा उसको सँभाला जाना तथा समाज के विशिष्ट लोगों द्वारा मिली अवहेलना आदि घटनाएँ उसकी जिंदगी को हर समय प्रभावित करती है। यहाँ तक कि नाटक के एक प्रसंग में विश्वरू प धारण कर इंद्र याचक के रूप में कर्ण के पास आता है तथा उससे कवच कुंडल मांगता है। इंद्र का ऐसा बर्ताव महाभारत युद्ध में अर्जुन की रक्षा के लिए है यह जानते हुए भी कर्ण अपने कर्म मार्ग से जरा भी विचलित नहीं होता। वह इंद्र को कवच कुंडल दान देता है। कर्ण का स्वयं की रक्षा करने का आत्मविश्वास यहाँ दिखाई देता है। जिसके लिए उसे कवच कुंडल जैसे बाह्य उपकरणों की बिलकुल आवश्यकता नहीं है। शौर्य, साहस और पराक्रम के बल पर वह अपनी रक्षा करने में समर्थ है। इस प्रकार कुंती, इंद्र, कृष्ण आदि से कर्ण को विविध प्रकार के मात्र प्रलोभन दिए जाते है, परंतु अपनत्व की भावना किसी से नहीं मिलती। नाटक में हर जगह पर कर्ण की घुटन, बैचेनी को महसूस किया जा सकता है। इन सारी नकारात्मक स्थितियों में अपनत्व का भाव उसे दुर्योधन की मित्रता से मिलता है और यही अपनत्व मित्रता की नई परिभाषा गढ़ता है। अतः नाटक के प्रारंभ में खुद के वजूद से जुड़े कर्ण का संघर्ष व्यापक रू प में सामजिक समस्याओं के साथ जुड़ता है। वह थोथी समाज व्यवस्था पर भाष्य करते हुए माता राधा से कहता है-
"कर्ण : समाज की व्यवस्था, मर्यादा, नियम थोथे ही नहीं, हैं शोषण के आधार! विभाजित करते हैं मानवता को, रचते है घृणा, द्वेष-भेद की भित्तियाँ! माँ, मेरा बैर इन्हीं झूठी भित्तियों से है, थोती नीतियों से, अर्थहीन रीतियों से है! कौरवों - पांडवों का वैर बस निमित्त मात्र है।"[6]

उपर्युक्त संवादों के माध्यम से कर्ण के संघर्ष का कारण स्पष्ट होता है । महाभारतकालीन परिस्थितियों को देखते हुए कर्ण का पक्ष हमें अधर्म का दिखाई देता है । जिसे अपनी हार पता थी। लेकिन इनसे परे नाटककार कर्ण के संवादों के माध्यम से एक अलग दृष्टिकोण पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है । कर्ण का बैर केवल पांडवों से ही नहीं बल्कि उस सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ़ है, जिस व्यवस्था ने वर्णद्वेष को बढ़ावा दिया। इसी

समाज व्यवस्था की थोथी मर्यादाओं के कारण कुंती को अपने नवजात शिशु को त्यागना पड़ा । कर्ण के अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न इसी व्यवस्था ने लगाया । इसी व्यवस्था के बीच धनुर्विद्या का प्रशिक्षण द्रोणाचार्य से न लेते हुए भी एकलव्य को गुरु दक्षिणा के रूप में अपना अंगूठा देना पड़ा । तथा धनुर्विद्या, ब्रम्हास्त्र विद्या तथा शस्त्रास्त्र प्रदर्शन केवल उच्चकुलीन लोगों तक ही सीमित रखा। अतः इन झूठी मर्यादाओं पर टिकी हुई समाज व्यवस्था के विरोध में कर्ण आवाज उठाता है । अपने कर्म और पौरुष के बल पर वह अंत तक लड़ता है। लेकिन समय-समय पर उसे प्रताड़ित किया जाता है ।

महाभारत युद्ध के अंतिम प्रसंग में निरस्त्र कर्ण पर अर्जुन द्वारा बाण चलाया जाता है। कृष्ण द्वारा आहत कर्ण को वरदान माँगने कहा जाता है तब कर्ण कहता है जीवनभर जिसने सिर्फ दिया वह अंतिम समय में क्या माँगेगा? कर्ण के इस प्रश्न से मद्रराज और अर्जुन भी अपने कृत्य पर लज्जित होते हैं। कर्ण के चरित्र की उदात्तता यहाँ स्पष्ट हो जाती है । कृष्ण और अर्जुन द्वारा कर्ण को नाटक के अंत में सम्मान दिया जाता है। यह प्रसंग तत्कालीन समाज में बदलाव की अपेक्षा तथा मानवतावाद को स्थापित करता है।

सारांशतः पौराणिक काल की घटनाओं को आधार बनाकर लिखा यह नाटक आज भी प्रासंगिक है। कर्ण की समस्याएँ ,उसका अस्तित्व का प्रश्न आज के सामान्य व्यक्ति का प्रश्न बन जाता है । सामान्य व्यक्ति की तरह उसमें बदले की भावना भी दिखाई देती है लेकिन वह मानव धर्मं की स्थापना में अनुरत दिखाई देता है । कर्ण आज के उन तमाम लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जिनके पास योग्यता होते हुए भी उनके अस्तित्व को नकारा जाता है और संघर्ष उनकी समस्या का परिणाम बनता है । आज भी समाज के विविध क्षेत्रों में बहुत से ऐसे सूतपुत्र है जिनको योग्यता होते हुए भी हाशिये पर रखा गया है । उनमें से कुछ सामाजिक, राजनीतिक स्थिति के शिकार है तो कुछ द्रोणाचार्य जैसी मानसिकता वाले गुरुओं के। तब लगता है क्या इतने सालों में हमारे बीच या समाज में क्या कुछ बदला नहीं है? क्या व्यक्ति की योग्यता उसके सम्मान का साधन नहीं बन सकती? क्या मनुष्य जीवन का महत्व समझने का पड़ाव उसकी मौत है? क्यों हमेशा समाज व्यवस्था में कर्ण की तरह उन लोगों से त्याग की अपेक्षा क्यों की जाती है जिनको पहले से ही हाशिए पर रखा गया हो। इसलिए नाटक हमें इस निष्कर्ष तक लाता है कि, आधुनिक युग में आधुनिकता की परिभाषा केवल पाश्चात्य जीवनशैली को अपनाना, अच्छा रहन-सहन, बड़े -बड़े शहरों का, रास्तों का एवं मॉल का निर्माण यहाँ तक ही सीमित नहीं रखनी चाहिए बल्कि वैचारिक दृष्टि से भी उसमें सकारात्मक परिणाम होना चाहिए। वर्णवाद, वंशवाद और जातिवाद से परे भाईचारे की नीव को मजबूत करना और व्यक्ति की योग्यता को बढ़ावा देना आज के युग की महत्वपूर्ण आवश्यकता है । हमें ऐसे समाज निर्माण के लिए प्रयत्न करना चाहिए जो वर्णवाद और वंशवाद से परे हो और मानवता ही उसका एकमात्र धर्मं हों ।

संदर्भ

1. सूतपुत्र-विनोद रस्तोगी, पृ.25/26, उमेश प्रकाशन, दिल्ली।
2. वही पृ.35
3. विनोद रस्तोगी का नाट्य साहित्य, डॉ.राजेंद्रमोहन भटनागर, पृ 45 उमेश प्रकाशन, दिल्ली।
4. सूतपुत्र-विनोद रस्तोगी, पृ.36, उमेश प्रकाशन, दिल्ली।
5. सूतपुत्र-विनोद रस्तोगी, पृ.84/85, उमेश प्रकाशन, दिल्ली ।
6. वहीं पृ.36

सहायक प्राध्यापक, कला,वाणिज्य व बीबीए
महाविद्यालय वडगांव - मावल,
पुणे - 412106 (महाराष्ट्र)
मोबाइल - 7021397133
Email- sheetaldurgade10@gmail.com

'झरोखे' उपन्यास में बाल-मनोविज्ञान

डॉ. माजिदा.एम

सारांशः बालमनोविज्ञान में बालकों के व्यवहार व उनके व्यक्तित्व से संबंधित समस्त पहलुओं का अध्ययन किया जाता है। बच्चों के व्यवहार में हो रहे अवांछनीय बदलावों को उचित दिशा दिखाने एवं उनके विकास की गति को तीव्र करने के लिए बाल-मनोविज्ञान अत्यंत आवश्यक है। 'झरोखे' भीष्म साहनी के बाल-मनोविज्ञान पर आधारित उपन्यास है। इसमें एक छोटे से बालक के दृष्टिकोण से परिवार में घटने वाली आम घटनाओं का वर्णन किया गया है। ये घटनाएँ बालक के व्यक्तित्व निर्माण को काफी हद तक प्रभावित करती है। माता-पिता और गुरु जी द्वारा दिए गए गलत उपदेश बालक के व्यक्तित्व को कुंठित कर देता है। साथ ही उसको अंतर्द्वंद्व, हीनता ग्रन्थि, सेक्स संबंधी विकल धारणा आदि समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है जो परिवार में घटित घटनाओं का प्रभाव है। परिवार से सही दिशा निर्देश मिलने पर वह एक सुयोग्य नागरिक बन सकता था। देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए बच्चों का परवरिश ठीक से करना अत्यंत आवश्यक है।

बीज शब्द : बालमनोविज्ञान, संस्कार, मानसिक अंतर्द्वंद्व, कुंठा और अपराध बोध, हीनता ग्रन्थि, सेक्स संबंधी विकल धारणाएँ, परिवार का महत्व

बालमनोविज्ञान में बालकों के व्यवहार व उनके व्यक्तित्व से संबंधित समस्त पहलुओं का अध्ययन किया जाता हैं। यह बालकों के व्यवहार में हो रहे परिवर्तन को जानकर उसको सही दिशा प्रदान करता है। आधुनिक समाज तेज़ी से बदल रहा है और इसका प्रभाव बच्चों के व्यवहार एवं उनकी मनस्थिति पर पड़ता है। बच्चों के व्यवहार में हो रहे अवांछनीय बदलावों को उचित दिशा दिखाने एवं उनके विकास की गति को तीव्र करने के लिए आजकल बालमनोविज्ञान आवश्यक हो गया हैं। इससे बच्चों के व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाया जा सकता है। आज के बच्चे कल के नागरिक हैं। प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले बच्चे ही श्रेष्ठ नागरिक बन सकते हैं। बाल मनोविज्ञान की सहायता से बच्चे भविष्य में बड़े से बड़े कार्यभार संभालने में सक्षम हो जाएँगे। प्रत्येक समुदाय को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बच्चों को ठीक से विकसित होने का अवसर मिल रहा है ।

भीष्म साहनी के 1967 में प्रकाशित बालमनोविज्ञान पर आधारित उपन्यास है 'झरोखे'। यह एक छोटे से बालक की घायल संवेदनाओं का बालमनोविज्ञानिक चित्रण करनेवाला उपन्यास है। आत्मकथात्मक शैली में रचित इस उपन्यास में एक बालक के दृष्टिकोण से परिवार में घटने वाली छोटी-छोटी घटनाओं को प्रस्तुत किया है। एक-एक घटना बच्चे के भावी चरित्र की रूप-रेखा गढ़ती है। पारिवारिक जीवन में घटने वाली घटनाएँ आम तौर पर अल्प और साधारण होती है, पर संस्कारों के रूप में उनका महत्त्व अधिक और जीवन में निर्णायक साबित होती है। माता-पिता और गुरु जी द्वारा दिए गए गलत उपदेश बालक के व्यक्तित्व को कुंठित कर देता है। डॉ. कृष्ना पटेल का यह कथन सटीक है कि बच्चों को ज्यादा धर्म भीरू बनाने का परिणाम यह होता है कि बच्चे विकृत मानसिकता से ग्रस्त हो जाते हैं।"[1]

अंतर्द्वंद : उपन्यास का आरंभ रोगग्रस्त बालक के चित्रण से हुआ है और उसके मानसिक अंतर्द्वंद्व का सफल चित्रण उपन्यास में मिलता है। बालक को घंटों अकेले बिस्तर पर पड़ा रहना पड़ता था। उसके भाई और अन्य बच्चे खेलने जाते हैं तो वह दुखी बन जाता था। उसके मन में भूत प्रेत से अत्यंत डर था। उसे लगता था 'अंधेरा पडते ही छत पर असंख्य भूत-पिशाच उतर आते हैं। और हर कोने में दरवाजों के पीछे से मेरी ओर झांकने लगते हैं।"[2] उपन्यास में और भी अनेक जगहों पर अंतर्द्वंद का सफल प्रयोग

हुआ है। चिट्ठी भेजने के संबंध में माता-पिता के बीच झगड़ा हुआ था और पिताजी क्रुद्ध होकर बाहर चले गए थे। इससे बालक के मन में उत्पन्न गहरे अंतर्द्वंद का चित्रण मिलता है। साथ ही विमला की मृत्यु, विद्या को बच्चा पैदा होना, अपने काम के संबंध में घर के नौकर तुलसी की शिकायत, किसी समाज द्रोही द्वारा बालक के पिताजी को मारना, वीर्यपात, स्वप्नदोष आदि प्रसंगों पर भी बालक के मन में उत्पन्न अंतर्द्वंद का चित्रण उपन्यास में मिलता है।

कुंठाग्रस्तता : बालक में कुंठा और अपराध बोध दिखाई देता है। पढ़ाने वाले पंडित जी के गलत उपदेशों के कारण वह कुंठाग्रस्त हो गया था। पंडित जी ने योग और ब्रह्मचर्य के बारे में जो बातें की थीं उससे वह मानसिक रूप से टूट गया था। बालक के मन में यह धारणा घर कर गई थी कि स्त्रियों की ओर देखना पाप है। पेशाब वाली जगह पर हाथ लगाने से तरह-तरह की बीमारियाँ आ सकती हैं। इन सबसे प्रभावित होकर वह हमेशा पाप पुण्य के चक्कर में उलझता रहा। यहाँ यह दिखाने की कोशिश किया गया है कि "जबरदस्ती दिया गया संस्कार बाल मन पर किस प्रकार विपरीत असर डालता है और पूरे व्यक्तित्व को जकड़ लेता है।"[3]

हीनता ग्रन्थि : बचपन से ही बच्चों को अपने शरीर के बारे में जानने समझने की उत्सुकता होती है। इसी उत्सुकता के कारण बालक अपनी पेशाबवाली जगह पर हाथ लगाता था। यह जानकर गुरु जी उसे थप्पड़ मारता है और वहाँ कीड़े पड़ने की धमकी देता है। इससे उसकी जिज्ञासा कम होने के बजाय वह और भी भयभीत हो जाता है। पंडित जी भाई की तुलना में बालक को हीन मानता है और इससे बालक के मन में हीनता ग्रन्थि जन्म लेती है। इस संबंध में वह कहता है- "बहुत दिनों तक मुझे इस बात का डर बना रहता है कि कहीं दोनों माँ से मेरे दूसरे पाप की चर्चा न कर बैठे।"[4]

सेक्स संबंधी विकल धारणाएँ : किशोरावस्था में वीर्यपात के संबंध में सोचकर बालक चिंतित था। इसे रोकने के लिए वह अनेक उपाय करता है। रोज़ व्यायाम करता है, सुबह-शाम ठंडे पानी से नहाता है, भोजन कम खाता है और खूब चबाकर खाता है, रात में दूध नहीं पीता और कभी कभी रात भर जागता रहता है। फिर भी वह इससे मुक्ति नहीं पा सकता था। उसके मन में और भी सेक्स संबंधी विकल धारणाएँ थी कि स्त्री की ओर देखना पाप है। उसके दोस्त कुलदीप ने कहा था -"तुम्हें नहीं मालूम कि वीर्य कितनी कीमती चीज़ है इसे अमृतबिन्दु कहते हैं। चार सौ खून की बूँदों में से एक बूँद वीर्य की बनती है और रीढ़ की हड्डी में वीर्य जमा होता रहता है। अगर वीर्य गिरने लगे तो रीड़ की हड्डी कमज़ोर पड़ जाती है, सारा शरीर कमजोर पड़ जाता है।"[5] स्पष्ट है कि परिवार से बच्चे को सेक्स संबंधी उचित शिक्षा न मिलने पर उसकी धारणाएँ विकल बन जाती हैं।

परिवार बच्चों की पहली पाठशाला है। परिवार से जो मूल्य और आदर्श वह ग्रहण करता है जीवन भर उसी का अनुसरण करता है। परिवार से प्राप्त संस्कार बालक के सुदृढ़ चरित्र के निर्माण में सहायक होता है । उसके व्यक्तित्व विकास के लिए माता-पिता, शिक्षक, समाज आदि की संयुक्त भूमिका है। इसमें से एक की भूमिका विघटित होती है तो बालक का सामाजिक दृष्टि से विकास अवरुद्ध हो जाता है और उसका व्यक्तित्व कुंठित हो जाता है। परिवार से बच्चे सांस्कृतिक मान्यता सीखते हैं। परिवार से सही दिशा निर्देश मिलने पर वह एक सुयोग्य नागरिक बन सकता है। संक्षेप में परिवार हर एक मानव की सफलता का द्वार खोलने की कुंजी है।

संदर्भ ग्रंथ

1. डॉ कृष्ना पटेल-कथाकार भीष्म साहनी- पृ 105
2. भीष्म साहनी - झरोखे पृ. 8
3. डॉ कृष्ना पटेल-कथाकार भीष्म साहनी - पृ.29
4. भीष्म साहनी - झरोखे पृ. 37
5. भीष्म साहनी - झरोखे पृ. 103

हिन्दी विभाग, सरकारी महिला कॉलेज
तिरुवनंतपुरम, मोबाइल : 9745524215
ई-मेल : majishyam@gmail.com

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी महिला कहानीकार : एक अंतरंग पहचान

डॉ. राजेष कुमार.आर

सन् उन्नीस सौ पचास के आसपास अनेक महिला लेखिकाओं ने कहानी सर्जना के क्षेत्र में अपने हस्ताक्षर छोडे। नई कहानिकारों ने हिन्दी कहानी साहित्य को नया मान प्रदान किया। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में महिला कहानी लेखन उत्तरोत्तर समृद्धि पा रहा था। तब तक भारतीय परिवेश में भरपूर परिवर्तन आया था। व्यक्तिवाद, अस्तित्ववाद, मार्क्सवाद , फ्रायडवाद और गांधीवाद का प्रचार हो रहा था। स्त्री शिक्षा उन्नति पा रही थी और भारतीय नारियों की जागरूकता बढ रही थी, उसकी प्रतिवाद क्षमता भी। अपनी कमजोरियों और दुर्बलताओं का पता नारियों को मिला, नारी शोषण की व्याप्ति का उसे अवबोध मिला। इस समय अनेक लेखिकाओं ने अपनी सृजनधर्मिता की शुरुआत की। इन्होंने मुख्य रूप से कहानी साहित्य को अपना सृजन केंद्र बना दिया। हिन्दी की लोकप्रिय कहानिकारों की सर्जना इस काल में हुई।मन्नु भंडारी , उषा प्रियंवदा, ममता कालिया, मृदुला गर्ग, चित्रा मुद्गल, मधु कांकरिया, क्षमा शर्मा, गीतांजली श्री, मनीषा कुलश्रेष्ठ, अल्पना मिश्र, नीलाक्षी सिंह, शर्मिला बोहरा, जालान आदि तत्कालीन समय के चर्चित लेखिकाएँ हैं।

समकालीन हिन्दी साहित्य जगत के मूर्धन्य कथाकार मन्नू भंडारी का हिन्दी साहित्य में शीर्ष स्थान है। स्वतंत्रता के बाद उभर आये मध्यवर्गीय जीवन का मन्नू भंडारी की कहानियों में जीवंत अंकन है। स्त्री पुरुष संबंधों के बदलते आयामों का उनकी कहानियों में भावप्रवण चित्रण है। मन्नु भंडारी ने बदलते जीवन संदर्भ को पैनी दृष्टि से आंका है और खुले दिमाग से नारी जीवन की असलियत को देखा - परखा है और उन्हें बडी हार्दिकता एवं सादगी के साथ व्यक्त किया है। सजा, क्षय, तीसरा आदमी ,रेत की दीवार, संख्या के पार, यही सच है, एक बार और, त्रिशंकु, एक प्लेट सैलाब आदि आपकी चर्चित एवं लोकप्रिय कहानियाँ हैं। मन्नु भंडारी की ख्याति का मूलाधार कहानी है सजा। सजा कहानी में मध्यवित्त परिवारों की अन्तर्दशा का सूक्ष्म और मार्मिक चित्रण है। आर्थिक संकट के दौर में परिजनों के व्यवहार की सूक्ष्म पडताल इस कहानी का अभीष्ट है। मनोवैज्ञानिक सूझबूझ से भरी यह कहानी, आरोपी व्यक्ति के व्यवहार शिल्प, उसका अपने बच्चों से संबंध तथा उसके प्रति उसके सगे संबंधियों का अपनत्व तथा दुराव सब इस कहानी में स्थान बनाते हैं।

स्वातंत्योत्तर हिन्दी कहानी की श्रीवृद्धि में ममता कालिया का स्मरणीय योगदान है। नारी जीवन के विभिन्न आयामों की गति - विगतियाँ उनकी अनेक कहानियों में अभिव्यक्त हैं। आपकी कहानियों में यह बात विशेष रूप से उभरकर सामने आती है कि आज भी नारी यातना मुक्त नहीं है, आज भी वह पति द्वारा अपमानित है तथा उसके बेमेल स्वभाव और प्रकृति को झेलते हुए नारकीय जीवन व्यतीत करती है। नारी के उत्पीडन तक ममता कालिया की प्रतिभा सीमित नहीं, उन्होंने यह भी सिद्ध किया है कि नारी - मुक्ति के रास्ते में सबसे बडी बाधा नारी के अपने घरवाले ही उपस्थित करते हैं लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं है कि लेखिका केवल नारी विमर्श की लेखिका है। सामाजिक,आर्थिक , राजनैतिक एवं सांस्कृतिक विसंगतियों के अनेक चित्र भी आपकी कहानियों में यथेष्ट मिलते हैं।

ममता कालिया की बहुचर्चित कहानी है लडकियाँ। ममता कालिया की लड़कियाँ कहानी इस तथ्य को भरपूर जीवंतता से उजागर करती रचना है स्त्री स्वातंत्र्य के रास्ते में सबसे बडी बाधा स्वयं लडकियों का निजी घर है, जिसमें उन्हें भीरु और छुईमुई बने रहने के संस्कार दिये जाते हैं। कोई भी व्यक्ति बचपन से जैसे परिवेश और जैसी अवधारणा में पलता बढता है, उसका व्यक्तित्व उसी के अनुकूल आकार पाता है। प्रस्तुत कहानी में आशा और सुधा दो प्रगतिशील निर्मम तथा महत्वाकांक्षी व्यक्तित्व भरी लडकियाँ

हैं, जो कालेज में पढ रही हैं। एक ओर इन लडकियों का अंतर्संसार है, जो बडा आकाश खोजता है, दूसरी ओर उनके परिवारों की संस्कारगत संकीर्णता है, जिसमें इनकी माँ, पिता तथा भाई सब इनके लिए प्रतिबंध ही बनते हैं।

हिन्दी की सलामी लेखिका क्षमा शर्मा की लेखनी कहानी के क्षेत्र में उत्तरोत्तर प्रतिष्ठा पानेवाली लेखनी है । क्षमा शर्मा की विविध मुखी कहानियाँ समसामयिक भारतीय जीवन के एक-एक परिच्छेद की कहानियाँ हैं। इक्कीसवीं सदी का लडका, एक अधूरी प्रेम कहानी, नेम प्लेट, वेलेंटाइन डे, रसोई घर, यहीं कहीं है स्वर्ग, कस्बे की लडकी, दादी माँ का बटुआ आदि क्षमा शर्मा की ख्याति प्राप्त कहानियाँ हैं। रोजमर्रा के जीवन को कहानी का कलेवर देने में क्षमा शर्मा सिद्धहस्त हैं। कस्बों, नगरों और महानगरों में रहनेवाले मध्यवर्ग की उलझनों, आकांक्षाओं और सपनों को उन्होंने निजी शैली में अभिव्यक्त किया, अपनी कहानियों के माध्यम से। 'इक्कीसवीं सदी का लडका' कहानी आज के समय में एक नयी पीढी की मानसिकता के उदय की तस्वीर पेश करती है। एक मध्य वित्त परिवार में जिसमें एक बच्चे के माता और पिता दोनों ही कामकाजी हैं, बच्चा किस तरह स्वतंत्र रूप से आत्मनिर्भर होता चलता है और उसका नजरिया कैसे धीरे - धीरे बदलता जाता है, यह कहानी उस विकास यात्रा का एक संवेदना पूर्ण लेखा जोखा है।

स्वातंत्र्योत्तर काल में महिला लेखक गण और गुण की दृष्टि से आगे बढे। कहानी साहित्य के विकास में लेखिकाओं की भूमिका निर्णायक रह गयी। लेखिकाओं की तूलिका से अस्तित्व और अस्मिता के लिए संघर्षरत नारियों के प्रतिरूप निकले। स्वातंत्र्योत्तर काल में नारी लेखन को मान्यता मिली, उनकी लोकप्रियता बढी, हिन्दी साहित्य से नारी लेखन को अलग करना असाध्य रह गया।

असिस्टेंट प्रोफसर, हिंदी विभाग
महात्मा गाँधी कॉलेज
तिरुवनंतपुरम

क्या मैं याद रखूँ?

सुजित.एस

इन सूरतों में क्या मैं याद रखूँ?
पल-पल इन्हें बदलते ही देखा है।

कहा जाता है, रंगीन है ज़िन्दगी
सच्चाई यह है, हमने काला ही देखा है।

नफरत के मुखौटे, कभी गिरते ही नहीं,
अपनों को भी, इसे संभालते ही देखा है।
उन सूरतों में इंसानियत नहीं थी,
जिसे गली के कुत्ते में भी देखा है।

अपनों ने ही लूटा है, परायों में क्या दम ?
चीटियों को भी हमेशा, साथ चलते ही देखा है।
सुना था दोस्त हो तो, आईना नहीं चाहिए
पर काँच के टुकड़ों में ही, अपनों को देखा है।

छात्र
आचार्य प्रशिक्षण केंद्र
केरल हिंदी प्रचार सभा

रंग संगीत : नाट्यभाषा की आत्मा

अभिषा. एम.एम

भाषा हमारी आत्मा है। मानव मन के विचारों, भावों एवं अनुभवों को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम है भाषा। यह भाषा की सामान्य अवधारणा है। भाषा को सिर्फ एक परिभाषा में बाँधना कठिन कार्य है। क्योंकि हमारे विकास की आधारशिला भाषा ही है। विभिन्न कालखण्डों में विभाजित हमारे साहित्येतिहास के विभाजन के मूल तत्त्व के रूप में भाषा को ले सकते हैं। इसका तात्पर्य यह नहीं कि सिर्फ भाषा को मूल में रखकर यह विभाजन हुआ है। आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक के साहित्य में भाषा की दृष्टि से कई तरह के परिवर्तन आ चुके हैं। आधुनिक काल का महत्वपूर्ण देन है गद्य साहित्य। गद्य की सभी विधाओं में नाटक का विशेष महत्व है।

मानव जीवन कई तरह की गतिविधियों और चेष्टाओं से भरा है। इन्हीं को कहानी का रूप देनेवाली कला है नाटक। भरतमुनि ने नाटक को पंचमवेद कहा। भारतीय परंपरा के अनुसार ऋग्वेद से पाठ्य, सामवेद से संगीत, यजुर्वेद से अभिनय, अथर्ववेद से रस आदि को लेकर नाटक का निर्माण किया गया है। नाटक अनेक कलाओं का संयुक्त रूप है। इसमें साहित्य, संगीत, अभिनय, नृत्य आदि कलाएँ हैं। इसलिए यह कहा जा सकता है कि नाटक एक उत्कृष्ट कला है।

सभी साहित्यिक विधाओं को अपना एक आकार होता है। यही है उसकी विशेषता। नाटक का आकार या शरीर संवादात्मक है। नाटक की भाषा अन्य साहित्यिक विधाओं की भाषा से बिलकुल अलग है। क्योंकि इसमें अन्य विधाओं की तरह विश्लेषणात्मक रीति नहीं है। नाटक तब तक नाटक नहीं होता, जब तक उसका मंचन नहीं किया जाता। कहने के बजाय अभिनय पर ज़ोर देनेवाली कला है नाटक। रंगमंच से हटकर नाटक अपूर्ण है। नाटक रंगमंच से जुडे होने के कारण नाट्यभाषा के संदर्भ में रंगमंच को नकारा नहीं जा सकता। नाटक की भाषा मात्र लिखित भाषा नहीं। लिखित भाषा के साथ रंगमंच के सभी तत्त्वों को समावेश करके नाट्यभाषा अपना सार्थक रूप धारण कर लेती है। किसी को अलग करके देखें तो नाटक पूर्ण नहीं होगा। इसी तरह देखें तो संगीत को नाटक में अपना महत्व होता है। भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में संगीत को प्रमुख स्थान दिया है।

नाट्यभाषा के रूप में संगीत : नाटक का मूल है भाव। नाटक के हरेक पहलू को भावात्मक जीवंतंता के साथ प्रस्तुत करने में संगीत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अमूर्त भावों की अभिव्यक्ति के लिए नाटक में संगीत का प्रयोग किया जाता है। नाटककार को सीधे या सामान्य शब्दों से अभिव्यक्त न कर जानेवाली बातों को संगीत के माध्यम से कर सकते हैं। भावाभिव्यक्ति के लिए संगीत का प्रयोग पुराने ज़माने से ही किया जा रहा है। नाटक में किसी एक प्रसंग को लेकर नाटककार को अपने मन में जो तीक्ष्णता है, उसी तीक्ष्णता के साथ हमारे सम्मुख लाने के लिए संगीत का सहारा लेता है। सीधे-सीधे कहने में उस विषय का सौंदर्य नष्ट हो जाएगा। इसीलिए नाटक में गीत का प्रयोग करता है। पात्रों के भावों एवं विचारों को प्रेक्षकों तक पहुँचाने में रंगमंच के सभी तत्त्वों में से संगीत कुछ आगे हैं। भावप्रधान संगीत का प्रयोग नाटक को और भी प्रभावी बना देता है। पात्र जिस मानसिकता में है या वह जिस विषम स्थिति से गुज़र रहा है, ये सब अभिव्यक्त करने में संगीत सक्षम है। इसी तरह नाटक की संवेदनात्मक गहराई को पहचानने में संगीत का प्रमुख स्थान है।

मंच हमेशा दर्शकों के लिए नए अनुभव लेकर आता है। एक लिखित नाटक कई तरह से किया जा सकता है। यदि आवश्यक हो तो तकनीक को मंच पर लागू किया जा सकता है। कथ्य को बदले बिना कथ्य के अनुसार नए प्रयोगों को मंच पर ला सकता है। नाटक की कथा को पूरी भावात्मकता के साथ आगे बढ़ाने में संगीत की भूमिका महत्वपूर्ण है। नाटक में किसी एक पात्र की एन्ट्री उसकी पूरी विशेषताओं के साथ, यानी स्थानीय, धार्मिक, चारित्रिक विशेषताओं के साथ प्रकट करने के लिए संगीत के अलावा और कोई चीज़ नहीं है। दो दृश्यों के बीच के अवकाश को संगीत भरकर कथ्य को अर्थवान बना देता है। इसी तरह का संगीत नाटक की कथातंतु को जोड़नेवाला औज़ार बन जाता है। दो दृश्यों के बीच के इस संगीत प्रेक्षकों को नाटक से रस टूटे बिना देखने में सहायक होता है। आनेवाला दृश्य संघर्ष का हो, दुख का हो, खुशी का हो, उत्सव का हो, अनुयोज्य संगीत का प्रयोग कहानी को आगे बढ़ाने में सहायक होता है।

नाटक में संगीत का प्रयोग सिर्फ मनोरंजन या आलंकारिकता के लिए नहीं। अशोक वाजपेयी ने कहा कि- "इधर की रंग गतिविधियों में अनेक ऐसे साक्ष्य उपलब्ध हैं जो प्रमाणित करते हैं कि नाटक में संगीत की हैसियत महज़ एक अलंकार वस्तु की नहीं है, वह समग्र रंगानुभव के एक प्रभावी घटक के रूप में प्रतिष्ठित है- अक्सर रंगानुभव के ही एक अनुषंग के रूप में।"[1] यदि नाटक में संगीत का प्रयोग केवल आलंकारिकता या मनोरंजन के लिए है तो यह नाटक के लिए दोष होगा। इसका अर्थ यह नहीं कि पूरी तरह आलंकारिकता छोड़ना है। समस्त रंगानुभव में संगीतात्मकता है। संवाद में भी एक तरह का लय होता है। यह भी संगीत के अंतर्गत गिना जाता है। इसी संवादात्मक संगीत ही नाटक का सौंदर्य। नाटक में संवाद का उद्देश्य भावनाओं को जागना और चरित्र को चित्रित करना है। संवाद में श्रुति और गति दोनों का पालन करना है। भावनाओं की अधिकता एवं कमी के अनुसार संवाद की श्रुति एवं गति में बदलाव आता है। इसी तरह उतार-चढ़ाव के साथ प्रस्तुत करनेवाले संवाद नाटक में संगीतात्मकता पैदा करती है। संवाद के साथ पार्श्व संगीत (Background Music) का प्रयोग करके संवाद को प्रभावी बनाकर नाटक की मूल संवेदना को उजागर करते हैं।

नाटक देखने से मिलनेवाली अनुभूति दर्शकों को प्रदान करने में पात्र की जो भूमिका होती है, यह है उनका अभिनय। अभिनय को प्रभावी बनाने में संगीत का योगदान महत्वपूर्ण है। अगर संगीत चरित्र की मानसिकता के अनुसार हो तो अभिनय को कम करना काफी है। कथातंतु को जोड़ने के लिए और वातावरण के सृजन के लिए संगीत का प्रयोग नाटककार अत्यंत सावधानी के साथ किया जाता है। कल-कल करती बहती नदियों की आवाज़ में भी संगीत है। प्रातः कालीन माहौल बनाने के लिए चिड़ियों की आवाज़, रात के लिए झींगुर जैसे प्राणियों की आवाज़, किसी एक व्यक्ति के आगमन की सूचना देने के लिए जूतों की आवाज़, ये सब एक संगीतात्मक वातावरण का सृजन करती है। अब हम कह सकते हैं कि समस्त रंगानुभव में ही संगीत है। किसी भयानक वातावरण सृजन करने के लिए अभिनय के साथ म्यूज़िक का भी महत्वपूर्ण स्थान है।

रंग संगीत और शास्त्रीय संगीत में अंतर अवश्य है। प्रमुख निर्देशक एवं नाट्यप्रेमी ब.व.कारंत के शब्दों से यह स्पष्ट है-"शास्त्रीय संगीत से रंग संगीत का कोई संबन्ध नहीं है, भले ही शास्त्रीय संगीत का जानकार रंग-संगीत में पूर्व अनुभवों की छूट और स्वरकारी की मदद ले ले। रंग की शुद्धता शास्त्रीय संगीत की संजीवनी है, प्राण है किंतु रंग संगीत में शास्त्रीय अनुशासन और व्याकरण से बाहर निकलने की छूट होती है, राग की शुद्धता को तोड़ना ही नाटक का पहला धर्म होता है। वस्तुतः थियेटर में राग का कम, ध्वनियों और उसके रूप

वैविध्य, आरोह-अवरोह का महत्व ज़्यादा होता है। थियेटर तो ध्वनि के सभी स्तरों का संयोजन है भले ही वह ध्वनि कहीं से आए, पैदा की जाए या कहीं से प्रयोग में ले लिया जाए किंतु इस संयोजन एवं प्रयोग में जब तक संगीत या ध्वनि रंग-भाषा नहीं बनेगी तब तक वह संगीत रहेगा, नाटक का संगीत नहीं।"[2] रंग संगीत में शास्त्रीय संगीत के नियमों का पालन नहीं कर सकता। तब रंग संगीत की सुंदरता गायब हो जाएगी। आगे उन्होंने रंगमंच में प्रयोग करनेवाले 'आरंभ संगीत, फिलर म्यूज़िक, एक्शन म्यूज़िक, नरेटिव म्यूज़िक, चेंजिंग म्यूज़िक, मूड़ म्यूज़िक, क्रिएटिव म्यूज़िक आदि विभिन्न तरह के संगीत का उल्लेख करके बताया है कि-"नाटक में बेसुरा भी सुर होता है। बेसुरापन भी संगीत है वहाँ।"[3]

निष्कर्ष

नाटक ऐसी एक कला है, जो सीधे मनुष्य से जुड़ता है। यथार्थ के साथ अधिक जुड़े होने के कारण नाटक में ऐसी एक सशक्त भाषा की ज़रूरत है, जिसमें मानव मन के अमूर्त भावों को भी जगाने की क्षमता हो। नाटक की भाषा अन्य साहित्यिक रूपों की भाषा से अलग है। इसमें समस्त रंगमंचीय तत्त्वों का समावेश होता है। नाट्यभाषा के रूप में रंग संगीत को नाटक में प्रमुख स्थान है। नाटक को पूरी भावात्मकता के साथ आगे ले जाने में संगीत की भूमिका महत्वपूर्ण है। संगीत द्वारा नाटक की मूल संवेदना को उजागर किया जा सकता है। इसलिए यह कह सकते हैं कि नाट्यभाषा का अभिन्न अंग है रंग-संगीत।

संदर्भ

1) रंग-भाषा, गिरीश रस्तोगी, पृ.176
2) नटरंग, अंक 97-98, पृ.60
3) वही, पृ. 61

शोध छात्रा, हिंदी विभाग
कालिकट विश्वविद्यालय

कविता

हे दुःख! विदा, अलविदा

डॉ.जे.रामचन्द्रन नायर

मितवा, जीवन है छोटा,
इसे खुशी से जियो,
अति दुर्लभ है प्रेम,
उसे जबरदस्त पकड़ो,
अपने अधीन रखो।
मितवा, क्रोध खराब है,
दुर्वासा मत बनो,
उसे दबाकर रखो,
अति भयानक है भय,
उसका सामना करो,
सुखद है यादों की बारात।
उन्हें संजोकर रखना।
अगर आपके पास मन की शांति है,
तब समझ लीजिए आप से
अधिक भाग्यशाली कोई नहीं।
इस संसार में,
हे दुःख! विदा, अलविदा।

भूतपूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
हिंदी विभाग, एम.जी.कॉलेज
तिरुवनंतपुरम

अकाल और उसके बाद : प्रयोगधर्मिता एवं संरचना की नज़र में

प्रो.(डॉ.) मनु

करीब उनहत्तर सालों पहले सत्तर शब्दों के प्रयोग से नयी प्रयोगधर्मिता की अजीब राह में नागार्जुन जी ने 'अकाल और उसके बाद' नामक नज़्म की अभिव्यक्तिका इज़हार किया है। बढ़ती आबादी अकाल की एक ठोस वजह है। अकाल का ख़ौफ़नाक व दर्दनाक मंज़र वर्तमान बांग्लादेश, पश्चिम बंगाल, बिहार और उड़ीसा में उन्नीस सौ तैंतालीस, चवालीस के दरमियान हुआ था। क़रीब बीस लाख लोगों ने भूख से तड़पकर अपनी जान गंवाई थी। वह दूसरे विश्व महायुद्ध का वक्त था। यह अकाल फितरती या खुदरती नहीं , बल्कि प्रशासनिक था। "अपने लाभ के लिए अंग्रेजों ने भारत में मानव इतिहास का भयंकरतम नरसंहार किया और इसके करने वाला कोई और नहीं वरन तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल था। भारतीयों की मौतों पर उसका कहना था कि 'मैं भारतीयों से घृणा करता हूँ। वे जानवरों जैसे लोग हैं जिनका धर्म भी पशुओं जैसा है। अकाल उनकी अपनी ही गलती थी; क्योंकि खरगोशों की तरह जनसंख्या बढ़ाने का काम करते रहे।"1 अकाल और उसके बाद सत्तर साल पहले लिखी गई यह नज़्म आज भी सियासी लोगों के लिए जरूर ही एक चेतावनी है कि आबादी पे रोकधाम लगाने में बेकामयाब हो जाने पर कभी भी हिंदुस्तान का भविष्य प्रोज्वल नहीं बन जाएगा। हिन्दुस्तानियों की जीने की सहूलियत कम हो जाएगी। इंसान बनकर जानवर की ज़िन्दगी जीने से क्या फायदा? शोध इसकी इतला देना भी सार्थक समझता है । कथ्य या वैचारिक पहलू की व्याख्या करते हुए उसके संरचना पक्ष का अध्ययन करना भी इस शोध तहक़ीक़ का अहम् मकसद है। साथ ही साथ शोध गवाही देता है कि 'अकाल और उसके बाद' की नज़्म के ज़रिये नागार्जुन ने प्रयोगधर्मी कवि का दर्जा भी हासिल किया है। (बीज शब्द : अकाल , चूल्हा, चक्की, छिपकली, चूहा आदि)

'अकाल और उसके बाद' नागार्जुन की बेहतरीन नज़्मों में एक है। नागार्जुन का नाम हिंदी साहित्य के नक़्शे में प्रगतिशील साहित्यकार या तरक़्क़ी पसन्द अदीब के तौर पर उकेरा गया है। सामाजिक हक़ीकती बातों का बयान ही उनका साहित्यिक सरोकार है। अक्सर देखा जाता है कि अकाल के मरकज़ में आम लोगों का जिक्र ही किया जाता है। बड़े बड़े घरबारों व दरबारों में रहनेवाले अमीर आदमी इस तरह की नज़्मों के दायरे से बाहर ही होते हैं। अकाल के मामले में अख़बारों में जब खबरें आती हैं वह सब झुग्गी के इर्द गिर्द के लोगों के हादसे की बातें होंगी। अकाल का शिकार हमेशा आम आदमी ही होता है, उसे ही सभी तरह की समस्याओं का सबर करना पड़ता है। नज़्म को सतही तौर पर देखने, परखने पर सिर्फ़ सरल सा लगेगा, मगर पोशीदा माना बहुत ही है। आस व मायूस दोनों के बयान ने नज़्म को एक उंचे दर्जे पर पहुंचा दिया है।

घर में अकाल की वजह ग़ुरबत है, खाने पीने के लिए कुछ भी नहीं है, एक प्रगतिवादी या प्रगतिशील कवि सपाट शैली का ही प्रयोग करेगा, मगर कवि ने काव्य शास्त्र में व्यक्त काव्य कुशलता का बेहतरीन प्रदर्शन किया है। अचेतन चीज़ों में चेतनता फूँकने का कवि कर्म यहाँ कवि द्वारा हुआ है। दूसरे जुमले की मदद ले ले तो बेजान चीज़ों को जान देने की प्रक्रिया यहाँ दर्शनीय है। "कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास"[2] 'चूल्हा रोया' और ' चक्की रही उदास' घर की गरीबी दिखाने के लिए किये गये हैं। घर में रोटी नहीं है, दाना भी नहीं है। इसलिए घर में कई दिनों से लेकर चूल्हा चुप्प है, खमोश है, ये चुप्पी और खमोशी ख़ौफ़नाक हैं। काव्य जगत में 'चूल्हा रोया'और 'चक्की रही उदास' दोनों प्रयोग नई काव्य प्रयोगधर्मिता है।

आग और चूल्हे का रिश्ता अटूट है, आग न मिलने की वजह चूल्हा रोता है। भूख, बुभुक्षा, क्षुधा, सूखा, भूखमरी, अकाल, कमी, अभाव आदि का बे हाल दिखाने के लिए कवि ने चूल्हे को रुला दिया है। 'चूल्हा न जला' के माने से भी 'चूल्हा रोया' प्रयोग बेहतरीन है; क्योंकि 'चूल्हा रोया' में मानवीय संवेदना मौजूद है। 'चूल्हा रोया' सिर्फ दो

शब्दों से कवि ने अचेतन व बेहोश चीज़ के ज़रिए मानवीय संवेदना को उजागर किया है। अर्थ की चौड़ाई एवं गहराई 'चूल्हा रोया' से भरपूर मिलता है। यह ज़रूर ही कारगर काव्य प्रयोग है। 'चूल्हा रोया', 'चक्की रही उदास' दोनों काव्य में प्रयुक्तप्रयोगधर्मिता की बेहतरीन मिसाल हैं। लाक्षणिक अर्थ का गुंफन क़ाबिल ए जिक्र है। 'चक्की रही उदास' भी नया काव्य प्रयोग है। प्रयोगधर्मिता की दृष्टि से कवि ने एक नया आसमान हमारे सामने रखा है। चक्की को देखकर उसके दुख दर्द को समझना मुश्किल है। लेकिन 'चक्की' में भी कवि ने मानवीय संवेदन को भरा दिया है।

वैचारिक पहलू पर पैनी नज़र डाल देने पर यह नज़्म दिलोदिमाग में कुछ चिंगारियों का फ़िक्र ज़रूर ही छोड़ देगा। उन्होंने क्यों कुत्ते का इस्तेमाल किये बिना कुतिया शब्द का प्रयोग किया है? हमारे गांव के लोग अक्सर इस बात पर ज़ोर देते हैं कि घर झोंपड़ी में कुत्ते का पालन न करना है, कुतिया का पालन करना है; क्योंकि कुत्ता न घर का, न गली का रहेगा, मगर कुतिया ज्यादातर वक़्त अपने घर में ही रहेगी।अकाल की वजह हुई बेहाली को दिखाने के लिए कुत्ते से ज़्यादा मुनासिब लफ्ज़ ज़रूर ही कुतिया है। "कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास"[3] चूल्हे के पास 'कानी कुतिया; सोनेवाले घर की हालत सब जान सकते हैं। 'कानी' विशेषण का इस्तेमाल करके बदसूरती को बेहाली के साथ जुडाके माहौल को शिकस्त बना दिया गया है। कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त"[4] यहां नागार्जुन ने भित्ति के तद्भव रूप का इस्तेमाल किया है। भीत का मामूली अर्थ डरा हुआ है। भीत 'भित्ति' का अर्थ देता है। ये शब्द श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द युग्म के भीतर व्याख्या की गयी। 'गश्त' फारसी शब्द है, इसका अर्थ है 'पहरा देने के लिए घूमना" सरगर्मी के साथ पुलिस दरोगा ही गश्त लगाता है। मगर छिपकलियों को गश्त लगाने का काम देकर एक प्रोज्वल काव्यार्थ, लक्षणा के साथ देने में कवि कामयाब हुए हैं। 'छिपकलियों की गश्त' में भी प्रयोगधर्मिता देख सकते हैं।

अकाल के साथ अँधेरा भी घर को घेर लिया है। नज़्म में इसका बयान बाहरी तौर पर नज़्म की कतारों में मौजूद नहीं है। मगर 'छिपकलियों की गश्त' में यह माना भी मौजूद है। छिपकलिया रात में दीवारों पर कीड़े मकोड़ों व परवानों को पकड़ने के लिए आती हैं। उजाले में ही दीवारों पर कीड़े मकोड़े आदि आते हैं। अँधेरे में ये न आयेंगे। इसका पोशीदा माना है कि घर में दीप नहीं है, दिया नहीं है, उजाला नहीं है। रात में ही दरोगा गश्त लगाती है। वैसे ही छिपकलियाँ भी गश्त लगाती हैं।

'फिर कई दिनों के बाद घर के अंदर दाने आये। दाने के आने पर घरवालों ने खाना पकाना शुरूकर दिया। इसके बयान के लिए एक नये प्रयोग का इस्तेमाल कवि ने किया है। धुआँ उठा आँगन से उपर'[5]। इसका मतलब यह है कि चूल्हा आँगन में है और खाने पकाते वक्त जो धुआँ उठता है वह आँगन से उपर उठता है। खुशी के माहौल को व्यक्त करने के लिए 'चमक उठी घर भर की आँखें' का काव्यात्मक प्रयोग किया गया है । खाना मिलने पर कौए ने खुश हो कर अपनी पँखेँ खुजलाई।

इस नज़्म की खासियत यह है कि बिहार के उस अकाल को प्रस्तुत करने के लिए प्रगतिशील तरीके से अलग चलकर प्रयोगधर्मिता की नयी व प्रभावशाली तरीक़े से इस नज़्म का सृजन किया गया है। 'चूल्हा रोया', 'चक्की रही उदास', 'लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त', 'धुआँ उठा आँगन से उपर', 'चमक उठी घर भर की आँखें', 'कौए ने खुजलाई पाँखें' आदि प्रयोगधर्मिता के अंतर्गत आनेवाले लाक्षणिक प्रयोग हैं।

स्त्री पक्षीय भाषा या निस्वानी ज़बान का इस्तेमाल कवि ने अपनी रचना के लिए न करके पुरुष पक्षीय भाषा या बे निस्वानी ज़बान का प्रयोग किया है। इसमें प्रयुक्त ज़्यादातर संज्ञाएँ पुल्लिंग ही होते हैं। जैसे कि चक्की , कुतिया , छिपकलियां ,भीत, गश्त, हालत, आँखें , पाँखें आदि स्त्रीलिंग शब्द होते हैं तो नज़्म में प्रयुक्तकई मर्तबा प्रयुक्तदिन,चूल्हा, चूहा, घर, दाने, धुआं, आँगन, कौआ आदि पुल्लिंग हैं।

दो कालवाचक क्रिया विशेषणों का प्रयोग उन्होंने जान बूझकर किया है। पुनरुक्तिदोष (किसी भी कविता में चाहें किसी शब्द या वाक्य को एक ही अर्थ में बार बार रखना पुनरुक्तिदोष कहलाता है) के बावजूद भी वाक्य रचना मज़बूत एवं अर्थगर्भित हैं। 'तक' और 'बाद' के इस्तेमाल से वक्त के लम्बे दरमियान की सूचना देने में

कवि काफ़ी कामयाब हुए हैं। इसमें तीन स्थान वाचक क्रिया विशेषण का प्रयोग भी दिखाई देता है जैसे कि पास, अंदर, उपर।

बहुत ही सतर्कता से कवि ने शब्दों का चयन किया है। सत्तर शब्दों की कविता में उन्होंने अड़तालीस मुक्ताक्षरों और बाईस बद्धाक्षरों का प्रयोग किया है। अड़तालीस मुक्ताक्षरों के प्रयोग से रचित इस मुक्तक छन्द काव्य में 'जगण' का प्रयोग सबसे अधिक हुआ है। यानी मध्य गुरु वाले गण का प्रयोग हुआ है और सबसे कम मध्य लघुवाले 'रगण' का। दीर्घ मात्राओं और ह्रस्व मात्राओं का प्रयोग बराबर है। एक गुरु , लघु से ज़्यादा है, इसके मुताबिक़ चाहें तो 'अकाल और उसके बाद' की नज़्म को दीर्ध मात्राओं के झुंड की कविता कह सकते हैं।

"मोटे रूप से यदि कोई स्वनिम अलग अलग स्थितियों में अलग अलग रूप ले या अलग अलग रूपों में प्रतिफलित हो तो उसको आर्की स्वनिम कहते हैं।"[6] सिर्फ़ दो तीन आर्की स्वनिम का इस्तेमाल उन्होंने अपनी रचना में किया है तो द्वयाक्षरों के ज़्यादिपन ने नज़्म को सादगी की तरफ़ खींच लिया है। अक्सर सृजन के वक़्त व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग ज़्यादा होता है। मगर कवि ने वस्तु को ही कर्ता के तौर पर अपनी वैचारिक पहलू की अभिव्यक्ति के लिए अधिक इस्तेमाल किया है। कर्ता के तौर पर नौ संज्ञाओं का प्रयोग किया गया हैं। 'चूल्हा', 'चक्की', 'कुतिया', 'गश्त', 'हालत', 'दाने', 'धुआँ', 'आँखें', 'कौआ' आदि नौ संज्ञाएँ कर्ता के रूप में नज़्म में मौजूद हैं। इनमें सकर्मक क्रिया के तौर पर सिर्फ़ एक ही क्रिया का प्रयोग हुआ है। बाक़ी आठ अकर्मक क्रियाओं की मदद से अपनी अभिव्यक्ति को उन्होंने साकार बनाया है। चूल्हा रोया, दाने आये, धुआँ उठा, चक्की उदास रही, कुतिया सोई, गश्त लगी, हालत रही, चमक उठीं, कौए ने खुजलाई, आदि नौ क्रियाओं में छह क्रियाएँ निस्वानी ज़बान की तरफ़ अपनी रुझान इज़हार कर देती है । (The verbs express their inclination towards feminine language.)

काल के कई क़िस्में हैं, मगर माहिर कवि ने सिर्फ़ एक काल का प्रयोग ही इसमें किया हैं। पूरे नज़्म की तामीर सामान्य भूतकाल के ढांचे में ही ढाल दिया है । कारकीय संरचना की नज़र से नज़्म की जाँच की जाय तो देखा जा सकता है कि उन्होंने चार कारकों का प्रयोग किया है। जैसे कि अधिकरण (पर), संबन्ध कारक (के/की) अपादान कारक (से) कर्ता कारक (ने) आदि । वर्णों की आवृति से कविता में लयात्मकता आ जाती है। सिर्फ़ लाटानुप्रास को छोड़कर शब्दालंकार अनुप्रास के सभी भेदों का सार्थक प्रयोग इस नज़्म में किया गया है। इसमें लाटानुप्रास की प्रतीति तो है मगर लाटानुप्रास नहीं है। कई दिनों के तक और कई दिनों के बाद। दो से अधिक बार आये हैं , मगर व्यख्या करने पर अर्थ में कोई फ़र्क़ नहीं होता है। अनुप्रास शब्दालंकार का प्रयोग बहुत खूबसूरती रवैये से कवि ने प्रयोग किया है। पहली, पाँचवीं व सातवीं पंक्तियों में छेकानुप्रास है, (चूल्हा रोया, चक्की रही उदास, में 'च' वर्ण और दाने आये घर के अंदर कई दिनों के बाद में 'द' वर्ण एक ही क्रम में दो बार और 'र' वर्ण शब्दों के अंत में दो बार आयी हैं, चमक उठी घर भर की आँखें कई दिनों के बाद 'र' वर्ण शब्दों के अंत में दो बार आया है।) तो दूसरी पंक्ति में वृत्यानुप्रस है ('कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास' में 'क' वर्ण एक ही क्रम में दो से अधिक बार आया है) अंतिम पंक्ति श्रुत्यानुप्रास की मिसाल है। इसमें कण्ठ से उच्चरित होनेवाली वर्णों की आवृती हुई है ('चमक उठी घर भर की आँखें कई दिनों के बाद' में कण्ठ्य वर्ण की आवृत्ति है। चरणों के अन्त में अन्त्यानुप्रास या तुक के सहारे कवि ने नज़्म को खूब सजा दिया है।

सन्दर्भ संकेत

1. https://hindi.webdunia.com/current-affairs/winston-churchill-bengal-famine-115100100028_1.html हिटलर से कम अत्याचारी नहीं था विंस्टन चर्चिल ।
2. http://kavitakosh.org/kk : नागार्जुन की कविता अकाल और उसके बाद ।
3. http://kavitakosh.org/kk : नागार्जुन की कविता अकाल और उसके बाद ।
4. http://kavitakosh.org/kk : नागार्जुन की कविता अकाल और उसके बाद ।
5. http://kavitakosh.org/kk : नागार्जुन की कविता अकाल और उसके बाद ।
6. भोलानाथ तिवारी:हिंदी भाषा की संरचना, पृ 50

Professor & Head,
Central University of Kerala, Kasargod
E-mail : drmanughazal@gmail.com

'छावनी में बेघर' कहानी संग्रह में चित्रित नारी समस्याएँ

हीरा चंद्रन

हिंदी कथा साहित्य में स्त्री जीवन के सभी पहलुओं का अंकन हुआ है। उन महिला साहित्यकारों में अल्पना मिश्र का बहुमूल्य स्थान है। जीवन में स्त्री का महत्वपूर्ण स्थान पहले था और आगे भी रहेगा। जितना पुरुष की उपस्थिति आवश्यक है, उतना ही एक महिला की भी। अल्पना मिश्र अपनी रचनाओं में स्त्री जीवन में उत्पन्न विविध समस्याओं का चित्रण प्रस्तुत करती हैं। अल्पना मिश्र ने अपनी कहानियों के माध्यम से स्त्री जीवन की विविध पहलुओं को प्रस्तुत किया है। लेखिका ने बड़ी बारीकी से स्त्री समस्याएँ एवं उसकी ज़रूरतों को जानने की कोशिश की है। उन कोशिशों के साथ नई आशाएँ एवं आकांक्षाएँ जोड़कर लेखिका ने अपने रचना क्षेत्र को संपन्न किया है। अल्पना जी की कहानियों में स्त्री के साथ होनेवाले अत्याचार, कामकाजी नारी की समस्याएँ, आदिवासी स्त्री-जीवन, अकेलेपन से तड़पनेवाली स्त्री, प्रेमिका के रूप में स्त्री, माँ एवं बेटी के रूप में स्त्री ....जैसे स्त्री जीवन के विभिन्न स्वरूपों को दर्शाया है।

इस जहाँ में हम कहानी में नायिका पति के इशारों पर चलती है। पति उसकी हर मामलों में दखलंदाजी करता है। उससे सवाल करती है। पति उसे अपनी मर्जी के अनुसार नचाती है। "उन्होंने कहा क्या बेवखूफी है। इस खर्च की क्या ज़रूर थी? फिर मैंने आज की सारी परेशानी बतायीं कि कैसे मैं बच्चों से बात नहीं कर सकीं। वे बिना पूरी बात सुने ही तुनक उठे - कोई दिक्कत होती तो बच्चो नौटियाल जी, वर्मा जी, सती जी में से किसी को फोन करते ही। तुम्हें इन चक्करों में पड़ने की क्या ज़रूरत थी?" मैं अपने उत्साह में फिर भी उन्हें समझाती रहीं। आखिरकार उन्होंने कहा-"अच्छा, खरीद ही लिया है तो इधर-उधर नंबर मत बाँट न। बड़ी पर्सनल चीज़ होती है मोबईल। कम फोन करना।"[1] यहाँ लेखिका बच्चों के लिए परेशान होनेवाली माँ का चित्रण करती है। साथ ही पति के इच्छा के विरुद्ध फोण खरीदनेवाली नायिका का चित्रण भी है। लेकिन पति उसकी मुसीबतों और परेशानियों को समझने की कोशिश नहीं करते है।

तमाशा नामक कहानी पूर्णतः स्त्री जीवन से संबंधित है। कुछ औरत किसी इंटर्व्यु के लिए बैठे हैं। उनके मन में कई प्रकार की परेशानियाँ होती हैं। उसमें एक माँ बताती है कि-"मेरे दोनों छोटे बच्चे सुबह से घर पर अकेले हैं। छोटावाला डेढ़ साल का है। पता नहीं क्या तूफान मचा होगा वहाँ। भूखे भी होंगे। सुबह से....."[2] यहाँ एक माँ की परेशानी देखी जा सकती है। तमाशा कहानी में पारिवारिक बंधनों में रहने के कारण आराम से इंटर्व्यू नहीं दे पा रही औरतों का चित्रण यहाँ देख सकते हैं। "मेरा बेटा तो पड़ोसी के पास है। बेचारी परेशान हो गई होगी। "मेडम जी, मेरे पापा अस्पताल में है। मम्मी वहीं है। सोचा था एक बजे तक फ्री हो जाउँगी। खाना देने जाना था। इतनी देर हो गयी।"[3] यहाँ स्त्री अपनी जिन्दगी और अपने परिवार को महत्व देती है। इसलिए नौकरी हासिल करने के साथ परिवार के लिए परेशान होनेवाली औरतों का स्वरूप यहाँ देख सकते हैं।

हर व्यक्ति का मानसिक स्वरूप अलग-अलग होता है इसलिए उनके अकेलेपन की त्रासदी के स्वरूप में भी विविधता देख सकते हैं। डॉ.इन्द्रनाथ मदान के अनुसार - "अकेलेपन का बोध पुरानी है, मध्यकालीन या रोमांटीक अकेलेपन से भिन्न कोटि का है। मध्ययुग में यह आत्मिक स्तर का है। रोमांटिक युग में वैयक्तिक स्तर पर और आधुनिक युग में स्थिति-नियति के स्तर पर"[4] अकेलापन मानव को निराशा की गहरी खाई में धकेलता है। उसका स्वर निराशावादी होता है।इस समय मानव अपने आपको परास्त समझकर गहरी दुख में डूबने लगता है। अल्पना मिश्र ने अपनी रचनाओं में स्त्री जीवन में उत्पन्न अकेलेपन की विभिन्न स्वरूपों को दर्शाने का प्रयास किया है।

छावनी में बेघर की नायिका मिसेज कुमार के पति युद्ध स्थल में चले जाने के बाद नायिका को खुद सबकुछ संभालना पड़ता है। तब बार-बार उनके पति की याद आती है। घर खाली करने का वार्निंग समय बीत गया है। आज सुबह-सुबह फोन पर अम्माँ के देहान्त की खबर

आयी है। मैं बच्चों के साथ गाँव जा रही हूँ। परसों उपर से खबर आयी थी कि कुछ अफसरों को छुट्टी पर भेजा जाएगा। मेजर कुमार भी आनेवाले हैं। अब आएँगे तो सीधे गाँव आ जाएँगे। मैं रुक नहीं सकती इस समय। मेरे गये बिना वहाँ सब काम कैसे होंगे? मुझे जाना ही होगा। मैं बच्चों के साथ तैयारी में व्यस्त हूँ। कुछ पैसे भी हाथ में होना चाहिए। मन-ही-मन जोड़ घटा रही हूँ। क्या इस वक्तमेरे साथ मेजर कुमार की कमी को कोई चीज़ पूरा कर सकती है?"[5] यहाँ फौजी पति के बारे में नायिका को कोई जानकारी प्राप्त नहीं होती है। वह इस बात को लेकर दिन-रात परेशान रहती है। लेकिन अचानक माँ की मृत्यु हो जाने के कारण से गाँव जाना पड़ता है। तब वह पति को याद करती है। पति के अभाव में सारा काम खुद करना पड़ता है। यहाँ पति के अभाव में अकेलापन महसूस करनेवाली स्त्री का स्वरूप देख सकता है।

समकालीन बदलते समाज में स्त्री का घर के बाहर काम करना आम बात हो गई है। अर्थ के अभाव के कारण स्त्री ने घर के चार दीवार के बाहर कदम रखा है। शिक्षित महिलाओं ने परिवार का पालन-पोषण करने के लिए अपने पति के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करना शुरू कर दिया। कहीं स्त्री अपनी मर्जी से काम करने लगी तो कहीं जबरदस्ती से कभी घर में नौकरी करने के लिए कोई नहीं होने के कारण मजबूरन उसे काम करना पड़ता है। कामकाजी औरत को परिवार एवं नौकरी को एक साथ संभालना पड़ता है। उन्हें दोनों संभालकर आगे बढ़ने के लिए कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है। कामकाजी स्त्री को नौकरी एवं पारिवारिक स्तर पर जिन-जिन मुसीबतों को झेलना पड़ रहा है, उसका अंकन अल्पना जी के कथा-साहित्य में विद्यमान है।

इस जहाँ में हम कहानी में कामकाजी स्त्री के जीवन में उत्पन्न विभिन्न समस्याओं का चित्रण देख सकते हैं। "नौकरी करेंगे साथ में, जाएगी साथ में, पैसा लेगी बराबर का, और साथ बैठने में सती-सावित्री बनने लगेगी। या फिर नौकरी क्यों कर रही है? इतने नखरे हैं तो घर बैठे।"[6] काम के सिलसिले में नायिका साथियों के साथ कार में बैठकर जाती है। तब साथी उसके बारे में इसी प्रकार फुस-फुसाता है। यह सुनकर नायिका को बेहत पीडा महसूस होती है। लेकिन वह उसके खिलाफ गाड़ी में बैठकर कुछ भी कहना नहीं चाहती है। इसी प्रकार ट्रान्सफर की बात आने पर सह कर्मचारी नायिका से कहते हैं कि- "आप तो महिला हैं, आप काहे की चिंता? सरकार ने महिलाओं को विशेष छुट्टी दी हैं। एक दो मेडिकल सर्टिफिकेट लगा दीजिए एबार्शन का। सौ रुपए में बन जाता है। जाइए, सवा महीने की छुट्टी ले के मौज करिए"[7] यहाँ ट्रांस्फर की चर्चा करते समय नायिका अपने पारिवारिक मुसीबतों की वजह से दूसरी जगह जाने से डरती है। तब उसके सह कर्मचारी वर्ग उसका मज़ाक उठाती है।

लिस्ट से गायब कहानी में नायिका शिक्षित है। सपनों के साथ पति गृह पहुँच गई नायिका को पति के घृणायुक्त व्यवहारों का सामना करना पड़ता है। वह पति के साथ रहने पर भी एक प्रकार की घुटन महसूस कर रही थी। वह सोचती है कि-"उनकी शादी के बस अभी चार साल ही तो हुए हैं। इन चार सालों में उन्हें क्या क्या नहीं समझ में आया या उन्हें क्या क्या नहीं समझाया गया। भाई-बहनों से भरे एक असाधारण से परिवार से आयी थीं। अफ सर की पत्नी बनकर। पढ़ाई में तेज़ थी, पर यहाँ आकर पता चला कि डिग्रियों का महत्व सिर्फ शादी से पहले तक होता है। शादी के बाद ये डिग्रियाँ आपके दिन-रात के काम में केवल नुक्स निकालने के काम आती हैं।"[8] यहाँ अनमेल विवाह की मुसीबतों को दर्शाती है।

मिड डे मील नामक कहानी में अवधा और उसकी पत्नी छोटी नौकरी करनेवाले है। अचानक बेटी की तबीयत खराब होते ही पति पहले पहुँचते हैं। लेकिन उसके पास पैसे की कमी थी। उस समय पत्नी अपना काम छोड़कर मालिक से पैसा लेकर वहाँ पहुँचती है। यहाँ पति-पत्नी के हाथ में ज़रूरत पड़ने पर खर्च करने के लिए पैसा नहीं है। बच्ची की इलाज के लिए अवश्य पैसे की कमी थी। लेकिन पत्नी अवसरोचित पैसे इकट्ठा करने में सफल होता है। "इंजेक्शन लगा गया है। लड़की उहूँ-उहूँ करके रो पड़ी। अवधा कॉउटर पर पैसा जमा करके लौटा। पूरे हज़ार रुपये। सिटी स्कैन के हज़ार रुपये। 'हज़ार रुपये' उसके दिमाग में बच रहा है। सरकारी अस्पताल के डॉक्टर ने साफ-साफ कह दिया है - स्कैन कराओ, किसी अच्छे अस्पताल में दिखाओ। सिर में चोट लगी है। जहरीले खाने

के असर से भी नहीं उबरी है। डॉक्टर ने तो एक अस्पताल और डॉक्टर का नाम,पता लिखकर भी दिया है। भला हो डॉक्टर का कि उसने उसे यहाँ भेजा। वहाँ की फीस अलग, यहाँ की अलग, दवा के पैसे अलग....पग-पग पर....। हज़ार रुपये। वह धीरे से स्त्री के पास आकर बुदबुदाया। हज़ार रुपये स्त्री दोहराती है। दो दिन उतर ही चले गए। अस्पताल में। देखो कितना दिन और खिंचेगा। "कल ही चली जाना।"[9] यहाँ पति-पत्नी आर्थिक अभाव से जूझ रहे हैं। लेकिन बच्ची की हालत ठीक करने के लिए वे खूब प्रयास करती है।

अल्पना मिश्र की रचनाओं में स्वावलंबी स्त्रियों का स्वरूप देख सकते हैं। अल्पना जी ने अपने कथा-साहित्य में ऐसी आत्मनिर्भर महिलाओं की समस्याओं का चित्रण पेश किया है।

छावनी में बेघर का पात्र मीनु पति के युद्धस्थल में गयाब हो जाने के बाद परेशान हो जाती है और साथ ही छावनी के बाहर घर ढूँढना पड़ता है। लेकिन वह अपनी हिम्मत नहीं छोड़ती। वह अपने आपको सबल समझती है। बच्चों की ज़िन्दगी को सुरक्षित रखने का निर्णय लेकर वह किसी पड़ोसी औरत से बताती है कि- हमें नौकरी और घर दोनों ही खोजना चाहिए"[10] यहाँ अल्पना जी ने निराश न बैठकर आगे बढ़ने का प्रयास करनेवाली औरत का चित्रण किया है।

लिस्ट से गायब कहानी की नायिका स्वावलंबी है। वह नौकरी करना चाहती है। अपने पैरों पर खड़े होना चाहती है। लेकिन उसका पति अफसर होने के कारण नोकरी के लिए जाने नहीं देता है। उसे काम करने और दूसरों से मिलकर समय व्यतीत करने की आशा है। लेकिन पति उसे जाने नहीं देता है। नायिका बेहद दुख महसूस करने लगती है। वह प्रतिरोध करने की कोशिश करती है। वह सोचती है कि - "दुःख इलना स्थूल होता है क्या? इतना सीधा और सपाट कि कह दिया जाए जस का तस?"[11] यहाँ नायिका स्वावलंबी है मगर अपनी मर्जी के अनुसार जी नहीं सकती है।

अल्पना मिश्र जी ने अपने कथा-साहित्य में प्रेम की रंगात्म स्वरूपों को दर्शाने के साथ प्रेम के बदलते स्वरूपों को भी दर्शाया है।

बेदखल कहानी की नायिका प्रतिमा दी अपने बच्चे के गुरु सिद्दिकी जी से खूब प्रेम करती है। सिद्दिकी जी भी उससे प्रेम करता है। लेकिन दोनों इस मसले पर एक दूसरे से बात नहीं करते हैं। फिर बहाने बनाकर प्रतिमा दी उनसे मिलती थी। कुछ ज़रूरी काम के लिए प्रतिमा दी के बेटे डब्बु और सिद्दिकी जी दिल्ली चले गए। उस समय प्रतिमा दी को बेटे के साथ-साथ सिद्दिकी जी भी याद आने लगी। उनके दिल में सिद्दिकी के लिए प्यार पनपने लगा। "सिद्दिकी जी के जाने के बाद, मुस्कराते हुए, आकाश की तरफ देखकर प्रतिमा दी ने तीन शब्द कहा, कितने अच्छे हैं सिद्दिकी जी।"[12] यहाँ दिल में छुपाई प्रेम का अनमोल चित्र देख सकते हैं। प्रतिमा दी एक बच्चे की माँ है। वह समाज में पुरुषों के साथ खुले व्यवहार करना नहीं चाहती। मगर उसके दिल में सिद्दिकी जी के लिए प्रेम है। लेकिन वह उसे बताने से डरती है।

जिम्मी की सपने कहानी में स्त्री जीवन में उत्पन्न प्रेम संबंधी परेशानियों को एक कुत्तिया के माध्यम से व्यक्त किया है। जिम्मी एक कुत्तिया है। उससे मिलने के लिए एक अल्सेशियन कुत्ता आया करता है। "बार-बार के स्वप्न में दिखनेवाली, बार-बार की हिदायतों के बावजूद जिम्मी और राजा की मुलाकातें बढ़ीं। राजा ने प्यार का इजहार भी किया, पर अकेले मिलने की शक्लोसूरत नहीं बन पा रही थी। एक दिन राजा ने जिम्मी को एक नेक सलाह दे डाली। 'तू इतनी मजबूत है, तगड़ी है, ये चेन में क्यों लिपटी है? तुड़ाकर आ जा मेरे पास। 'पर जिम्मी के लिए यह सलाह गलत साबित हुई। वैसे भी जिम्मी को सोचना चाहिए था कि हर ऐसी - वैसी सलाह उसे प्यार में आँख बंद कर नहीं माननी चाहिए। प्यार अंधा होता है।"[13] यहाँ जिम्मी को वह कुत्ता पसंद है। लेकिन उससे कोई गडबड्डी हो जाए तो उसकी मालिक उसे घर से निकाल देंगे। इसलिए जिम्मी नामक कुत्तिया प्रेम करने से डरती है। स्त्री के साथ भी अक्सर ऐसा होता है। वह दिल खोलकर प्रेम करने में कभी-कभी डरता है। समाज उसकी बेइज्जती करेंगे। इसलिए प्रेम संबंध हमेशा गुप्त रहते हैं।

अल्पना मिश्र जी ने स्त्री जीवन से संबंधित विविध समस्याओं का उद्घाटन बहुत ही बारीकी एवं सूक्ष्मता से किया है। अल्पना मिश्र ने ऐसे पात्रों की सृष्टि की है जो

केरल में अमानवीकरण

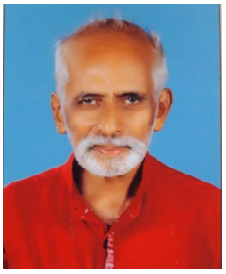

अमानवीकरण या अपमानवीकरण की प्रक्रिया गुलामी के युग में दक्षिण अफ्रीका या अमेरिका में थी, लेकिन भारत और केरल के विशेष संदर्भ में 'डी ह्यूमनाइजेशन' का प्रमुख आधार अस्पृश्यता थी। श्रीनारायण गुरु के सामने एक ऐसा समाज था, जिसको यह रूढ़मूल विश्वास करने के लिए मजबूर किया गया था कि निम्न जातियों के प्रति जो अन्याय किया जाता है, वह सब न्यायसंगत और धर्मशास्त्रों के अनुसार है, अस्पृश्यता ईश्वर द्वारा बनाई गई है और मनुष्य के कर्मों का फल है। सामंती युग में इस अमानवीकरण के द्वारा गुलामी की स्थितियाँ पैदा की गई थीं, जिसमें उच्चवर्ग को बहुत फायदा था। लेकिन बहुसंख्यक लोग अँधेरे में टटोलने के लिए मजबूर थे, सत्ता और शक्ति के प्रयोग के कारण उनकी आवाज कहीं सुनाई पड़ती नहीं थी, वे मौन होकर सब कुछ सहने के लिए अभिशप्त थे। समाज के निचले तबके के रूप में उच्च जातिवालों और उच्चवर्ग द्वारा पददलित होने के लिए वे मजबूर थे। भारत के अन्य प्रदेशों में भी जो नियम नहीं थे, वे केरल में नंबूतिरियों और उनसे प्रेरित शासकों द्वारा लागू किए गए थे और इसलिए उनको अकसर 'अनाचार' कहते थे। लेकिन शासन द्वारा इन 'अनाचारों' को कानून का जामा पहनाकर सामान्य मानवता की श्रेणी से बहुसंख्यक 'निम्न' जातियों के लोगों को गुलामों की कोटि का ठहराया गया था। यही मध्यकालीन केरल की अमानवीकरण प्रक्रिया थी। श्रीनारायण गुरु ने इस अमानवीकरण के सारे विकराल रूप को अपनी यात्राओं में प्रत्यक्ष देखा और उन्होंने उस पर गहरा सोच-विचार किया और पुनर्मानवीकरण की एक कार्य-पद्धति को रूप दिया, जो उस ऐतिहासिक युग की नियति लगती है।

डॉ.जी. गोपीनाथन द्वारा रचित 'श्रीनारायण गुरु : आध्यात्मिक क्रांति के अग्रदूत' शीर्षक ग्रंथ से उद्धृत। पुस्तक का प्रकाशक है ज्ञान गंगा, नई दिल्ली - 110 002

अपने साथ होनेवाले अत्याचारों को पहचानती है। उससे विरोध करने के लिए अपने आपको सक्षम बनाने की कोशिश करती है। अल्पना जी की स्त्री पात्रों की एक और खूबी यह है कि वे कहीं न भागती हैं। परेशानी से भागकर कहीं छुपती नहीं। रोती ज़रूर है। लेकिन पूरी ज़िन्दगी रो-रोकर जीती नहीं। अपनी क्षमता को पहचानकर उसके बल पर मूसीबतों से मुक्तिपाने का रास्ता ढूँढती है।

संदर्भ

1. छावनी में बेघर - अल्पना मिश्र, पृ.सं.-107
2. वही, पृ.सं.-46
3. वही, पृ.सं.-47
4. महिला रचनाकारों की कहानियों में जीवन मूल्य - डॉ.भारती शेलके, पृ.सं.-134
5. छावनी में बेघर - अल्पना मिश्र, पृ.सं.-123
6. वही, पृ.सं.-103
7. वही, पृ.सं.-105
8. वही, पृ.सं.-90
9. वही, पृ.सं.-37
10. वही, पृ.सं.-122
11. वही, पृ.सं.- 91
12. वही, पृ.सं.- 75
13. वही, पृ.सं.- 86

शोध छात्रा, हिन्दी विभाग
केरल विश्वविद्यालय, कार्यवट्टम कैंपस

'उतनी दूर मत ब्याहना बाबा' कविता में स्त्री विमर्श

डॉ.षेर्लिन

निर्मला पुतुल समकालीन हिंदी कविता की एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। उन्होंने अपना अधिकांश समय आदिवासी महिलाओं के समग्र विकास के लिए बिताया है। यूँ कहा जाए तो निर्मला पुतुल जी का जन्म भी झारखंड के एक आदिवासी परिवार में हुआ। उनकी कविताओं में आदिवासी नारी के जीवन संघर्ष की अनेक छवियों को हम देख सकते हैं खासकर झारखंड के आदिवासी लड़कियों की जिंदगी का चित्रण। उनका लेखन उनके अनुभव की सच्चाई है। प्रस्तुत कविता 'उतनी दूर मत ब्याहना बाबा' उनके 'नगाड़े की तरह बजते शब्द' नामक काव्य संग्रह से लिया गया है। इसमें एक ग्रामीण लड़की का चित्रण किया है जो अपनी शादी के संबंध में अपने पिताजी से अपनी राय प्रस्तुत करती हैं जो साधारण तौर पर इस पुरुष प्रधान समाज में देखा नहीं जाता। ग्रामीण लड़की के जरिए खुद निर्मला पुतुल ही अपनी राय प्रस्तुत करती है । कवयित्री ने पुरुष प्रधान, पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री की आवाज़ को बुलंद करने का प्रयास किया है।

प्रस्तुत कविता में एक पहाड़ी लड़की का चित्रण किया गया है जो अपने पिता से अपने अंतर्मन की बातें स्पष्ट करती हैं कि उसे कहाँ, कैसे और किससे शादी करना है । शादी की बात को लेकर लड़की अपने पिता से यही कहती है कि उसे अपने घर से बहुत दूर शादी करके मत भेजना । बहुत दूर शादी करके भेज दिया जाए तो मुझसे मिलने के लिए घर की बकरियाँ बेचनी पडेंगी। ऐसी नौबत न आए इसलिए वह अपने पिता से प्रार्थना करती है कि मेरी शादी कहीं आस-पास ही करा दे:-

"बाबा !
मुझे उतनी दूर मत ब्याहना
जहां मुझसे मिलने जाने की खातिर
घर की बकरियां बेचनी पड़े तुम्हें।"[1]

भारत में आज भी एक ऐसा रिवाज़ है जहां बेटियों को अमानत मानते है और बेटों को अपना हिस्सा मानते हैं। माता पिता किसी भी तरह लड़की की शादी करके अपना कर्तव्य निपटाने की कोशिश करते हैं। इस के विरुद्ध निर्मला पुतुल की ग्रामीण लड़की अपनी आवाज बुलंद करते हुए एक लंबी लिस्ट ही पेश करती हैं कि मेरा रिश्ता शहरी वातावरण में न करना। प्रकृति की मनोहारिता को छोड़कर शहर के शोर-शराबा में रहना नहीं चाहती। लड़की अपने वर के बारे में कहती है कि मुझे किसी निकम्मे से शादी न कराना, शराबी से बिल्कुल नहीं, लड़कियों पर बुरी नजर डालने वाले से कतई नही जो मेले में जाकर लड़कियों को उड़ा ले जाने वाला हो। लड़की फिर कहती है कि उस आदमी के बारे में सोचना भी नहीं जो बात बात पर लड़ने वाला हो और जब चाहे बिना बताए कहीं चला जाता हो, छोटी-छोटी बातों पर डंडा लाठी लेने वाला न हो अर्थात् झगड़ालू न हो।

लड़की अपने ननिहाल और ससुराल के फासले के बारे में कहती है कि मेरा ससुराल इतना नजदीक होना चाहिए जहाँ सुबह ननिहाल जाकर वापस शाम को पैदल ससुराल लौट सके। अगर मैं दुख से रोने लगूँ तो मेरी रुदन तुम(पिता) सुन सको और तो और कोई मेले या बाजार में आते जाते वक्त मेरी खैरियत भी लेते जाए ।

"मैं जो कभी दुख में रोउ इस घाट
तो उस घाट नदी में स्नान करते तुम
सुनकर आ सको मेरा करुण विलाप..।"[2]

ग्रामीण परिवेश में रहने वाली पहाड़ी लड़की अपने पिता से फिर आग्रह करती है कि मुझे उस आदमी के हाथ न थामना जो प्रकृति प्रेमी और मनुष्य स्नेही न हो अर्थात जो पेड़ पौधे लगाना नही जानता हो, जो किसी का सहारा न बना हो । आगे लड़की कहती है कि मुझे किसी अनपढ़ से भी शादी न कराना:-

"जिन हाथों ने दिया नहीं
कभी किसी का साथ

किसी का बोझ नहीं उठाया
और तो और
जो हाथ लिखना नहीं जानता हो 'ह' से हाथ।"[3]

लड़की कहती है मेरा ब्याह उस देश में करना जहाँ ईश्वर कम आदमी ज्यादा बसते हो ईश्वर की हम आराधना करते हैं, पूजते हैं, डरते हैं पर मनुष्य से हम स्नेह सौहार्द की भावना रखते हैं आपस में सुख-दुख बांटकर जीते हैं। लडकी अपनी जिंदगी सामान्य लोगों के साथ बिताना चाहती है।

अंत में लड़की अपने सपनों के राजकुमार के बारे में अपने पिता से कहती हैं कि मेरा पति ऐसा आदमी हो जो मेरे दुख को अपना दुख समझे और हमेशा मेरा साथ दे :-

"चुनना ऐसा घर
जो बजाता हो बांसुरी सुरीली
ढोल - माँदर बजाने में हो पारंगत
बसंत के दिनों में ला सके जो रोज
मेरे जुड़े के खातिर पलाश के फूल
जिससे खाया नहीं जाए
मेरे भूखे रहने पर
उसी से ब्याहना मुझे ।"[4]

पुराने ज़माने में स्त्री को वर चुनने का अवसर प्राप्त था। लेकिन यह संप्रदाय धीरे-धीरे समाप्त होता गया। पुरुष सत्ता हावी होती गयी। लड़की अपनी मर्जी से शादी नहीं कर पाती थी घरवाले तय करते दहेज आदि देकर अपना दायित्व समाप्त कर देते थे। लेकिन प्रस्तुत कविता में निर्मला पुतुल ने एक ऐसी लड़की का चित्रण किया है जो बेजुबान नहीं है अपने अधिकारों के लिए लड़ती है। स्त्री स्वातंत्र्य को ही कवयित्री ने इस कविता में ज़ोर दिया है।

संदर्भ

1- काव्य यात्रा – इतनी दूर मत ब्याहना बाबा – निर्मला पुतुल पृ -105
2- वही पृ -107
3- वही-पृ -106
4- वही-पृ -107-108

डॉ.षेर्लिन
पी.एस.विल्ला, विलयिक्कलम
कष़क्कूट्टम, तिरुवनंतपुरम, मो:9605616741

कविता

दो परछाइयाँ

डॉ.नवीना.जे.

दो परछाइयाँ
आमने सामने आ गईं
एक की परछाई
दूसरी में विलीन हो गई
अब दोनों को
नहीं कर सकता अलग
पहले प्रत्येक को अपनी अपनी पहचान थी
और अब?
पता चला कि
एक परछाई स्त्री की है
और दूसरी पुरुष की ।
लेकिन एक होने के बाद क्या हुआ कि
परछाई एक बड़े पुरुषाकार में बदल गई
स्त्री परछाई ने अपनी पहचान खो दी।
या फिर यूँ कहना बेहतर होगा कि
स्त्री परछाई ने अपनी पहचान त्याग दी।

प्रवासी हिन्दी कहानियाँ - चेतना और चिंतन

डॉ.सिन्धु.एस.एल

शोधसार

हिन्दी का प्रचार एवं प्रसार आज भारत तक सीमित नहीं है। उसका वैश्विक रूप साहित्यिक विधाओं के माध्यम से भी निखर आया है। प्रवासी लेखन में अनेक भारतवंशियों ने अपनी मुद्रा डाली है। ये अपनी रचनाओं के माध्यम से भारत से अपना संबंध बनाये रखने के परिश्रम में भी लगे रहे हैं। उनकी एक अलग पहचान है। अभिमन्यु अनत और रामदेव धुरंधर जैसे लेखक भारत से मॉरिशस लाये गये गिरमिटिया मज़दूरों की दर्दनाक कहानी लिखकर प्रवासी लेखन के प्रथम चरण के वक्ता बन गये । आजीविका की खोज में वहाँ पहुँचे अशिक्षित मज़दूरों ने कठिन परिश्रम करके आज के मॉरिशस का निर्माण किया । फिजी, ट्रिनिडाड आदि देशों में ऐसे बहुत अधिक मज़दूर पहुँचाये गये । उनकी कहानियाँ भी प्रवासी लेखन के विषय बन गये । प्रवासी लेखन के दूसरे चरण में इन मज़दूरों की अगली पीढ़ी की कथा है। तीसरे चरण में विदेश में पहुँचे शिक्षित नौजवानों की महत्वाकांक्षाओं की कहानी है ।

बीज शब्द

प्रवासी लेखन, हिन्दी भाषा के प्रति आस्था, प्रवासी कहानियों की वैचारिक बिन्दुएँ, सांस्कृतिक टकराहट, नोस्टालजिया, जिजीविषा ।

मूल आलेख

हिन्दी के प्रति विशेष आस्था रखनेवाले प्रवासी लेखक प्रवास जीवन के विभिन्न दृश्य दिखाने के लिए अलग-अलग साहित्यिक विधाओं का सहारा लेते हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी की शोभा बढ़ाने में इन लेखकों का योगदान है। अमरिका, जापान, नोर्वे, रूस, आस्ट्रेलिया, ब्रिटेन आदि देशों के हिन्दी के प्रवासी लेखकों की परंपरा मॉरिशस, फिजी आदि देशों के प्रवासी लेखकों से भिन्न है । गिरमिटिया मज़दूरों के कठोर अनुभवों के साझीदार होने के कारण इनके लेखन अन्य प्रवासी लेखकों की रचनाओं से अलग है। अमरिका, आस्ट्रेलिया, ब्रिटेन आदि देशों के लेखकों की रचनाओं में सांस्कृतिक टकराहट एक मुख्य विषय है। नयी पीढ़ी की समस्याएँ इन सबसे भिन्न हैं। विदेश जाकर धन अर्जित करके सुखी जीवन बिताने की लालसा ही आज युवालोगों को विदेश जाने की प्रेरणा देती है। वे वापस आना भी नहीं चाहते हैं।

प्रवासी लेखन के प्रथम चरण में प्रवासी मज़दूरों की दर्दभरी ज़िन्दगी ही मुख्य विषय था। एक प्रवासी मज़दूर हमेशा तनाव में है। उस देश के कानून प्रवासियें के अनुकूल होने की संभावनाएँ बहुत कम हैं। उनके काम की कोई सुरक्षा नहीं, उनके अपने अधिकार होते ही नहीं। वे सिकुड़ जाते हैं अपनी ओर, इस तरह कि अपना अस्तित्व ही भूल जाते हैं। उनकी मानसिक और शारीरिक यातनायें किसीने ठीक तरह से पहचानी नहीं। प्रवासी अपने जीवन में झेलनेवाली मुख्य समस्याएँ ये हैं,

1.अस्तित्व की समस्या।
2.विभिन्न सामाजिक भूमिकाओं में जीने के कारण होनेवाली सामाजिक एवं मानसिक समस्यायें
3.सांस्कृतिक चेतना पर अवरोध होने पर उत्पन्न होनेवाला दमन।
4.स्वाभिमान की चोट।
5.घुटन, तनाव,अलगाव।
6.अलग भाषिक भूमिका में जीने से होनेवाली समस्यायें।
7.स्वदेश से कट जाने का दुख।
8.आर्थिक विपन्नतायें।
9.मज़दूरों का संघर्षमय जीवन।

अभिमन्यु अनत, रामदेव धुरंधर आदि की रचनाएँ गिरमिटिया मज़दूरों के जीवन को चित्रित किया है। उषा प्रियंवदा ,कीर्ति चौधरी आदि के अलावा अर्चना पेन्युली (डेनमार्क), लक्ष्मीधर मालवीय (जापान), स्नेह ठाकुर (कनाडा),अशोक कुमार श्रीवास्तव(अबुधाबी), प्रेमलता वर्मा (अर्जन्टीना), अमित जोशी (नोर्वे), तोषी अमृता (ब्रिटेन) आदि लेखकों ने दूसरी और तीसरी पीढ़ी के लोगों के जीवन का पर्दाफाश किया है ।

मॉरिशस के बदलते परिवेश को भी अनत और धुरंधर की कहानियों में देख सकते हैं। सुखी जीवन की लालसे में पड़कर युवक अपनी ज़िन्दगी गंवाने के दृश्य भी इनकी कहानियों में हैं। अभिमन्यु अनत की कहानी 'मातमपुर्सी' में निकम्मे और नशीले लोगों के जीवन का चित्रण हुआ है। रामदेव धुरंधर की कहानी 'दिशाएँ' युवा पीढ़ी के जीवन पर आधारित है। इसमें माता- पिता के तलाक होने के कारण पथभ्रष्ट होनेवाली एक लड़की के जीवन की विभिन्न दिशाएँ ही प्रस्तुत हैं। वह लड़के लोगों के साथ घूमकर रहने में इच्छुक है । सामयिक समाज में कई लड़कियाँ इस तरह असुरक्षित हैं। बच्चों के जीवन की त्रासदी सामाजिक पतन के कारण भी हो सकती है। "जो मुझे ज़्यादा पैसा देता है ,मैं उसे ज़्यादा चाहती हूँ।"[1] कहनेवाली लड़की दिशाएँ कहानी के द्वारा अपने मानसिक व्यापार को प्रकट करती है । माँ -बाप के वात्सल्य एवं दुलार के बिना संत्रस्त लड़की का मनोवैज्ञानिक चित्रण यहाँ हुआ है ।

महेशचंद्र विनोद की कहानी उज्ज्वल भविष्य में नये जीवन संदर्भों की तलाश में स्वदेश छोड़कर विदेश जानेवालों के भविष्य का विचार - विमर्श किया है । इस कहानी के मुख्य पात्र धनई और कन्हई पडोसी और घनिष्ठ मित्र हैं । इसमें अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य बनाने की आशा लेकर अमरिका जानेवाले धनई की कहानी है। अपने मित्र कन्हई को फीजी में छोडकर वे अपनी पत्नी और बच्चों को साथ लेकर अमरिका चले गये । बरसों बाद कन्हई और उनकी पत्नी, धनई से मिलने के लिए अमरिका गये। वहाँ पहुँचने के बाद पता चला कि धनई अपने ही घर में बहू और बेटे से तिरस्कृत हैं। उस घर में उनका कोई स्थान नहीं है। उनसे बहू का व्यवहार इस तरह है , "ओल्ड मैन ,क्या मैं तुम्हारी नौकरानी हूँ , मैं तुम से आर्डर क्यों लूँ तुम तो घर में खाली बैठा रहता है , क्या तुम चाय नहीं बना सकता?"[2] कन्हई का उपदेश पाकर धनई फीजी लौट आते हैं । वे अपने मित्रों एवं रिश्तेदारों की छाया में रहने का निर्णय कर लेते हैं ।

अशोक कुमार श्रीवास्तव की कहानी मृगतृष्णा में अच्छी नौकरी की तलाश में विदेश आये एक अध्यापक, अखिलेश का जीवन संघर्ष चित्रित है। वे बहुत सपने लेकर भारत से विदेश आये। उनको वहाँ एक स्कूल में नौकरी मिली। भारत में भी वे एक स्कूल में अध्यापक थे। विदेश में आने के लिए उन्होंने छुट्टियाँ ली थीं। लेकिन इस पर शिकायत होने पर उनको तुरंत भारत लौट आना पड़ा। समस्या यह निकली कि उनको अपना पासपोर्ट स्कूल अधिकारियों से वापस मिलने के लिए अपना रिटन टिकट दिखाना और तीन माह का वेतन जमा करना पड़ा। भारत लौट आने के बाद वे अपने रुपये वापस मिलने का परिश्रम करते हैं। "क्या वहाँ फँसे मेरे पैसे वापस मिलने की कोई गुंजाइश नहीं है ?"[3] - वे हमेशा इस के पीछे पड़ते हैं। इस तरह समस्या में पड़नेवाले कई हैं । यहाँ अखिलेश भी गिरमिटिया मज़दूरों के नये प्रतिरूप एवं प्रतीक हैं। विदेश में नौकरी मिलने के मोह से स्कूल के अधिकारियों ने जो-जो कागज़ दिखाये उनपर बिना पढ़े और समझे अपने हस्ताक्षर कर डाले। इस जाल को सुलझाना आसान नहीं है।

घर वापसी, अर्चना पेन्युली की चर्चित कहानी है। इसमें विदेश में पहुँचने की अदम्य लालसा रखनेवाली युवा पीढ़ी के प्रतीक के रूप में विवेक के जीवन की कथा कही है। मौकापरस्त इस युवक का चरित्र इस कहानी की नायिका पूजा के शब्दों से व्यक्तहै , "मेरी

आँखें खुल गयी हैं। मेरे डैडी सही कहते हैं कि तुम सिर्फ मौकापरस्त ,अवसरों को ढूँढनेवाले इंसान हो। विदेश आने के लालच में तुम हिन्दू से क्रिश्चियन बने ओर जब लगा कि और अच्छा मौका है तो तुम फिर हिन्दू बन गए। तुम्हें केवल मौका चाहिए ।"[4] इस कहानी के द्वारा लेखिका मौकेपरस्त युवा पीढ़ी पर व्यंग्य भी करती हैं। तोषी अमृता की कहानी 'सर्द रात का सन्नाटा' भारतीय संस्कृति में विश्वास रखनेवाली नेहा और उसको धोखा देनेवाली बहन तनु के जीवन से संबंधित है। नेहा के आशिक परेश से शारीरिक संबंध स्थापित करके तनु अपनी बहन से ही लापरवाही प्रकट करती है। तेजेन्द्र शर्मा की कहानी 'अभिशप्त' विदेश पहुँचे गये रजनीकांत नामक एक साधारण युवक की ज़िन्दगी का पर्दाफाश करता है । पति- पत्नी के बीच की समस्याएँ उसे हमेशा सताती हैं। अपनी प्रेमिका को छोड़कर नयी ज़िन्दगी बसाने का पाप बोध भी उसको छोडता नहीं। कभी-कभी उसके मन का नियंत्रण नष्ट होता है और वह वापस भारत आना चाहता है। लेकिन वह खुद जानता है कि यह इच्छा कभी भी न पूरी होनेवाली है। वह अपने आपको अभिशप्त मानता है। प्राण शर्मा के 'पराये देश' नामक कहानी में अपने देश भारत के प्रति नोस्टालजिया रखनेवाले एक प्रवासी ड्राइवर के मानसिक व्यापारों को कहानीकार ने अत्यंत संवेदनात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है । "सोलह साल पहले मैं बड़ा अटल इरादा लेकर भारत से इंगलैंड आया था कि यहाँ पाँच साल रहकर, खूब धन कमाकर भारत लौट जाउँगा। किस्मत का भी जवाब नहीं कि अभी तक यहाँ पड़ा हूँ। भारत वापस जाने के लिए पत्नी से कई बार तकरार भी होती है । मेरी चलती नहीं- न पत्नी के सामने, न बच्चों के सामने।"[5] विदेश में पले बच्चों के लिए पिता की इच्छा अवांछित ही लगते हैं। दो पीढियों की टकराहट से घर अशांत होने से बचाने के लिए पिता को अपनी नोस्टालजिया को वश में रखना ही अच्छा लगता है ।

'कौन सी ज़मीन अपनी' नामक कहानी में कहानीकार सुधा ओम ढींगरा ने इसका मुख्य पात्र सरदार मनजीतसिंह की ज़िन्दगी चित्रित करके उसके मानसिक द्वन्द्व को अत्यंत भावात्मक ढंग से खींचा है। मनजीतसिंह अमरिका में रहने पर भी भारत देश के प्रति लगाव रखता है और अपने अंतिम दिनों में पंजाब में जाकर वहाँ बिताने के लिए ज़मीन खरीदकर रखता है। लेकिन उसके भैया लोग उसको वापस अमरिका लौटाने के लिए उसके खिलाफ षड्यंत्र रचते हैं। यह जानकर वह टूट जाता है। "यह कहानी एक गंभीर सवाल खड़ा करती है। कभी अपनों की परवरिश की खातिर तो कभी रोजी रोटी की तलाश में विवश प्रवासी बने भारतीयों की इस पीडा से जो गुज़रे हैं वही इस दर्द को समझ पाते हैं । अन्यथा दूसरों को केवल उनका वैभव और विलासी जीवन ही नज़र आता है । उनके दिल में मिट्टी की महक समायी है, अपने भीतर के भारत को श्रद्धा से याद करते हैं।"[6]

प्रवास जीवन की पहली पीढ़ी से अलग लीक पर चलनेवाले हैं दूसरी और तीसरी पीढ़ी के लोग। विदेश के रीति रिवाज़ों को अपनाकर वे भारतीय विचारों से दूर हो गए हैं । इसी वजह से पहली और दूसरी पीढी के बीच में टकराहट होती रहती है । शैल अग्रवाल की कहानी विच और अर्चना पेन्युली की कहानी कठिन चुनाव में इस प्रकार की टकराहट प्रकट होती है । लेखक पहली और दूसरी पीढी के बीच के संघर्षों से गुज़रनेवाले प्रवासी लोगों को चित्रित करते हैं । डॉ.कमल किशोर गोयनका के अनुसार "हिन्दी के प्रवासी साहित्य का रूप रंग, उसकी चेतना और संवेदना भारत के हिन्दी पाठकों के लिए नई वस्तु है, एक नए भावबोध का साहित्य है जो हिन्दी साहित्य को अपनी मौलिकता एवं नए साहित्य संसार से समृद्ध करना है । इस प्रवासी साहित्य की बुनियाद भारत प्रेम तथा स्वदेश- परदेश के द्वंद्व पर टिकी है।"[7]

निष्कर्ष

गिरमिटिया साहित्य में प्रवासियों के जीवन संघर्ष की गाथा विरचित है खासकर अनपढ़ लोगों के जीवन समर ही इस कोटि की रचनाओं का विषय है। अपनी एक दुनिया बसाने के कठिन परिश्रम के पश्चात् उनकी अगली पीढ़ी उस परिवेश से मिल जुलकर रहनेवाली हैं। भारत से अच्छे जीवन परिवेश एवं सुख सुविधाओं की खोज में पहुँचनेवालों की संख्या बढ़ती रहती थी। इनकी अरमानें वहीं बसकर जीवन के क्षितिजों को फैलाना था। आगे चलकर भूमंडलीकरण की वजह से युवा लोग देश की सीमाओं को पार करने में अपने को सक्षम पाकर विदेश जाने के इच्छुक बन गये। प्रवासी कहानीकार बदलते परिवेशों को अपनी रचनाओं में अक्षरबद्ध करते रहते हैं। मानव की जिजीविषा उसको जीवन के नये संदर्भों की तलाश में निकलने के लिए प्रेरित करते हैं। भारतीय लोग अपनी अरमानों की पूर्ति के लिए दूर-दूर के क्षितिजों को पार करने के लिए तैयार हैं। इनके जीवन की कथा आगे बढ़ती रहती है ।

संदर्भ

1. रामदेव धुरंधर, दिशाएँ, प्रतिनिधि आप्रवासी हिन्दी कहानियाँ, पृ - 304
2. महेश चन्द्र विनोद, उज्ज्वल भविष्य, प्रतिनिधि आप्रवासी हिन्दी कहानियाँ, पृ 83
3. अशोक कुमार श्रीवास्तव, मृगतृष्णा, प्रतिनिधि आप्रवासी हिन्दी कहानियाँ, पृ - 159
4. अर्चना पेन्युली, घर वापसी, प्रतिनिधि आप्रवासी हिन्दी कहानियाँ, पृ - 64
5. प्राण शर्मा, पराया देश, प्रतिनिधि आप्रवासी हिन्दी कहानियाँ, पृ - 419
6. डॉ.लता अग्रवाल, अनुसंधान, जनवरी-जून 2020, पृ 63
7. कमल किशोर गोयनका, विश्व हिंदी रचना, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, नई दिल्ली , 2003

डॉ.सिन्धु.एस.एल
अध्यक्षा, हिन्दी विभाग
सरकारी विक्टोरिया कॉलज, पालक्काड ।

शकेबा उपन्यास में नारी

सजिता.एस.आर

आधुनिक काल में साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के द्वारा समाज जीवन के साथ ही साथ समकालीन समस्याओं का चित्रण करने का प्रयास किया है। डॉ.शशिभूषण सिंहल कहते हैं कि - "सामाजिक उपन्यास समाज के विभिन्न क्षेत्रों, स्त्री-पुरुषों के संबंधों, परिवार, जाति-संप्रदाय, वर्ग, रीति-धर्म, सभ्यता, संस्कृति आदि का चित्रण करते हुए उनके लक्ष्य तक उनकी समस्याओं का निरूपण करता है।"[1]

भारतीय समाज में नारी का महत्वपूर्ण स्थान है। समकालीन हिन्दी कथा साहित्य में नारी के विविध रूपों का चित्रण हुआ है। नारी शोषण, नारी उत्पीड़न तथा दुर्दशा, नारी मानसिकता आदि पर समकालीन रचनाकारों ने अनेक रचनाएँ की हैं। डॉ.नाशित कुमार लिखते हैं -"किसान और मज़दूरों के बाद भारतीय समाज एक बृहद शोषित समूह भारतीय नारी अर्थ और अधिकार से वंचित रहने के कारण उसको कोई चारा नहीं। आर्थिक और सामाजिक स्तर पर उसका बराबर शोषण हो रहा है।"[2] समकालीन रचनाओं में नारी के विविध रूपों की झलक मिलती है।

समकालीन हिन्दी रचनाकारों में हरपाल सिंह अरुष का महत्वपूर्ण स्थान है। समकालीन हिन्दी साहित्य में अनेक पुरूष लेखक भी हैं, जिन्होंने स्त्री चरित्रों पर लिखा है। हरपाल सिंह अरुष भी अपने रचनाओं में नारी समस्याओं का चित्रण करने का प्रयास किया है। आज के समाज में हो रहे नारी शोषण का यथार्थ चित्रण हरपाल सिंह अरुष की रचनाओं का विषय रहा है। उनका एक बहुचर्चित उपन्यास है-शकेबा। आपने इस उपन्यास के मुख्य नारी पात्रों द्वारा मुस्लिम समाज की नारी की पहचान, सघर्षमय जीवन, मानसिकता आदि को अत्यंत मार्मिक ढंग से अंकित किया है।

प्रस्तुत उपन्यास में नारी मन को प्रमुख स्थान दिया गया है। भारतीय समाज में विवाह एक आवश्यक संस्कार है। विवाह से दो परिवारों के बीच नया रिश्ता उत्पन्न होने के साथ-साथ एक स्त्री-पुरुष के लिए नये जीवन की शुरुआत भी होती है। शकेबा कश्मीर के एक प्रोफेसर की बेटी है। उसकी शादी घरवालों की इच्छा के अनुसार दिल्ली के प्रोफेसर खुर्शीद का बेटा सदाकत से की जाती है। शकेबा का जीवन शादी के बाद बदल गया। उसे सदाकत के घर में बंधन युक्त जीवन बिताना पड़ा था। सदाकत हमेशा अपने कामों में व्यस्त थे। शकेबा को हमेशा अकेलापन महसूस होता है। उसके पति के व्यवहार के बारे में सोचकर वह परेशान है। शकेबा ने एक बार अपने मन की बात संकोच के साथ कही - "इस जगह आकर ऐसा लगता है जैसे दकियानूसी माहौल में आ गई है। न कोई बात ही करता न सलाह लेने का यहाँ रिवाज है, न देने का। इतनी डेंस डार्कनेस में, मुझको तो कुछ दिखाई नहीं देता।"[3] एक गृहस्थी नारी का जीवन कितना दुखदायी है, यह शकेबा के माध्यम से हमें पता चलता है। उनकी मानसिकता यहाँ स्पष्ट दिखाई देती है। पति को अपनी पत्नी की इच्छाओं का मान - सम्मान रखना चाहिए।

मुसलमान परिवारों में स्त्रियों की स्थिति बहुत बुरी है। उनको कई रिवाजों या यातनाओं का पालन करना पडती है। उनको अपने घरों में कोई स्वतंत्रता नहीं है। शकेबा का परिवार मुसलमान होते हुए भी सामाजिक परंपरा को नहीं मानता था। वे लोग बुर्का-पर्दा प्रथा में स्वतंत्र विचार रखते थे। जबकि सदाकत के घर में स्थिति ऐसी नहीं थी। सदाकत मजहब के रीति रिवाजों को माननेवाला था। सदाकत के यह व्यवहार शकेबा को पसंद नहीं है। उसे कई बार खाना खाने का मन नहीं करता था। उसका पति सदाकत यह नहीं पूछता था कि उसने खा लिया या नहीं। सदाकत पर्दा प्रथा का समर्थक था। उनकी इच्छा के विरुद्ध शकेबा कुछ नहीं कर सकती। "शकेबा को सदाकत के घर की परंपराएँ दकियानूसी लगती।"[4] यहाँ पर्दा प्रथा से

शकेबा का मन किस प्रकार व्याकुल थी, इसका चित्रण हमारे सामने होता है। एक-दो बार सास ने प्रस्तुत कही - "बेटी इस तरह कैसे काम चलेगा। एक ही घर में रहना है। कुल चार जने हैं। दिनभर ढकी मूँदी रहोगी तो दम घुटने लगेगा।"[5] सास के इस कथन से हमें यह पता चलता है कि एक मुसलमान स्त्री होने के नाते वह भी उनकी रीति रिवाजों की परेशानियाँ खूब जानती है। यहाँ दोनों परिवार के रिवाज़ें कैसे प्रभाव डालती हैं इसका चित्रण हरपाल सिंह अरुष हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं।

दाम्पत्य जीवन में परस्पर सहयोग आवश्यक है पति-पत्नी के बीच में। परस्पर प्रेम होना अनिवार्य है। प्रस्तुत उपन्यास के नायक सदाकत अपनी पत्नी शकेबा के साथ अमानवीय व्यवहार कर रहा था। दोनों के बीच प्रेम अंश मात्र नहीं रह गया था। सदाकत हमेशा शकेबा को नीचे दिखाने का प्रयत्न करता है। रात शकेबा के लिए केवल अंधकार एवं डरावनी हो गई थी। सदाकत के व्यवहार के बारे में उपन्यास में ऐसा लिखा है "सदाकत ने धीरे से 'डार्लिंग' कहा तो वह चौंक गई। शादी के शुरूआती एक वर्ष तक तो सदाकत उसको डार्लिंग कहकर ही बात आरंभ करता था। पिछ्ले दो वर्षों से दोनों के बीच तनाव होने लगा था। तब से सदाकत बिना कुछ बोले, बिना प्रेम प्रदर्शन किए, बिना हारी- बीमारी का ख्याल किए सीधे अपनी ओर खींचकर इस प्रकार हावी होने लगा था मानो शकेबा में इनसान की रूह न बसती हो। जैसे उसका अधिकार मर्द होने के कारण कुछ अधिक हो। शकेबा का अधिकार ऐसा कुछ हो ही नहीं। वह केवल समर्पण के लिए ही है। केवल भोग्या है। उसके शरीर और मन के साथ अजीब व्यवहार किया जाता था। जिसमें शरीर की नसें बेकार की थकान झेलती और मन पर असहनीय बोझ पड़ जाता है। हो सकता है कि, सदाकत शकेबा द्वारा उठाई गई बहसों में अपने आप को पराजित महसूस करता हो। जिसकी क्षतिपूर्ति वह ऐसा व्यवहार करके करता हो।"[6] वैवाहिक जीवन में तनाव उत्पन्न होने से जीवन दुखमय हो जाता है, इसका चित्रण यहाँ हमें देखने को मिलता है।

सदाकत पहले कंपनी में काम कर रहा था, बाद में नौकरी छोड़कर गैरकानूनी धंधा करने लगा था। अपने घरवालों से इसके बारे में कुछ भी नहीं बताया था। सबके समझने पर भी सदाकत के व्यवहार पर कोई परिवर्तन नहीं आया। सदाकत परिवार की इच्छा के विरुद्ध मजहब के नाम पर आतंकवाद में संलग्न हो जाता है। अंत में सदाकत को पुलिस पकडती है और जेल में भेजती है। माँ शफ फाका बेटे के व्यवहार में बदलाव लाने के लिए प्रयत्न की। शफ्फाका ने समझाना चाहा - "आज, हम मानते हैं कि हर आदमी जो भी करता है वह धन कमाने के लिए करता है। पहले एक काम करता है बाद में दूसरे काम के पीछे दौड़ लेता है। अधिक से अधिक पैसा कमाने के चक्कर में सब्र को दफन कर देता है। जहाँ एक बार पहुँच जाता है वह उँचाई कुछ नीची दिखाई देने लगती है। ऐसा सोचना उसकी मजबूरी बन जाती है। दो ताकतें आदमी को पागल बनाकर रख देती हैं। पहली, बेसब्री। दूसरी दूसरों से मन ही मन ठाना गया कम्पटीशन। बाद में एक तीसरी ताकत भी आकर जुड़ जाती है। वह दूसरों को पीछे छोड़ने का धमंड होता है जो आदमी के भीतर खोखला करता चलता है।"[7] यहाँ शफ्फाका के माध्यम से अपने बच्चों के दुर्व्यवहार के कारण चिंतित एक माँ का चित्रण हम देख सकते हैं। मानसिक वेदना, आकुलताओं के साथ उचित पथ दिखानेवाली माँ को भी यहाँ चित्रित किया है।

प्रस्तुत उपन्यास में नारी-संकल्प नामक एक नारी संगठन के बारे में वर्णन किया है। नायिका शकेबा भी संगठन में शामिल है। नारी-संकल्प का मकसद समाज में औरतों का सम्मान, संपत्ति और समता प्राप्त करने के लिए मार्गदर्शन करना, सपोर्ट और सहायता करना है। एक दिन संगठन की महिला कार्यकर्त्ता अन्य महिलाओं को अपनी समस्याएँ प्रस्तुत करने का अवसर देती हैं। स्त्रियों ने अपनी समस्याओं को प्रस्तुत किया। मधुबाला चौधरी नामक एक महिला ने माइक के पास आकर स्वयं परिचय देकर कहा-"धर्म-आधारित सामाजिक ढांचा नारी को पुरुष के

वर्चस्व में जीने के लिए अनुकूलित कर दिया गया है। वह अपने होने की संवेदना से अभी तक परिचित नहीं हो पाई। उसको अभी तक अपने 'स्व' से साक्षात्कार ही नहीं करने दिया गया है। नारी मुक्तिके आंदोलन का आरंभ करने से पूर्व नारी को इस बात का अनुभव कराना होगा। उसकी अस्मिता से उसको परिचित कराना होगा।"[8] उसने नारी के भीतर अस्मिता जाग्रत करने का महत्व पर ऐसा कहा कि "नारी की अस्मिता का शत्रु तो नारी के भीतर ही उसके संस्कारों में प्रच्छन्न रूप में विद्यमान है। वह व्रत-उपवास और पूजा-पाठ पति के लिए या पुत्रों के लिए करती है। यह उसकी संस्कारबद्धता है। स्वर्ग हो या जन्नत, नारी के लिए उसमें प्रवेश कर पाना तब तक ही संभव बताया गया है जब तक उसके हाथ में पति के हस्ताक्षर युक्त सहमतिपत्र होगा। पति, भाई और पुत्र के रूप में पुरुष सेवा महिमाशाली उसको दासता में सुख मानने की अनुभूति में अनुकूलित कर रहा है। पुराने युग के दासों की भाँति शारीरिक रूप से शक्तिशाली होते हुए भी दास्यभाव में आकर स्वामीभक्ति में अपने आपको अर्पित कर देने वाले आनंद और सुख का अभ्यास नारी को करारा दिया गया है। इस दास्यभाव को उतार फेंकने से ही नारी के भीतर अस्मिता जाग्रत हो सकती है।"[9] इस पात्र के माध्यम से शोषित नारियों के लिए प्रेरणा एवं प्रोत्साहन देनी नारी का चित्रण हमें मिलता हैं।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत उपन्यास में उपन्यासकार यह बताना चाहता है कि सामाजिक रीति रिवाज़, परंपरा, प्रथा, मान्यता, झूठी प्रतिष्ठा के बल पर नारी को बांध रखा है। उपन्यासकार ने नारी की इसी दयनीय दशा के साथ-साथ प्रेरणादायक पात्रों के ज़रिए समाज के लोगों को यही समझाना चाहता है कि नारी को भी समाज में मान-सम्मान मिलता है। साथ ही साथ समाज में स्त्रियों की बुरी स्थिति में बदलाव लाने का प्रयास किया गया है। शकेबा उपन्यास के माध्यम से पाठकों के मन में नारी पर होनेवाले अत्याचारों के विरुद्ध आवाज़ उठाने की प्रेरणा गिलती हैं। निसंदेह यह कह सकते हैं कि हरपाल सिंह अरुष की शकेबा उपन्यास पाठकों के लिए प्रेरणादायक एवं समाज के लिए उपयोगी सिद्ध है।

संदर्भ ग्रंथसूची

1. डॉ.शशिभूषण सिंहल, हिन्दी उपन्यास की प्रवृत्तियाँ, पृ सं-14, प्रेम प्रकाशन मंदिर, 2006
2. डॉ.नाशित कुमार, समाजवादी हिन्दी उपन्यासों में चरित्रांकन, पृसं-89, जवाहर पुस्तकालय, 2003
3. शकेबा, हरपाल सिंह अरुष, पृ सं-21, स्वराज प्रकाशन, 2015
4. शकेबा, हरपाल सिंह अरुष, पृ सं-61, स्वराज प्रकाशन, 2015
5. शकेबा, हरपाल सिंह अरुष, पृ सं-61, स्वराज प्रकाशन, 2015
6. शकेबा, हरपाल सिंह अरुष, पृ सं-76, स्वराज प्रकाशन, 2015
7. शकेबा, हरपाल सिंह अरुष, पृ सं-124, स्वराज प्रकाशन, 2015
8. शकेबा, हरपाल सिंह अरुष, पृ सं-135, स्वराज प्रकाशन, 2015
9. शकेबा, हरपाल सिंह अरुष, पृ सं, स्वराज प्रकाशन, 2015

मार्ग दर्शक -

डॉ.राजेष कुमार.आर
असिस्टेंट प्रोफेसर
एम.जी.कॉलेज, तिरुवनंतपुरम।

सजिता.एस.आर
शोध छात्र, महात्मागाँधी कॉलेज
तिरुवनंतपुरम।

समकालीन कविता में घरेलू औरत की जिन्दगी

डॉ.सुजित एन तंपी

आलेख का सार

भारतीय समाज पुरुष सत्तात्मक है। इसलिए यहाँ धरेलु औरत की ज़िन्दगी दयनीय स्थिति में है। इन्हें उचित सम्मान मिलना बहुत आवश्यक है। इन्हें दासता, बंधन, कर्तव्य के अतिरिक्त कुछ नहीं दिया गया।यदि समाज इनके प्रति उदासीन रहता है तो इसका मतलब है आधी आबादी की शक्तिको खत्म करना, उसके भीतर की छिपी संभावनाओं को पनपने न देना। समाज की उन्नति में इनका अहम योगदान है। स्त्री और पुरुष समाज के दो महत्वपूर्ण घटक हैं। एक को कमज़ोर बनाकर समाज को पंगु बनना अनुचित है।

बीजशब्द -पुरुषसत्तात्मक समाज, घरेलु औरत, अमानवीय व्यवहार, सशक्तीकरण, मानवाधिकार

विषय प्रवेश- भारतीय समाज में नारी का जीवन मोमबत्ती जैसा है। वह स्वयं जल कर खुद का जीवन बर्बाद कर औरों के लिए जी रही है। 'अबला जीवन' को सशक्तीकृत करके 'सबला' बनाने की 'कोशिश' लगातार स्वतंत्र भारत में होती ही रहती है। संसार में स्वतंत्रता हरेक प्राणी का जन्मसिद्ध अधिकार है। लेकिन अधिकतर अनगिनत अदृश्य सत्ताओं के जालों के अंदर दम घुटता हुआ परेशान हो रहा है। हमारे यहाँ घरेलू औरत को घर तो खुली जेल जैसा है। इस स्थिति में परिवर्तन आना ज़रूरी है। समकालीन कविता का स्वर यही माँग कर रहा है।

घरेलू औरत की ज़िन्दगी

घर में नारी को केवल निस्वार्थ सेविका के रूप में देखा जाता है। सुबह के क्रियाकलापों को स्पष्ट करने वाली पंक्तियों को देखिए:-

"सवेरे - सवेरे / उसने साफ किये/ घर-भर के जूठे बर्तन/ झाड़ू-पोंछे के बाद / बेटियों को सँवारकर / स्कूल रवाना किया /सबके लिए बनाई चाय।" (स्त्री की तीर्थयात्रा) दोपहर में अचानक एक अतिथि घर में आता है ।तब उसकी कुशलतापूर्वक व्यवहार का परिचय व्यक्तकरते हुये कवि लिखते हैं -"दोपहर भोजन के आखिरी दौर में / आ गये एक मेहमान / दाल में पानी मिलाकर / किया उसने अतिथि सत्कार / और खुश बैठी चटनी के साथ / बची हुई रोटी लेकर। (स्त्री की तीर्थयात्रा)

व्यस्त 'सेविका जीवन' में ज़रा सा आराम करना केवल सपना मात्र रह जाता है। परिवार को खुश रखने के लिए हर वक्त क्षमता से अधिक काम करना पड़ता है। उसके कामों की सूची कम नहीं दिखती। नारी की तमाम शक्तिघर-गृहस्थी में ही खत्म हो जाती है। उसकी परिस्थितियाँ ही ऐसी हैं। कर्तव्यों का भार ढोते-ढोते उसका जीवन नीरस बन चुका है। वह कोल्हू के बैल की तरह काम में लगी हुई है। इस स्थिति को कवि व्यक्त करते हैं -

"क्षण-भर चाहती थी वह आराम / कि आ गईं बेटियाँ स्कूल से मुरझाई हुई / उनके टंट-घंट में जुटी/ फिर जुटी शाम की रसोई में" (स्त्री की तीर्थयात्रा)

सबके लिए समर्पित स्त्री की हालत यह है कि उसे खाना भी सबके बाद नज़ीब होता है और वह भी अपनी पसंद का नहीं, पति की पसंद का! उसकी पसंद कोई मायने नहीं रखती। इन पंक्तियों में इस तथ्य को स्पष्ट कर कवि कहता है :- "रात में सबके बाद खाने बैठी/ अबकी रोटी के साथ भी सब्जी भी / जिसे पति ने अपनी पसंद से खरीदा था।(वही.पृ.58)

दर्दभरा जीवन

अपनी इस जिंदगी से वह खुश नहीं दिखती। वह इसे जी नहीं रही है बल्कि ढो रही है। शादी से पहले वह खुश थी अब उसकी जिंदगी खुशहाल नहीं है। तब उन्हें बाबा की याद आती है। तब उसे रोने को रोक नहीं सकती। उसकी इस स्थिति को कवि बहुत ही खूबसूरत ढंग से प्रस्तुत करते हैं - "बिस्तर पर गिरने के पहले/वह अकेले में थोडी देर रोई/ अपने स्वर्गीय बाबा की याद में"(वही पृ 58)

अमान्य व्यवहार का अनुभव - घरेलु औरत को घर की बैठक में भी स्थान नहीं मिल पाता। उसका कोई अस्तित्व नहीं है। वह सम्मान से वंचित है। पुरुष स्त्री के साथ कितना अमानवीय व्यवहार करता है। वह कहीं भी चैन से नहीं रह पाती।पुरुष उसे डाँटना, फटकारना अपना अधिकार समझता है। औरत के प्रति पुरुष का संवेदनहीन, भावहीन अनैतिक दृष्टिकोण इन पंक्तियों में कवि व्यक्त करता है -

"अक्सर जब बैठक से उसे/ तखलिया कर दिया जाता है/ सरकस के प्रशिक्षित जानवर की तरह/ चुपचाप आकर, रसोई में बैठ जाती है तिपाई पर/ खाँटी घरेलु औरत/तन और मन की थकान के साथ/ लग जाती है उसकी आँख/ कि उसका मुखिया आकर/फटकारता है उसे/ अरे बैठी बैठी सो गई तुम/हद होती है सुस्ती की,/ खाना कौन परोसेगा"?

(रसोई में रखती है तिपाई पृ.52)

दमन नीति - स्त्री को घर-परिवार तक सीमित कर उसका स्तर पुरुष के मुकाबले निम्न करना पैतृक समाज द्वारा उत्तरदायित्व सौंपने के कारण ही हुआ है। घर से बाहर स्त्री का स्तर कुछ भी क्यों न हो लेकिन परिवार में आते वह दमन का शिकार होने लगती है। स्त्री के जीवन में आर्थिक स्थिति में बदलाव आ जाने से सामाजिक संरचना, सामाजिक सोच में बदलाव नहीं आ जाता। आर्थिक बदलाव आने से समाज में स्त्री का शोषण नहीं रुक सकता। यही वजह है कि पुरुष की बातों का समर्थन करती, दोहरी भूमिका निभाती स्त्री फिर से घरेलू स्त्री बनती दिखाई देती है ; जैसे

"उसने अपना आप बाँटकर, ढो कर डाला
दफ्तर में वह नीति नियामक, कुशल प्रशासक,
घर में उसकी वही भूमिका, सदियों से जो रहती आई
समझ गयी वह असली विजय यहाँ पानी है ,
बाकी दुनिया बेमानी है ।" (वही.पृ.61)

घरेलू औरत को कामयाब होते देखने के बाद भी पुरुष अपने को श्रेष्ठ मानने से पीछे नहीं हटता। व्यवहार कुशल होने पर भी कभी भी पुरुष औरत को कृतज्ञता नहीं अदा करता है। पुरुषों के कृतघ्न व्यवहार को स्पष्ट करते हुए कवि लिखती हैं

उसने अपनी सारी प्रतिभा आलू-परवल में झोंक दी/और सारी रचनात्मकता रायते में घोल दी /उसने स्वाद और सुगंध का संवत्सर रच दिया/ लेकिन पुरुष ने कभी नहीं कहो 'शुक्रिया'। (वही.पृ.61)

घरेलू कामों में व्यस्त होने की वजह से इनके पास आज पढाई-लिखाई का वक्त ही नहीं है। इन्होंने जो पढाई-लिखाई की भी है उसका भी अब कोई काम नहीं है -

"इनके इन्टर, हाई स्कूल के प्रमाण पत्र
गर्म कपडों के ट्रंक में पडे हैं, दूरबीन से ।
छठे-छमाहे जब लिखनी होती है घर चिट्ठी,
ये बेटे की कलम और काँपी से
चला लेती हैं काम ।
इनके लिए मौके का मतलब है आराम
ससुराल का काम। (वही.पृ.44)

सपना रहित जड़ जीवन - सच में विवाह के बाद नारी का दूसरा जन्म सा होता है। विवाह से पूर्व उसका सभी कुछ खत्म हो जाता है। ससुराल में भिन्न परिवेश के साथ सामंजस्य

बिठाते हुए, वहाँ के इच्छानुसार कार्य करना पडता है। पति द्वारा प्रताड़ित, उपेक्षित, घरेलू स्त्री अपना जीवन खत्म होते देख कर अपने अंदर की पीडा को व्यक्त करते हुए 'अब तेरा कुछ भी नहीं' कविता में कहती है :-

"अब तेरा कुछ भी नहीं, कुछ भी नहीं होना है
एक जडता भरी निद्रा में तुझे सोना है ।
तेरा साथी तेरा हमदम तेरा कुल जीवन धन
जो तुझे कहता था जान मेरी ओ गुलबदन,
अब तेरी जान का दुश्मन बना वह जालिम बन
लाख तू नाज़ करे, डिगरी लिखे नाम के साथ
या कि घर खर्च में तू शौहर का बाँटाये हाथ
तेरी यह पाँच फुटी देह तेरी है दुश्मन
फैसला हर बात का बिस्तर पे ही तो होना है ।
अब तेरा कुछ नहीं कुछ भी नहीं होना है ।" (वही.पृ.91)

इस स्थिति में घरेलू औरत की आँखें सपना रहित हो चुकी हैं। किंतु शादी से पहले उसकी आँखों में खूब सपने थे। अब तो इन आँखों की यह हालत है- "सपने देखने वाली आँख /अब अंधी हो गई /हमें एक संग्रहालय खोलना चाहिए /सन् अमुक से अमुक तक/सपनीली आँखें / ऐसी हुआ करती थी।" (नागवार मौसम है पृ.37)

उपसंहार - भरतीय समाज व्यवस्था में औरत घर-गृहस्थी में समर्पित जीवन बिताती है। पारिवारिक मूल्य तथा उसके अनुशासन स्त्रियों के लिए दमनकारी दिखाई देते हैं। वह स्त्री को गुलाम बनाते हैं, उन्हें उत्पीडित करते हैं। इन मूल्यों का पालन करते-करते वह टूट जाती है। इस गृहस्थ जीवन में वह इतना व्यस्त हो जाती है कि अपने लिए कभी भी अवकाश का नहीं सोच पाती, नही मनोरंजन के लिए वक्त निकाल पाती है। अतः घरेलू औरत का वैवाहिक जीवन सुखी नहीं दिखाई देता। स्त्री की परिस्थितियाँ ही ऐसी हैं कि उसे कुछ बनने नहीं देतीं। इसके परिणामस्वरूप समझौते करती, दुविधापूर्ण स्थिति को भोगती, तनाव से भरी स्त्री के दांपत्य जीवन में ऐसा होना स्वाभाविक है। औरत को इस स्थिति से मुक्ति मिलना ज़रूरी है। उनके मानवाधिकारों को सुरक्षित रखना चाहिए। जनतंत्रात्मक स्वतंत्र भारत का निर्माण तभी सार्थक एवं पूर्ण हो जाएगा।

संदर्भ

1. ममता कालिया-खाँटी घरेलू औरत-राजपाल एण्ड संज़, दिल्ली, प्र.सं.1998.
2. विश्वनाथप्रसाद तिवारी -फिर भी कुछ बचा रहेगा - राधाकृष्ण प्राकाशन,नई दिल्ली,प्र.सं.2008.
3. डॉ.सुधेश- समकालीन हिंदी कविता का स्वरूप-सरला प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.2016.
4. लक्ष्मण दत्त गौतम- समकालीन साहित्य एक उत्तर पाठ- स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.2008.
5. धनंजय वर्मा आधुनिक कवि विमर्श-भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्र.सं.2015.

असिस्टेंट प्रोफेसर,
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग
व शोध केंद्र, यूनिवर्सिटी कालेज,
तिरुवनंतपुरम,
मोब : 6238657722

मुक्तिबोध की कविता ज़िंदगी का रास्ता एक विश्लेषण

डॉ.जस्टी इम्मानुएल

आधुनिक हिन्दी साहित्य में सर्वाधिक प्रतिष्ठित बहुमुखी प्रतिभा संपन्न एवं गरिमा मंडित साहित्यकार मुक्तिबोध नयी कविता की प्रगतिशील धारा के प्रतिनिधि कवि हैं और हिन्दी साहित्य में समकालीन कविता की बुनियाद डालने में मुक्तिबोध का योगदान काफी महत्वपूर्ण भी है। उनकी कविताएँ नयी कविता की प्रवृत्तियों से युक्त होने के साथ समकालीन कविता की विशेषताओं से परिपूरित हैं। यद्यपि आलोचना, कहानी, उपन्यास, डायरी आदि सभी विधाओं ने मुक्तिबोध की लेखनी का संस्पर्श पाया है, तथापि मुक्तिबोध का कवि रूप सर्वाधिक शक्त रूप में उभरा है। 'तारसप्तक' के अतिरिक्त 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' और 'भूरी भूरी खाक धूल' संकलनें तथा इन सबको मिलाकर तीन सौ की करीब कविताएँ 'मुक्तिबोध' रचनावली में प्रकाशित हो चुकी हैं।

समसामयिक पूँजीवादी व्यवस्था का विरोध तथा उस व्यवस्था के विरुद्ध कुछ करने की संकल्पना का स्वप्न उनकी तमाम कविताओं में मौजूद हैं। अपने समय में पूरे दिल और दिमाग के साथ और पूरी मनुष्यता के साथ रहने के कारण युगीन यथार्थ को वे पूरी तरह महसूस कर सके। उनकी कविताएँ उस यथार्थ का भी प्रतिफलन हैं। उनके काव्य में प्रकट पूँजीपति वर्ग, सुविधाजीवी मध्यवर्ग, उल्लू का पट्ठा, उत्पीडित निम्नवर्ग आदि आज हमारी नज़र में विद्यमान हैं हर दिन-प्रतिदिन हम उनके संपर्क में आते हैं, वार्तालाप करते हैं उनके खिलाफ लड़ते हैं शायद हम भी उनमें से एक हैं। कभी ये कविताएँ हमारे ह्रासशील जिंदगी की कमियों को समझने में सहायक हैं और व्यक्तित्वांतरण करने के लिए हमें प्रेरणा भी देती हैं।

'जिंदगी का रास्ता', 'भूरी भूरी खाक धूल में संकलित एक आत्मकथात्मक कविता है। इस कविता का नायक रामू कवि का निजी प्रतिरूप है जो पूँजीवादी व्यवस्था के विरोधी भी है। ज़िन्दगी भर में जीने की प्रेरणा मिलने पर भी रामू अपने काम और जीवन कर्तव्य पूरा करने में असमर्थ महसूस करते हैं। काम पर से घर लौटते समय रामू की वेदनाकुल आत्मा, अनंत शक्तिशाली व्यक्तित्व का रूप धारण कर भारतीय अंधेरी गली से आकस्मात घूमने लगी। रास्ते पर चलते हुए वे पूँजीवादी ह्रास के इस भयानक काल में समाज के भिन्न भिन्न स्तरों में जिंदगी बिताने के लिए अभिशप्त मानव पर विचार करने लगे। वे पूरी तरह समझते है कि इस पूँजीवादी व्यवस्था में भारतीय संस्कृति की गरिमा टूट गई है।

इस व्यवस्था में भारतीय राजनीतिक क्षेत्र सबसे अधिक बिगड गया है। पूँजीवादी व्यवस्था का बीज भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले भी बोया था लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद की परिस्थितियाँ इस ह्नासशील व्यवस्था के पल्लवन के लिए अनुकूल थीं। स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले भारतीय राजनीति में जो आदर्श था, हमारे राजनीतिक नेतागण उसके संरक्षक थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ये आदर्श को छोडकर अपने ही स्वार्थों में लगे रहने लगे। कवि के शब्दों में,

"हाथ जोड़े रहते हैं बड़े बड़े बुद्धिमान /बड़े बड़े पैगम्बर/ रावण के घर पहरा देते है/ बड़े बड़े नेतागण, बडे बडे ईश्वर?"(1)

आज की व्यवस्था में राजनीतिक नेता गण बिलकुल अनैतिक, अधार्मिक मूल्यों के प्रहरी हैं ।ये बड़े बुद्धिमान लोग गलतियों को समझते हैं लेकिन विरोध करने के बावजूद हाथ जोड़कर उन कुकर्मी रावणों के संरक्षक बनते हैं।

कवि इस कविता में पूँजीवादी सभ्यता के अंतर्गत समाज के व्यक्तियों में हुए परिवर्तन पर प्रकाश डालते हैं। इस सभ्यता में मानव ने अपनी मानवता त्याग दी है। व्यक्ति और व्यक्तित्त्व अनैतिक, अस्वाभाविक, अनुचित, निर्धारित मूल्यों से चमकते हैं। कुछ व्यक्तिजो अच्छे हैं लेकिन इस सभ्यता के अंतर्गत उनकी शक्तियाँ गहरे न्यस्त स्वार्थों से अनुशासित होती हैं। पुराने ज़माने में शोषक रावण दस मुखी है तो आज शोषण की तीव्रता इतनी बढ़ गयी कि रावण सहस्रमुखी हो गया है। ऐसे परिवेश में भी कवि को थोड़ा आश्वास है क्योंकि निम्न वर्ग जो दुनिया के संगररत पुत्र है

जो आर्थिक अभाव से सूखे शरीरवाला होने पर भी उनके चेहरे पर उन शोषकों के खिलाफ विद्रोह करने का दृढ निश्चय है। ये अपने हाथों से छूटी हुई आग से शोषण व्यवस्था को भंग करते है। लेकिन खेद की बात यह है कि ऐसी संघर्षरत स्थितियों में मध्यवर्ग अपने अवसरवाद को छोड़ नहीं देते। निम्नवर्गयों के संघर्षों का दृश्य देखकर,

'भयभीत मध्यवर्ग भागकर /प्राणों की भिक्षा माँग / खडा हुआ रावण के आँगन में दीन सा'(2)

मुक्तिबोध ने अपनी लगभग कविताओं में मध्यवर्गियों को विशेषतः मध्यवर्गीय बुद्धिजीवियों को अपना काव्य-विषय बनाया है। उनका विचार है कि मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी जो क्षमता से संपन्न है बुद्धिजीवि होने के कारण समाज की गलतियों को समझाने की क्षमता उनमें है और ये लोग सर्वहारा के साथ जोडकर इसके खिलाफ लड़ने पर पूँजीवादी सत्ता का अंत निश्चय है। लेकिन बुद्धिजीवियों की स्वार्थता इसलिए बाधक है। मुक्तिबोध बुद्धिजीवियों को मध्यवर्गीय अवसादी केंकडे बुलाकर उनके अवसरवादी मनोवृत्ति पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं,

'दुनिया के उदरमभरी मध्यवर्ग थर्राकर/रोटी की तलाश में /बेचता है आत्मा को / वेश्या के देह सा व्यभिचार के लिए'(3)

मध्यवर्गीय बुद्धिजीवियों की स्वार्थपरता और अवसरवादिता आज भी जारी है। उन्हें अपना आदर्श खोकर क्षणिक सुख के पीछे भागने की प्रेरणा है। ये अपनी स्वार्थपूर्ती के लिए पूँजीपति रावणों से औचित्य संगति समंजस्य चाहते हैं। पूँजीवादी व्यवस्था में,

'यशलोलुप व्यक्ति की तेजोमयी सत्ता /आधुनिक आदमखोर रावण के घर पर /भिश्तीगिरी करती है'(4)

सत्ताधारी पूँजीपतियों के घर पर भिश्तीगिरी करनेवालों में साहित्यकार भी शामिल है। कवि इन साहित्यकारों को 'पूँजीवादी उल्लू का साहित्यिक पट्टा' का संबोधन देते हुए कहते हैं कि ये साहित्यिक गण अपने अहं गर्भ वासना से अनैतिक भावों को उभारते हुए आदर्श बधारते हैं।

पूँजीवादी सभ्यता में पारिवारिक संबन्धों में हुए विघटन पर भी मुक्तिबोध विचार करते हैं। इस पूँजीवादी व्यवस्था में,

'अनिष्टकारी शक्तियों से परिवार भग्न है/स्नेह का पारावार सुखकर / अंतर का पंजर /(अधिक से अधिक किंतु भूखा हो प्यार का) / नज में का पाताली रेगिस्तान / प्रदर्शित करता है प्रतिपल'(5)

पूँजीवादी अनिष्टकारी शक्तियों के प्रभाव से परिवार में स्नेह का पारावार सूखकर पाताली रेगिस्तान हो गया है।

पूँजीवादी सभ्यता में हुए नैतिक विघटन पर विचार करते हुए कवि ने परंपरा के सही जड़ों को पहचानने का प्रयास भी किया है। भारतीय विरासत के अनुसार नारी सम्मान और आदर का पात्र है लेकिन आज की इस पूँजीवादी व्यवस्था में नारी शोषण का सबसे बड़ा शिकार है और उसकी जिंदगी आज भयानक खतरे में पड़ गयी है। इस कविता में नारियों पर हुए अत्याचारों का खतरनाक चित्र हम देख सकते है,

पूँजीवादी/'घुग्घु का स्वर सुन /नारी का मन पीले पत्ते सा काँपता, /रोगग्रस्त बालक की साँस टूट जाती है /रोती है घाड़ मार /आँसू- भरी छाती नयी बहू की।'(6)

कभी कभी नारी स्वयं अपने वर्ग का विनाशकारिणी रूप धारण करती है, "स्वयं पिशाचिनी का प्रचण्ड रूप ले/ विद्रोहिणी विधवा निज बहू की पीटी गयी/पीठ पर बैठकर /जबर्दस्त हाथ में" (7)

इस प्रकार पूँजीवादी व्यवस्था में नारी स्वयं अपना विवेक खो देती है। पूँजीवादी समाज की विज्ञानोन्नति पर भी कवि ने विचार किया है,

'पूँजीवादी गाड़ी के वेगवान/ लोहे के पहियों ने / मानव का पेट चीर / विज्ञानोन्नति की'(8)

पूँजीवादी सरकार ने विज्ञानोन्नति को लक्ष्य बनाकर अपने निजी यश फैलने के प्रयास में मानवता को पूर्णतः इनकार किया है। वैज्ञानिक उन्नति के प्रयास में मानवता का त्याग आज ज्यादा प्रासंगिक है।

वर्तमान व्यवस्था से घृणा भाव तथा उसके खिलाफ लड़ने की अभिलाषा मुक्तिबोध की इस कविता का प्राण है। एक ओर पूँजीवादी शक्तियाँ जनसाधारण को दमन की फासिस्ट भट्टी में झोंककर उनकी अस्थियों से आराम का फर्नीचर बनाने का चित्रण है तो दूसरी ओर सर्वहारा शक्तियां

शोषकों की दर्पोन्नत सभ्यता के नगरों को अस्त-व्यस्त, छिन्न भिन्न करने का चित्रण है। रास्ते से चलने वाले रामू के मन में व्यवस्था की अमानवीयता के भयानक चित्र के साथ उसका विरोध के लिए सघठन की संकल्पना बार-बार आती जाती है और आगे वे सोचते है,

'राजनीति, साहित्य और कला के प्रतिष्ठित महासूर्य/ बड़े बड़े मसीहा /सरकस के जोकर से रिझाते है निरंतर/ नाचते है कूदते है/शोषण में सिद्धहस्त स्वामियों के सामने'(9)

वे ऐसे सोचते हैं कि आज के समाज में दूषित उपलब्धि तक पहुँचने के लिए रास्ते टेढे मेढे हैं। राजनीतिक नेताएँ पदोन्नति के पीछे भागने वाले हैं तो साहित्यकार और कलाकार सांस्कृतिक मूल्यों को अनदेखा करके पुरस्कारों की संख्या बढ़ाने में तथा पैसा कमाने में कर्मनिरत है। मुक्तिबोध गहरे संघर्ष के कवि है। पूँजीवादी अमानवीय व्यवस्था के अंतर्गत वे बिलकुल तनाव और आत्मसंघर्ष में गुजरते हैं और वे सोचते हैं-

'गया व्यर्थ सारा दिन/मेहनती गरीब में किसी रोगग्रस्त/ क्षीणकाय किंतु भोले प्यारे शिशु सा/यह मृतप्राय दिन गया बीत'(10)

लेकिन इतिहास के गहरे ज्ञान रखनेवाले कवि आज महसूस करते है कि

'जन जन के उरो में आज/संघर्ष का साहस का सुनहला गान है/जन जन के हृदय में आज नया सूरज उगा है/कि जिसके सस्पर्श में/खिले है धरती के ज्वालाओं के नभचुंबी शतदल/चमकते है गंभीर युगांतकारी/शक्तियों के अंगारी सितारे/मानवीय संघर्ष के सहारे'(11)

जनसाधारण, पूँजीवादी सत्ता के खिलाफ संघर्ष को सहारा लेते हैं। इस कविता के अंत में इस अमानवीय व्यवस्था की सत्ता समाप्त हो रही है और दुनिया के संघर्षरत पुत्रों के हाथों से पृथ्वी का भाग्य चक्र चलता हुआ दिखाई पड़ता है। अंत में रामू स्वयं महसूस करते हैं कि,

'जिंदगी का रास्ता/पूँजीवादी दानवों और मध्यवर्गी नपुंसक मानवों/की बचना नगरी से छिटककर/टूटे फूटे घरोंवाली सील-खायी।/गलियों के अंधेरे में/रहनेवाले आगामी युगों के सष्टाओं /के चौराहों पर मिलता है। (12)

केवल वस्तुगत स्तर पर ही नहीं शिल्पगत स्तर पर भी इस कविता की सफलता विशेष उल्लेखनीय है। मुक्तिबोध की अन्य श्रेष्ठ कविताओं की तरह इस कविता का बनावट भी बिंबों - प्रतीकों और मिथकों से समन्वित फैंटेसी पर आधारित है। वे पूँजीवादी अमानवीय व्यवस्था के शोषण को सहस्र मुंह रावण की फैंटेसी द्वारा पेश करते है। पूँजीवादी अमानुषिक व्यवस्था में शोषक-शोषितों की ज़िंदगी को सर्वाधिक सशक्त ढंग से पेश करने के लिए उन्होंने हिन्दी भाषा के साथ उर्दू, फारसी, अरबी अंग्रेजी और संस्कृत भाषाओं की शब्दावलियों का प्रयोग किया है, जो इस कविता की सर्जनात्मक उर्जा को बढ़ाने में सहायक है। इस कविता में कवि ने व्यवस्था की अमानवीयता को भयानक रंगों से आभूषित भी किया है।

संक्षेप में हम यह सकते हैं कि मुक्तिबोध की यह कविता अपने युग का तथा युग के आगे का भी सही दस्तावेज है। इस कविता में चित्रित व्यवस्था तथा आदमी समसामयिक होते हुए भी समकालीन भी है। मुक्तिबोध आज हमारे बीच नहीं है। लेकिन अपनी कविताओं की प्रासंगिकता के कारण हर साहित्यिक प्रेमियों के मन में ये आज भी जीवित हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

1. भूरी भूरी खाक धूल, मुक्तिबोध, पू. 179
2. यही पू. 182
3. वही. पू. 179
4. चही पू. 179
5. वही, पू. 182
6., पृ. 179
7. पृ. 184
8. वही, पृ. 183
9. वही, पृ. 187
10. वही, पृ. 191
11. वही, पृ. 191
12. वही, पृ. 194-195

डॉ जस्टी इम्मानुएल, सह आचार्या
अलफोंसा कॉलेज पाला, केरल

कविता

अतिक्रमण

डॉ.के.एम.मालती

मानव का चिर संबन्ध
प्रकृति से
नाभीनाल का।
प्राणवायु, निर्मल जल,
वनस्पतियाँ, औषधियाँ,
अन्न, वस्त्र, आवास,
हीरे, मोती, जवाहरात,
खनिज सारे के सारे,
माँ प्रकृति का ही वरदान ।

किस्म-किस्म के बीज
अनगिनत
उग निकलते
धरती की कोख से।

जी खोलकर बाँट रही वह
सुनहली किरणों की लड़ियाँ,
स्वच्छ चाँदनी की धवल धार,
वर्षा की रिमझिम फुहार ।
अतिक्रमण
सघन वनों की जैव संपदा,
उर्वर घाटी की हरियाली,
कलकल करते झरनों का थिरकन,
अमृतवाहिनी, प्राणदायिनी नदियों का संगीत,
सागर की उच्छलती लहरों की झंकार,
फड़कती इठलाती इन्द्रधनुषी मछलियाँ,
रंग बिरंगे पशु पक्षियों की छटा मनोरम,
टीले, पहाड चट्टानों के नज़ारे अनुपम,
निसर्ग की है यह रंगीन बुनावट।

किन्तु
उसे तोड़मरोड़
बलात्कार पर
उतर आया मानव
दानव बन ।
लालची मानव करता आया
प्रकृति का दोहन
अंधाधुंध ।
सीमाएँ तोड़ी जाती हैं,
मर्यादाएँ टूट जाती हैं,
प्राकृतिक संपदा -
लूटने की होड़ में।
प्रतिशोध ज्वाला में जब-
जल उठती है प्रकृति,
प्रलयताण्डव से,
भूकम्प - लावा से,
तूफ़ान - त्सुनामी से,
तबाही मच जाती है।
लाचार खड़े
मानव का अहं
हो जाता है विलीन
एक चीख में ।

सौपर्णिका,
काक्कंचेरी,
(पी.ओ.) कालिकट यूनिवर्सिटी,
पिन - 673635
मोबाईल - 9496283166

मलयालम उपन्यास 'इरुमुटिक्केट्ट' का अनुवाद

दूनी गाँठ की गठरी

मूल : के.एल.पॉल

अनुवादः प्रो. डी. तंकप्पन नायर व अधिवक्ता मधु. बी.

सोपान

सोलहवाँ

मेरी बात सोचकर कोई दुःख न करे। यह ठीक है कि माला धारण की, काला वस्त्र पहना, व्रत लिया... अब पहाड़ पर चढ़ने की स्थिति में नहीं है।

इस प्रकार पहाड़ चढने को असमर्थ हो जानेवाला पहला अय्यप्पन तो नहीं हूँ मैं। दूनी गाँठ की गठरी को सिर पर रखने के पहले मैं ने जो चाहा उसे अय्यप्पा स्वामी ने पूरा किया है.... अब मैं सीधे खड़ा होने की हालत में नहीं हूँ। ऐसा मैं कैसे पहाड़ पर चढूँ?...

तुम लोग कहते हो कि डोली पर जा सकते हैं। मैं इस से सहमत नहीं हूँ। कल एक जमाने में डोली की जगह हेलिकोप्टर आदि के आने की संभावना है। इस प्रकार बड़ी आसानी से पहाड पर उडान से उतरकर वंदन करने से क्या लाभ है? कौन नहीं जानता कि पहाड़ पर चढ़ना एक प्रतीक है। गुरुस्वामी को कई बार पहाड़ पर चढ़नेवाले आदमी हैं न? ... स्थूल पर चढ़ने की अपेक्षा ज्यादा महत्वपूर्ण सूक्ष्म पहाड़ पर चढने का है। यह बात सिखानेवाले गुरुस्वामी को इतना भावुक नहीं होना चाहिए। कहिए गुरुस्वामी जी हमें अपने भीतर के पहाड़ों को अधीन में लाना है। ... गुरुस्वामी नहीं... मेरे मित्र....." सच्चिदानंद ने गुरुस्वामी के सजल नेत्रों को देखते हुए कहा।

"फिर भी" गुरुस्वामी के शब्दों की घबराहट से दूसरों की आँखों को भी आर्द्र बनाया। सच्चिदानंद की खाट के समीप बैठी लीला सरस्वती और कल्याणी ने गुरुस्वामी के शब्दों के लिए कान दिये।

"बहुत ही चाही एक यात्रा... उसके लिए मन और शरीर से तैयारी... छः साल पहले की यात्रा और इस परिवार की हानि और उसके बाद हुई घटनायें और हम से मिले विशिष्ट व्यक्ति... प्रांची... कॉवरिया स्वामी.... सच्चि से मिले हिमालय के योगी... रास्ता और रास्ते का मोड.... गुरुकृपा एवं आशीर्वाद... जहाँ पर नंदु का नष्ट हुआ वहीं से नंदु को पुनःप्राप्त करके पहाड से उतरना... ये सारी बातें एक सपना हो सकती हैं... लेकिन लगता है कि मानों कहीं से एक आश्वासन मिला है कि सबकुछ सत्य है।

पंद्रह या सोलह साल की उम्र से शुरू हुई मैत्री है सच्चि से.... एक ही माँ की कोख से जन्म नहीं लिया हो। फिर भी सदा ही मेरा सहजात। "बहुत चाहा था पहाड़ पर मिलकर चढ़ना... लेकिन में गुरुस्वामी हूँ। कितनी ही बार पहाड से उतरा हूँ, विरक्त हूँ। पहाड पर चढ़ने का तत्त्व जाननेवाला हूँ। फिर भी...." गुरुस्वामी अपने शब्दों को पूरा न कर पाये।

मानों कोई स्वप्नदर्शन मिला हो, सच्चिदानंद ने उँ ची आवाज में कहा : "सारे अनुष्ठान अच्छा चलें.... गुरुस्वामी गुरु आनंद, अभिलाष, सुरेश, सजीवन, शशि, विवेक और अनीष गठरी भरकर दूनी गाँठ सिर पर रखते है। शरण पुकारते हुए वे पंडाल से निकलते हैं। मुडकर बिना दिखे वे सीधे शबरिमला को। इस बार कोविड होने के कारण एरुमेली से होकर जानेवाला परंपरागत मार्ग बंद रखा गया है। तंपानूर के.एस.आर.टी.सी बस स्टैंड से निकलते पंपा सूपर फास्ट में चढ़कर सीधे पंपा पहुँचते हैं। पंपा दावत और पितृतर्पण के पश्चात् स्वामी अय्यप्पन रोड से होकर करिमला, नीलिमला.... अप्पाच्चिमेड शबरिपीठ और फिर अठारहवाँ सोपान... सन्निधान.... भगवान का दर्शन करके मालिकाप्पुरत्तम्मा देवी का दर्शन.... फिर वावरस्वामी का दर्शन। इस बार किसी को वहाँ ठहरने की

अनुमति न होने के कारण उसी दिन पहाड से उतरना.... तुम लोगों के साथ इस बार मैं नहीं हूँ। इसकी जगह दूसरा होगा... वह मेरा नंदु होगा...."

"हम पंडाल में चलें", वहाँ जमे हुए सब को गुरुस्वामी ने निमंत्रित किया। बंधुजनों से भरे भवन एवं परिसर एकदम खाली हुए। गुरुस्वामी ने तब सोचा कि पंडाल में अब रत्ती भर जगह भी खाली नहीं है।

लीला ने सब को देखकर उनकी गिनती ली। कोन्नी से मेरी और उसकी संतानें, जोयिक्कुट्टी, सोलमन और रमेश, रविकुमार, प्रो. तंकप्पन नायर, गौरी शंकर, सरस्वती और उनकी संतानें, विदेश से आये बंधुजन, सरस्वती की माँ और छोटा भाई और उसकी पत्नी, अपनी बहनें भाई, पौत्र-पौत्रियाँ.... और लोग भी आनेवाले हैं... चाय... पकवान.... दुपहर का भोजन ठीक हिसाब लेने के बाद ही सारा प्रबंध करता है.... सच्चि चारपाई पर पडने से आशंका होती है.... अक्सर यह सबकुछ सच्चि का जिम्मा होता है....

पंडाल में हटायी गई काठ की खाट पर सच्चिदानंद पैरों को ज़रा-सा हटाते हुए, अनुष्ठानों देखने की सुविधा के साथ लेटा था। शरणमंत्र बोलते हुए गुरुस्वामी ने अनुष्ठानों को आरंभ किया। अय्यप्पास्वामी को अभिषेक करने के घी से भरे नारियल, कर्पूर, कटुत्ता स्वामी के नैवेद्य के चिउडा व लावा, चूर्ण, चढ़ावा, मनौती की चीज़ें, धान एवं अन्य पूजा- सामग्रियाँ, भगवान की सामग्रियाँ आगे की गाँठ में, भक्त की चीज़ें पीछे की गाँठ में होती है और इसी क्रम में रखी गयीं। जब हर एक की गठरी भरने लगे तो सच्चिदानंद ने कहा : "मेरे लिए भी चाहिए एक दूनी गाँठ की गठरी"। गठरी भरके पंडाल में रखना काफ़ी है। पहाड पर नहीं चढ़ने पर भी मुझे सिर पर रखना चाहिए... आज नहीं... हो सके तो.... तुम लोग शबरिमला से लौटने के बाद... पंडाल को तोडकर हटाने के पहले...."

"स्वामी शरणं..." गुरुस्वामी ने शरणमंत्र पुकारा। सबने उसको दोहराया। उन्होंने सब से पहले नारियल में घी भरकर शंभु को दिया। शंभु ने गुरुस्वामी को विधिवत् दक्षिणा अर्पित की। फिर हर एक अय्यप्पन ने शंभु का अनुकरण किया। फिर गुरुस्वामी ने सब का ध्यान दूसरे एक अनुष्ठान पर आकर्षित किया। वह अनुष्ठान प्रतिज्ञा प्रायश्चित है। यह प्रतिज्ञा कि स्वामी दर्शन के लिए माला-धारण के बाद मैं ने मनसा वाचा कर्मणा जाने या अनजाने कोई भूल-चूक की हो तो उन सबको माफ करके पहाड पर चढ़कर और आठारहवें सोपान पर चढ़के श्रीपाद-दर्शन और वंदन कर दर्शन पुण्य पाकर लौटने के बाद सत्यनिष्ठा और भक्तिसहित जीवित होकर अनुगृहीत होने के लिए मैं सर्वप्रायश्चित करता हूँ.... यह कहकर शंभु ने दूनी गाँठ की गठरी के उ पर सुपारी पान और सर्शाफियों रखकर साष्टांग प्रणाम किया। फिर कर्पूर जलाकर गुरुस्वामी की सहायता से गठरी को सिर पर रखा। एक-एक करके जब अय्यप्पन लोग सिर पर दूनी गाँठ की गठरी को सिर पर धरने लगे तब स्त्रियाँ मंगलारव मुखरित कर रही थी। सच्चिदानंद का आशीर्वाद पाने के लिए सब लोग सच्चिदानंद के पास जाकर खडे हुए....

उसके बाद शरणं पुकारते हुए अय्यप्पन लोग बाहर निकले और धीरे-धीरे चले। कुछ देर बाद चाल तेज हुई। जब तक वे ओझल नहीं हुए तब तक सब लोग सड़क की तरफ़ देखते हुए खड़े रहे। जब लीला सरस्वती और कल्याणी सच्चिदानंद के हाथों को थामकर उठाने का प्रयास किया तब सच्चिदानंद ने उनसे कहा : "मैं जरा कुछ देर यहाँ लेटूँ..." जब सब लोग आंगन की ओर घर के भीतर चले तो आंगन पर एक कुरसी डालकर एक पहरेदार की तरह कबाडिया सोलमन बैठ गया, मेरी और बेटियाँ यह कहकर सोलमन की गिलगी उडाने लगी कि देख लें एक करोडपति का बैठना। उस दिल्लगी का रसास्वादन करते हुए जब सोलमन बैठा था तब उसके भीतर 'एक कबाडिया की आत्मकथा' का एक अध्याय भी रचा गया। सब को चढ़ने को और उतरने को कुछ पहाड होते हैं। चलकर पूरा करने के लिए कुछ दूरी भी.... अपने मन में इस वाक्य को डालते हुए और अय्यप्पा स्वामी को कृतज्ञतापूर्वक स्मरण करते हुए सोलमन ने शरणं पुकाराः

"स्वामिये शरणमय्यप्पा...."

(क्रमशः)

चेतन भगत के कथा साहित्य 'फाइव पाइंट समवन' पर आधारित फिल्म थ्री इडियट्स में वर्तमान शिक्षा प्रणाली का चित्रण

डॉ.रिंकू भाटिया / डॉ.पायल भाटिया

संक्षिप्त

चेतन भगत ने 2004 में उपन्यास फाइव पॉइंट समवन प्रकाशित किया। उपन्यास का फोकस शैक्षणिक व्यवस्था पर था। इससे उनकी प्रसिद्धि में अत्यधिक वृद्धि हुई। फाइव पॉइंट समवन आईआईटी दिल्ली के तीन छात्रों के कॉलेज के दिनों के बारे में है। यह इंजीनियरिंग और विज्ञान के लिए अग्रणी भारतीय संस्थानों में से एक है। उपन्यास में बताया गया है कि अगर आप सीधे तौर पर नहीं सोचते हैं तो कैसे चीजें गड़बड़ हो सकती हैं। फाइव पॉइंट समवन कैंपस लाइफ, दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली, प्यार-नफरत के रिश्ते और जीवन के दर्शन और पहचान की तलाश की कहानी है। यह भारत के सर्वश्रेष्ठ तकनीकी संस्थानों, आईआईटी में अपने जीवन के सपनों को डिज़ाइन और परिभाषित करने वाले नए टेक्नोक्रेट्स के आंतरिक और बाहरी की व्यापक वास्तविकता का एक चित्र प्रदान करता है। इस उपन्यास ने सोसाइटी यंग अचीवर का पुरस्कार और प्रकाशक का मान्यता पुरस्कार जीता। फाइव पॉइंट समवन को 3 इडियट्स नामक फिल्म में रूपांतरित किया गया है।

(बीज शब्द: शैक्षणिक व्यवस्था, आधुनिक युवाओं की समस्याओं, माता-पिता की अपेक्षाएँ, जीवन में तुलना का चित्रण)

फाइव पॉइंट समवन का विश्लेषण:

फाइव पॉइंट समवन मुख्य रूप से हरि कुमार द्वारा सुनाया गया है, और वह और उनके चार साल के दोस्त, आलोक गुप्ता और रयान ओबेरॉय ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान में मैकेनिकल इंजीनियरिंग का अध्ययन करते हुए अपने साल बिताए हैं। IIT प्रवेश परीक्षा अविश्वसनीय रूप से प्रतिस्पर्धी है, और इन तीनों में से 326, 453, और 91 'ऑल इंडिया रैंक' भारतीय हाई स्कूल के छात्रों में से हैं। बेशक, कॉलेज एक अलग मामला है, और वे वहाँ बहुत अच्छा प्रदर्शन नहीं करते हैं। वास्तव में, वे अपने पहले सेमेस्टर में खुद को '300 छात्रों की कक्षा में उच्च 200 में 'पाते हैं, पांच-बिंदु-कुछ ग्रेड के साथ (एक पैमाने पर जहाँ दस एक पूर्ण स्कोर है) और एक बार औसत के छात्रों के रूप में पहचाने जाने वाले, उनकी स्थिति में सुधार की बहुत कम संभावना है।

तीनों काफी अलग किरदार हैं, आलोक अपने परिवार की मदद करने के लिए एक उच्च-वेतन वाली नौकरी पाने के लिए बेताब है, जिसमें उसके नाजायज पिता और उसकी बहन शामिल हैं, जिनकी शादी होनी है (एक महंगा प्रस्ताव), जबकि रयान एक विशेषाधिकार प्राप्त गृहिणी के रूप में आता है लेकिन बचपन से ही अपने माता-पिता को शायद ही कभी देखा हो क्योंकि वे अपने तेज़ी से सफल व्यवसायों के निर्माण में व्यस्त रहे हैं। हरि कहानी का बहुत कुछ वर्णन करता है, लेकिन उसके खाते में सन्निहित कुछ अन्य पात्रों की आवाज़ में अध्याय हैं - उसके दो दोस्त और जिस लड़की से वह जुड़ता है - उनके पात्रों और हरि के अपने चरित्रों में थोड़ी अधिक अंतर्दृष्टि देते हुए (क्योंकि वह चुप रहता है) उनके परिवार और पृष्ठभूमि के बारे में)।

IITs में सफलता रटकर सीखने से मिलती है, और रयान विशेष रूप से इस बात का अनुसरण करता है कि कैसे कॉलेज किसी भी रचनात्मकता को रोकता है और कैसे IITs में विशेष रूप से अमेरिकी विश्वविद्यालयों की तुलना में कुछ भी ध्यान देने योग्य नहीं है। कॉलेज के अनुभव का आनंद लेने के लिए रयान ने लगातार अपने दोस्तों से मिलने के लिए खुद को उकसाया, लेकिन किसी भी तरह की आधी-अधूरी वास्तविक जीवन की अकादमिक सफलता (जिसमें क्रंचिंग घंटों की आवश्यकता होती है) को कुचलना मुश्किल है। हरि एक लड़की से मिलता है, लेकिन नेहा कैंपस के सबसे सख्त प्रोफेसरों में से एक की बेटी है, और वह शायद ही कभी उसे देखती है।

चेतन भगत के उपन्यासों में संदिग्ध नैतिकता की समस्या है। वास्तव में, हरि नोट करता हैः हम शायद असली अपराधी थे। लेकिन वह बात नहीं थी।

वास्तव में, भगत के उपन्यासों में शायद ही ऐसा हो; वास्तव में, यह शायद ही मायने रखता है। उसका चरित्र शायद ही कभी उसकी पवित्रता पर सवाल उठाता है, और

यहाँ यह उसकी मूर्खता है (कैसे वह खुद को पकड़े जाने की अनुमति देता है) जो उसे कलाई पर एक थप्पड़ मारती है जो इतनी गंभीर है। आखिरकार, तीनों चैट करते हैं और खुद को अपनी पढ़ाई के लिए समर्पित करते हैं; हरि नेहा को अपने कॉलेज के अनुभव के बारे में भी बताता है: यह ज्ञान के बारे में है। और इस प्रणाली का अधिक से अधिक उपयोग करें, भले ही इसमें खामियां हों।

यह बहुत आश्वस्त करने वाला नहीं है - यहाँ तक कि इसे कम करने के बाद, यह एक सुरक्षित, उच्च भुगतान वाली नौकरी की तुलना में कम ज्ञान है, और अनिवार्य रूप से, उन्होंने आईआईटी में कुछ 'जीवन के सबक' सीखे। इसके अलावा, उसने क्या सीखा इसका कोई उल्लेख नहीं है। केवल सबसे मुक्त रयान, जो वास्तव में वैज्ञानिक ज्ञान प्राप्त करने में रुचि रखता है, अपने चौरसाई प्रयोगों के साथ छेड़छाड़ करता है। (हरि और आलोक कुछ समय के लिए हर दिन कई घंटे खर्च करने में उनकी सहायता करते हैं, लेकिन भगत को पता नहीं है कि वे वास्तव में अपना समय किस पर खर्च करते हैं: विज्ञान और शैक्षणिक ज्ञान-प्राप्ति का कोई भी रूप पूरी तरह से बना हुआ है।)

फाइव पॉइंट्स निश्चित रूप से किसी के लिए एक बुरी किताब है, लेकिन भगत के गायन - हरि की आवाज काफी सम्मोहक है - खुशमिजाज स्वर, और कैंपस नोवेल नॉस्टैल्जिया ('मैं आईआईटी से बाहर हो सकता हूँ, लेकिन कुछ मायनों में मेरी आत्मा अभी भी है वहाँ,' हरि ने अंत में ध्यान से कहा) पर्याप्त राग अलापें और इसे एक निर्विवाद अपील दें। यह जो संदेश भेजता है वह भयानक होता है; यह एक नैतिक संहिता की कमी के कारण अत्यधिक आपत्ति जनक है, और यहाँ तक कि मित्रता के उदार कार्य भी अक्सर मनमाना या भ्रामक होते हैं; लेखन में बहुत कुछ है, लेकिन यह निश्चित रूप से पठनीय है और इसकी खामियों के बावजूद काफी दिलचस्प कहानी है।

कथा साहित्य 'फाइव पॉइंट समवन' में चेतन भगत का कथन: फाइव पॉइंट समवन में चेतन भगत भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) में सपने देखने और रहने वाले नए टेक्नोक्रेट के भीतर और बाहर की व्यापक वास्तविकता का एक चित्र प्रकट करते हैं। कहानी तीन छात्रों, रयान, आलोक और हरि के इर्द-गिर्द घूम रही है। चेतन भगत ने कैंपस जीवन के वर्णन के साथ ध्यान केंद्रित किया कि कैसे छात्रों की अशांति और अनियंत्रित तनाव व्यसनों की ओर ले जाता है। भगत रैगिंग के विशिष्ट प्रभावों की झलक देते हैं। वरिष्ठ छात्रों बाकू और अन्य ने उन्हें अपने कपड़े निकालने का निर्देश दिया। रैगिंग के नाम पर इस प्रकार की परेशान करने वाली घटनाएं छात्रों के मन पर एक बड़ा भावनात्मक प्रभाव पैदा करती हैं जो उन्हें आत्महत्या करने के लिए प्रेरित कर सकती हैं। यह घटना एक समृद्ध कल के लिए अंधेरे में टटोल रहे छात्र के मानस की क्षति पर केंद्रित है। रेयान तीनों में सबसे साहसी होने के कारण आलोक और हरि को रैगिंग की बदनामी से बचाने के लिए चालाकी करता है। उन्होंने रैगिंग की बुराइयों और पक्षपात की बुराई के खिलाफ भी लड़ाई लड़ी। वह हरि और आलोक को रेंजिंग के अपमान से बचाता है। इसके बाद वे हमेशा के लिए अच्छे दोस्त बन गए। आलोक परिवार के लिए कुछ करना चाहता है। वह आर्थिक रूप से परिवार का समर्थन करना चाहता है और अपनी बहन की शादी में भी हिस्सा लेना चाहता है। पहले सेमेस्टर के बाद, आलोक रयान और हरि का साथ छोड़ देता है। वह अपनी पढ़ाई को कुछ बुद्धिमान दोस्तों के साथ बांटना चाहता है। वह अपने पिता को आर्थिक रूप से मदद करने और अपनी बहन की शादी के लिए उचित प्लेसमेंट पाने के लिए अपने अंकों में सुधार करना चाहता है। हरि रटने की शिक्षा प्रणाली की कठोरता को दर्शाता है। वह वेंकट के स्वभाव और कार्यों के बारे में घृणा महसूस करता है जो आईआईटी के नौ पार्टनर अच्छे छात्र हैं।

कुमाउँ छात्रावास नई प्रौद्योगिकी के छात्रों के जीवन की चुनौतियों और दृष्टि के लिए एक रूपक बन जाता है। एक अन्य विवरण में, रयान पुरानी कुंडी और एक फोटोग्राफिक विवरण प्रस्तुत करता है।

योजना ऑपरेशन पेंडुलम रयान द्वारा डिजाइन किया गया है और इस ऑपरेशन के पीछे मुख्य विचार एक सेमेस्टर का प्रश्न पत्र प्राप्त करने के लिए प्रोफेसर चेरियन के कार्यालय की चाबी प्राप्त करना है। नेहा की सूचना के बिना हरि चेरियन के कार्यालय की चाबी ले लेता है। चाबी लेने के बाद तीनों प्रोफेसर चेरियन के कार्यालय में प्रश्नपत्र की कॉपी चुराने की कोशिश करते हैं। दुर्व्यवहार और सजा पाने के बाद आलोक ने आत्महत्या करने का फैसला लिया और उसने किया। रायन और अन्य लोगों के आईसीयू के बाहर इंतजार करने की उम्मीद थी। भगत ने संस्था की अनुचित व्यवस्था के परिणामों को उजागर करने का प्रयास किया है।

नियुक्ति के अवसर पर हरि आनंद के क्षणों को याद करते हैं। आलोक को मूल वेतन, यात्रा भत्ता और चिकित्सा लाभ मिलते हैं। प्रो वीरा के निर्देशन और सहायता में, रयान को अपनी प्रयोगशाला परियोजना को जारी रखने के लिए रिसर्च एसोसिएट के रूप में आंशिक नियुक्ति मिलती है।

उपन्यास के अंत में प्रोफेसर चेरियन ने अपनी सोच बदली और सभी आईआईटी छात्रों को एक सलाह दी। परिसर के जीवन का विषय प्रसिद्ध भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) में पढ़ने वाले मित्रों के समूह के प्रदर्शन दबावों, असफलताओं और जीत को भी दर्शाता है। कई बार छात्रों के काम के प्रति प्रोफेसर की लापरवाही के कारण छात्रों को नुकसान उठाना पड़ता है और उनका करियर खराब हो जाता है।

उपन्यास आधुनिक युवाओं की दुविधा की समस्याओं को दर्शाता है। उपन्यास का विषय अपूर्ण शिक्षा प्रणाली को चित्रित करता है और दिखाता है कि कॉलेज के वर्षों में छात्र अपने अवसरों को कैसे बर्बाद करते हैं। रयान, आलोक और हरि के कॉलेज जीवन में आईआईटी जीवन के विविध पहलुओं और कैसे छात्र अंकों के लिए दौड़ लगाते हैं, का वर्णन करता है। फिल्म थ्री इडियट्स चेतन भगत की फिक्शन फाइव पॉइंट समवन पर आधारित थी। फिल्म में रणछोड़ दास के रूप में हरि, राजू के रूप में आलोक और फरहान के रूप में रयान के चित्रित किया कि युवाओं के पास अपने माता-पिता की तुलना में कहीं अधिक विकल्प होने लगे थे। यह फिल्म स्वयं भारतीय शिक्षा प्रणाली को दर्शाती है जो वैश्विक दुनिया के साथ सिंक की कमी को प्रदर्शित करने के लिए केवल समझने पर सीखने पर प्रकाश डालती है। हरि ने IIT की तकनीकी सीखने की प्रक्रिया का विरोध किया जो केवल रटने को बढ़ावा देती है और सीखने की प्रक्रिया को समझने और आनंद लेने से बहुत दूर है। फिल्म में चतुर का किरदार इसका सबूत है।

मार्क्स सिस्टम, असाइनमेंट पूरा करना और जॉय के किरदार द्वारा सबमिशन भी आईआईटी के प्रोफेसरों द्वारा इनोवेशन के प्रति प्रेरणा की कमी को दर्शाता है। यह इस तथ्य को स्वीकार करता है कि, सबसे बड़े दिमाग युवावस्था में ही बिगड़ जाते हैं। इससे वे निराश भी होते हैं और मुख्यधारा से कट भी जाते हैं।

आई आई टी में इन छात्रों के जीवन से यह भी पता चला कि यह व्यक्तित्व के समग्र विकास के लिए उपयुक्त वातावरण नहीं है। यह युवाओं के जीवन में निराशा, हताशा, अन्याय और अकेलापन जैसी चार गंभीर कमियाँ पैदा करने वाला है।

फिल्म रणछोड़ दास में हरि का किरदार युवाओं को सलाह देता है कि अगर वे जीवन में सफल होना चाहते हैं तो दूसरों से नहीं बल्कि खुद से रेस करें। किसी की खुद से होड़ हो तो यही होता है; दौड़ में सबसे आखिर में आने पर भी कोई हार नहीं सकता। हरि और अन्य लोगों को इस तनाव का लगातार अहसास है। फिल्म में आईआईटी के प्रोफेसर की बेटी प्रिया के रूप में नेहा के किरदार ने उन्हें केवल संभव सांत्वना दी।

फिल्म के माध्यम से आमिर देश में यह संदेश फैलाते हैं कि युवा देश का भविष्य हैं। शिक्षण सीखने की प्रक्रिया का पारंपरिक तरीका उनकी रचनात्मकता को मारता है और केवल रटने को बढ़ावा देता है। राजू और रयान के पिता, मां, बहन के किरदारों के जरिए फिल्म बताती है कि छात्रों के करियर में रुकावट के लिए जिम्मेदार केवल सरकार ही नहीं बल्कि माता-पिता भी अपने बच्चों के जीवन को बनाने या बर्बाद करने के लिए जिम्मेदार होते हैं। बच्चों की जिंदगी के बड़े फैसले लेते समय ये पक्षपाती हो जाते हैं।

निष्कर्ष - चेतन भगत द्वारा लिखित फाइव पाईंट समवन इस बात को दर्शाता है कि किस प्रकार दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली देश के भविष्य को बिगाड़ देती है। भगत युवाओं की चेतना की आंतरिक दुनिया का निर्माण करना चाहते हैं। उन्होंने समकालीन समाज की वास्तविकताओं से भी निपटा है जो बढ़ते अवसाद का कारण है। भौतिकवाद का दानव युवाओं के जीवन में उथल-पुथल मचा रहा है। यह अकादमिक उत्कृष्टता के बारे में संदेश देता है, मानवता को निराशा, उदासी, घबराहट और अवसाद से बचाने के लिए मानव जीवन की विविध मांगों का एकीकरण आवश्यक है।

सन्दर्भ सूचि

भगत, चेतन. हिंदुस्तान टाइम्स। 'कट ऑफ, ब्रंच स्टोरी', 27 जुलाई 2009. www. chetanbhagat. com*

http://www.chetanbhagat.com/columns/cut-off-brunch-story/

हिंदी साहित्य और साइबर स्पेस

डॉ.एम.संगीता

साहित्य समय और समाज की अभिव्यक्ति है। वैश्वीकरण के विश्व व्यापी दृष्टिकोण ने दुनिया की चिन्तन-मनन प्रक्रिया में भारी बदलाव लाया है। यह तो हमारे बीच सकारात्मक और नकारात्मक जैसे दोनों रूपों में प्रभावित किया है। साहित्य इसके सकारात्मक पक्ष के हाथ पकड़कर अपनी जैत्रयात्रा करता है।

वैश्वीकरण के दौर में विज्ञान या तकनीकी विकास के ज़रिए हिंदी भाषा और साहित्य ने भी अपना अलग स्थान बना लिया है। इस विश्व-व्यापी हिंदी भाषा और साहित्य के प्रचार-प्रसार में मीडिया का प्रभाव अतः इलेक्ट्रोनिक मीडिया का स्थान उल्लेखनीय है।

फेसबुक, इंस्टाग्राम, युटूब आदि से आज के छोटे बच्चों से लेकर वृद्ध जनों तक सुपरिचित हैं। वर्तमान समाज में साइबर मार्केट, साइबर क्राइम जैसे शब्द जनसाधारण के मुख से निकलने लगे। वैसे ही साहित्य के क्षेत्र भी साइबर साहित्य या साइबर लिटरेचर नाम से जाना जाता है। चट्टानों, पेड़ों, पत्तों में लिपिबद्ध रूप से जन्म लिए लिखित साहित्य का स्वरूप इक्कीसवीं सदी में इलेक्ट्रोनिक मीडिया लेखन या साइबर साहित्य के रूप में परिवर्तित हो रहा है। साहित्य एक सृजनात्मक प्रक्रिया है। लेखक अपने मन की अभिव्यक्ति तथा समाज के प्रति अपना दृष्टिकोण आदि को काव्यात्मक ढंग से कहानी, कविता, उपन्यास, नाटक, आत्मकथा, यात्रावृतांत जैसे विभिन्न रूपों में लिपिबद्ध करता है। आज तक दुनिया की सारी भाषाओँ में करोड़ों साहित्य रचनाओं का प्रकाशन हो चुका है। लेकिन इन प्रकाशित रचनाओं में कितनी रचनाएँ पाठकों तक पहुँची हैं? यह बात तो सच है कि, बहुत कुछ रचनाएँ। जो अन्य कुछ पढ़ा जाता है वह विद्यार्थियों की पाठ्य सामग्रियों तक सीमित हो रहा है। साथ ही साहित्यिक रचनाओं का प्रकाशन करने में जो खर्ज होता है, यह साधारण लेखक झेल नहीं कर सकता हैं । इसलिए आज भी अनेक साहित्यिक रचनाएँ संदूकों में बंद हैं। इसके आलावा काव्य शास्त्र के दृष्टिकोण देखने पर काव्य के मुख्य रूप से दो भेद होते हैं श्रव्य काव्य और दृश्य काव्य।

इन सभी दृष्टिकोणों से देखने पर साइबर स्पेस साहित्य के विकास के लिए नया तथा अनंत रास्ता खोला दिया है। साइबर साहित्य में साहित्य रचनाओं को ग्राफ़िक्स की सहायता से दृश्य-श्रव्य काव्य के रूप से दर्शकों को जल्दी से आकर्षित करता है। जैसे ही युटूब, इंस्त्रग्राम, फेसबुक आदि माध्यमों में इन साहित्य रूपों का दृश्यविष्कार होता है। साथ ही छापी हुई पुस्तकों को खरीदने की खर्च से बचकर अपने कंप्यूटर या हाथ में हुए स्मार्टफ़ोन में कहीं भी इसका आस्वादन कर सकते हैं। साधारण से साधारण जनता तक इस साइबर स्पेस का इस्तमाल करते हुए अधिक साहित्य रचनाओं को अपनी अभिरुचि के अनुसार प्रस्तुत करते हैं। साइबर स्पेस में साहित्य के विकास में बहुत बड़ी देन यह है कि वह बहुत कम समय में अधिक लोगों तक पहुंचा जा सकता है और पाठकों की आलोचना भी छोटी अवधि के अंतर प्राप्त कर सकते हैं। मतलब यह है कि प्रस्तुत रचना के प्रति वाद-प्रतिवाद तत्क्षण प्राप्त हो सकते हैं। इससे हम यह साबित कर सकते हैं कि साइबर स्पेस में साहित्य का विकास अद्वितीय है।

सन् बीस सौ उन्नीस में अतः कोविड महामारी के युग के पूर्व से ही साइबर दुनिया कार्यरत है। लेकिन इसके बाद ही यह असीमित रूप से जन साधारण के जीवन में एक गहरा धाक पैदा किया है। कोविड महामारी के उस दारुण समय में लोगों को जागरूक करने के लिए अनेक साहित्यकार विशेष रूप से हिंदी साहित्यकार सभी विधाओं में रचनाएँ करते हुए साइबर स्पेस के माध्यम से कार्यक्षेत्र में आये। इसमें बड़ी दिल्चस्प बात यह है कि कोविड महामारी के वक्त से अनेक लोगों को साहित्यकार बनने का अवसर मिला।

साइबर स्पेस में हिंदी साहित्य के बारे में विचार करें तो - हिंदी भारत की भाषा है। लेकिन वैश्वीकरण के प्रभाव से ही इसे विश्व भाषा का दर्जा प्राप्त हुआ है। यह हमारे लिए गौरव की बात है। हिंदी भाषा के विश्व व्यापी विकास के साथ साथ हिंदी साहित्य का भी विकास उल्लेखनीय है। साइबर स्पेस में हिंदी साहित्य का विकास की बानगी है इलेक्ट्रोनिक मीडिया में उपलब्ध विभिन्न वेबसाइट, युटूब चैनल आदि। इसमें हिंदी साहित्य के विख्यात लेखकों की रचनाओं से लेकर विभिन्न स्तर के साहित्य रचनाएँ, आलोचनाएँ

तथा मौलिक रचनाएँ उपलब्ध हैं। hindi.pratilipi.com, zindagigulzar.com, hindi.matrubharti.com, hindinovels.net, hindikahaniyaonline.com, hindikahane.in, grihshobha.in, bharatdarshan.com, sarita.in, grehalekshmi.com, kavyalaya.org, hindi.kavita.com जैसे अनेक हिंदी साहित्य के वेबसाइट उपलब्ध हैं। वैसी ही टेकसोले (techsole), हिंदी में(hindi me) मायटेकनिकल हिंदी (my technical hindi), हिंदी ब्लॉगर (hindi blogger), टेक युक्ति (techyukti) आदि हिंदी के ब्लोग्स; दिव्यज्ञान (divyagyan), एस एस जी गुरु कुल, शांति निकेतन, हिंदी का ज्ञानी, हिंदी कविता, हिंदी गुरू जी, साहित्यिक झरोखा, विद्या-मित्रा, सुरेन हिंदी क्लास, सबद विवेक जैसे अनेक युटूब चैनल साइबर स्पेस में हिंदी साहित्य के विकास के लिए सराहनीय काम करते हैं्र

हिंदी साहित्य के आकाश में कबीर, सूर, तुलसी से लेकर उपन्यास सम्राट प्रेमचंद, भारतेंदु हरिश्चंद्र, मैथिलि शरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, निराला, महादेवी वर्मा, नागार्जुन, धूमिल, अज्ञेय तथा समकालीन साहित्यकार मृदुला गर्ग, चंद्रकांत देवताले, लीलाधर मंडलोई जैसे जानेमाने लेखक तथा कुछ अप्रसिद्ध तारे हैं। विभन्न कालों में उभरे इन सभी साहित्य रचनाओं को एक पटल में समाहित करने के लिए हिंदी साहित्य, साइबर स्पेस का जितना उपयोग करता है, वह सराहनीय है।

कोविड महामारी के बाद साइबर स्पेस में हिंदी साहित्य का विकास, विशेष रू प से युटूब में हिंदी साहित्य के विकास के बारे में मैं चर्चा करना चाहती हूँ। हिंदी साहित्यिक रचनाओं का प्रचार-प्रसार कम समय में कितने लोगों तक पहुँचता है इसका प्रमाण है दो साल पहले युटूब में पोस्ट किये गए प्रेमचंद की पूस की रात, मंत्र, बूढी काकी, कफ़न जैसी कहानियों का दृश्याविष्कार पाँच मिलियन लोगों ने देखा है और इसकी टिप्पणियाँ तथा आलोचना भी की हैं। जैसे ही दस महीनों के पहले पोस्ट किये गए जयशंकर प्रसाद की कविताओं के पोस्ट का तीन लाख लोगों ने अस्वादन किया गया है और अपनी तरफ से कुछ आलोचनाएँ भी की हैं। इसमें विशेष बात यह है कि आलोचना व टिपण्णी सिर्फ साहित्यिक प्रेमियों या साहित्यिक दर्शकों से नहीं बल्कि विभिन्न तरह की श्रेणियों के लोगों से प्राप्त हुआ है। यही इसकी देन है। साथ ही साइबर स्पेस का उपयोग करते हुए पूर्व कालीन साहित्यिक रचनाओं को पुनर्जन्म मिल जाता है। फिर भी इससे यह सीमित नहीं होती है। अनजाने अनेक लेखक आजकल साइबर साहित्य का अंग बन रहे हैं। समकालीन सामाजिक परिवेशों से ओतप्रोत होकर नव-औपनिवेशिकता, पारिस्थितिक सजगता, हशियेकृत जीवन यथार्थ, मनोवैज्ञानिक तथा अन्य विभिन्न विषय पर केन्द्रित लिखी हुई अनगिनत रचनाओं की एक लंबी सूची हम देख सकते हैं।

युटूब में अजय नगर नामक एक युवा कवि ने स्त्री शिक्षा की अनिवार्यता के बारे में लिखी गयी 'एक बेटी ने दिया बाप का कर्जा' कहानी पोस्ट किये गए एक ही साल में पाँच मिलियन लोगों ने पढ़ लिया है और उसमें हजारों लोग इसकी टिप्पणियाँ भी दी गयी है। इस कहानी के लिए एक ने यह टिपण्णी की है कि सही है भैय्या, दिल से कहते हैं, बेटी तो किसी बेटे से कम नहीं होती। सच में यह स्टोरी ने दिल को छू लिया है। इससे हमें यह ज्ञात होता है कि समाज की सोच तो क्या है? लेखक का काम समाज के लिए कितना महत्वपूर्ण है?

वैसे ही हिंदी में दलित जीवन के बारे में इन्स्टाग्राम में अत्यधिक वायरल हो गयी हिंदी कविता है 'नवीन चौधरी नामक एक युवा कवि का मैं चमारों के गली तक ले चलूँगा कविता। इस कविता को एक ही साल में सात लाख अस्सी हज़ार लोगों ने अपना लिया है। कविता इतना वायरल होने की वजह से NDTV news में इससे भेंटवार्ता हुई और उसकी प्रशंसा भी की। कविता की दो पंक्तियाँ इस प्रकार है

"आइये, महसूस करिए जिंदगी के ताप/ मैं चमारों की गली तक ले चलूँगा आपको"

युटूब में इस कविता की टिपण्णी करते हुए दो लाख सत्तर हज़ार लोग आगे बढे।

वैसे ही तकनीकी विकास के परे रहे आदिवासी ग्राम से भी सुजीत चौधरी नामक एक युवा कवि की 'अस्तित्व' कविता कोविड काल में अत्यधिक वायरल हो गयी थी।

हिंदी साहित्य की और एक प्रमुख विधा है नाटक। हिंदी साहित्य में नाटक का विकास आधुनिक काल से माना जाता है। नाटक के दो रूप होते हैं अभिनेय नाटक और पठनीय नाटक। साहित्य के क्षेत्र में नाटक का पठनीय रूप ही देख सकते हैं। आज तक हिंदी साहित्य में कितने ही नाटक लिखे गए हैं। नाटक के लिए काल विभाजन भी हुआ है। सोचिए, इतने सारे नाटकों को

कितने लोगों ने पढ़ा है या सुना है? बहुत ही कम होगा। इसलिए ही आज की तकनीकी उपायों के ज़रिये साइबर स्पेस में हिंदी नाटकों को चमका दिया रहे हैं। भारतेंदु हरिश्चंद्र के 'अंधेर नगरी' नाटक का दृश्यविष्कार 2D, 3D तथा अभिनीत रूप में युटूब में वायरल हो रहा है। एक महीने के पहले पोस्ट किये अंधेर नगरी का 2D ग्राफ़िक्स नाटक का अभी तक बत्तीस हज़ार लोगों ने अस्वादन किया है। समकालीन नाटकों में भी मन्नू भंडारी का बिना दीवारों का घर और नादिरा ज़ाहिर बब्बर जी का सकुबाई आदि नाटक के दृश्यविष्कार को लाखों जनता ने अपना लिया है। इसके अलावा अभिनीत रूप से ही निकलनेवाले नए नाटक की संख्या में भी कोई कमी नहीं है।

साहित्य की अभिरुचि बढ़ानेवाली और एक प्रमुख विधा है यात्रावृतांत। हिंदी साहित्य में अभी तक रचे प्रमुख यात्रावृतांतों के दृश्य विवरण युटूब में हम देख सकते हैं। निर्मल वर्मा का चीड़ों पर चांदनी, तथा धर्मवीर भारती का ठेले पर हिमालय आदि का दृश्य चित्रण यात्रा की सही अनुभूति देनेवाली है। भारत का अंतिम ग्राम हिमाचल प्रदेश का 'छितकुल' की ओर युटूब में प्रचलित यात्रा का विवरण दो ही हफ़्तों में तीन लाख लोग देख चुके हैं।

हिंदी साहित्य के विकास में साइबर स्पेस के इस्तेमाल के विस्तार की बानगी है बाल साहित्य में आये परिवर्तन। बाल-बच्चों को दृश्य-श्रव्य रूप में हिंदी के पुराण, ऐतिहासिक कथाएँ तथा नैतिक कहानियाँ, बाल कविताएँ, बाल नाटक जैसे साहित्य के सभी विधाओं के ज़रिये आकर्षित करने का क्रन्तिकारी परिवर्तन इस युग में हुआ है।

कहानीकार घर, नई मजेदार कहानियाँ, पॉजिटिव इनबॉक्स हिंदी, किद्सोने हिंदी, बेस्ट हिंदी कहानियाँ, हिंदी कहानियाँ, हैप्पी बचपन, मैजिक बॉक्स हिंदी जैसे अनेक चैनल हैं। पॉजिटिव इनबॉक्स हिंदी युटूब चेंनेल मैं आई 'चतुर सेठ' नामक कहानी तीन ही हफ़्तों में अठावन हज़ार लोगों ने देख लिया है। संक्षेप में कहें तो आज के सभी वयस्क के बच्चे तथा आदमी इसमें मुक्तहो रहे हैं।

अच्छी साहित्यिक रचनाओं की सृजन में बहुमूल्य स्थान समालोचना के लिए हैं। साहित्यिक दर्शकों के समय समय पर देनेवाले मत ही साहित्यकारों को लिखने की प्रेरणा और मार्ग दर्शन है। इसलिए साहित्य के विकास में आलोचना का महत्वपूर्ण स्थान है। आज तो साइबर विकास के ज़रिये साहित्यिक आलोचना का क्षेत्र भी व्यापक हो रहा है। साइबर स्पेस में तैरनेवाली हिंदी साहित्य रचनाओं की आलोचना करते हुए अनेक युटूब चैनल हमारे यहाँ विद्यमान हैं। समकालीन समालोचना में साहित्यकार तथा अध्यापकगण अपने वैयक्तिक नाम से चैनल बनाकर इस महत्वपूर्ण कार्य को सँभालते हैं। अभी तक सारी विख्यात हिंदी साहित्यिक रचनाओं का आलोचनात्मक अध्ययन साइबर माध्यम में उपलब्ध कर सकता है। ज्ञान सुधा, भारतीय हिंदी ज्ञान, हिंदी साहित्य मंच, हिंदी साहित्य कुंज, हिंदी ज्ञान बोध, हमसफ़र हिंदी जैसे अनेक समालोचना चैनल हैं। साइबर स्पेस में इस साहित्यिक आलोचना के क्षेत्र से कुछ भिन्न है कि साहित्यिक दार्शनिक तथा साधारण निरीक्षक दोनों एक ही पटल में अपना मत व्यक्तकरने के अवसर का उपयोग करते हैं।

साहित्य के विकास में पत्रकारिता की भूमिका महत्वपूर्ण है। पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होनेवाली साहित्य रचनाएँ तथा साहित्यिक शोध रचनाएँ साहित्य के क्षेत्र को मज़बूत करती है। साहित्यिक पत्रिकाएँ, शोध पत्रिकाएँ, बाल बत्रिकाएँ, आलोचनात्मक पत्रिकाएँ जैसे विभिन्न प्रकार की ऑनलाइन हिंदी पत्रिकाएँ उपलब्ध हैं। www.tarakash.com, www.nirantar. com, www.samayiki.com www. media vimarsh.com, www. chandamama. com, www.deshkal.com, www.hindimedia. com, www.anubhuti.hindi.org, www. sahitya kunch. com ऐसे इसकी सूची लंबी हो जाती है। इसमें चंदामामा नामक पत्रिका को ऑनलाइन में दो ही सालों में सात हज़ार से अधिक ग्राहक सब्सक्राइब किये हैं।

इस प्रकार कम समय में अधिक लोगों को प्रभाविक करने वाले साइबर स्पेस में हिंदी भाषा और साहित्य ने अपनी अलग पहचान बना ली है। इसमें विशेष बात यह है कि साइबर स्पेस में हिंदी भाषा और साहित्य को सिर्फ भारत के ही नहीं बल्कि दुनिया भर के हिंदी प्रेमियों ने सक्रिय भागीदारी दी हैं।

उपर बताई गयी मुद्दों के आधार पर हम यह निष्कर्ष में पहुँच सकते हैं कि बदलते परिवेश और तकनीकी विकास के साथ साथ हिंदी भाषा भी अपने अस्तित्व को कायम करती रहती है। इसका का पूरा पूरा सहयोग साहित्य का क्षेत्र देता रहता है। आगे भी जितना भी परिवर्तन साइबर दुनिया में आने की संभावना है उन सबका उपयोग करते हुए हिंदी भाषा और साहित्य की विकास यात्रा ज़ारी रहेगी।

अथिति अध्यापिका, VTM NSS कॉलेज,
धनुवच्चपुरम, तिरुवनंतपुरम

आत्मकथा

देवयानम्

अनुवाद : प्रो. के.एन.ओमना

मूल : डॉ.वी.एस. शर्मा

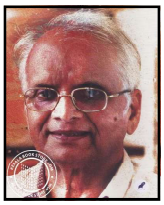

पाँचवाँ देवपद

पूर्व सन्धि

(पूर्वप्रकाशित से आगे)

हमारे चाचा श्री. भास्करन मूत्तत्तु, खानदान के दायित्वों के निर्वहण के साथ गाँव के सार्वजनिक कामों में भी बड़े तत्पर थे। स्वाभाविक रूप से उनके अनेक दोस्त हुए जिनमें से कुछ लोग अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए चाचा जी को पथभ्रष्ट करते थे। गाँव के पश्चिम ठाणाप्पटि में हमारा एक अच्छा-खासा दुमंजिला मकान था। उसकी उ परी मंजिल में स्टेट बैंक आफ ट्रावनकोर की शाखा खोली गई थी तथा उसके निचले स्तर में दुकानें, गोडाउ ण आदि का प्रबन्ध किया गया था। लेकिन अधिक दिन न बीता कि सब कुछ बेच दिये गये थे। इस कारण खानदान कर बहुत बड़ा आर्थिक नाश हो गया था। यह बात घर के बाकी लोगों को बिलकुल पसन्द न आयी थी और के आपस में इसकी चर्चा करने लगी थे। नैशनल हाईवे के निकट के नारियल के पेडों से भरी अनेक एकड़ की बहुमूल्य भूमि के बेचने की बात आयी तो घरवालों ने उसका डटकर विरोध किया। तब तो घर का बँटवारा सुनिश्चित बन पड़ा।

घर की सारी सम्पत्ति का विभाजन करना बिलकुल आसान न था। सबसे पहले घर के स्थावर जंगम सभी वस्तुओं की विशद एवं सम्पूर्ण तालिका तैयार तैयार करनी थी। इसका दायित्व अनुभवी श्री. पाच्चुपिल्लै को सौंपा गया था। हमारे अपने गाँव में ही नहीं, पासवाले विय्यपुरम जैसे अनेक गाँवों में हमारी खेत एवं ज़मीन थी। वहाँ के दफ्तरों से भूमि-सम्बन्धी सर्वेक्षण संख्या आदि मिलने से ही उसका समग्र मानचित्र तैयार कर सकता था। उसी प्रकार सुनार एवं बढ़ई की सहायता से जंगमी चीजों की सूची भी तैयार करनी थी। करीब एक साल के निरन्तर परिश्रम से सारा काम पूरा हो गया।

खानदान का बँटवारा हो गया। प्रत्येक व्यक्ति अपना अलग घर बसाने लगा। मेरे पिता जी को गाँव के दो किलोमीटर की दूरी पर वेल्लंकुलङ्गरा मठम जाना पड़ा। विभाजन के बाद रातों ही रात में वे भी अपने परिवार के साथ वहाँ चले । खानदानी मकान छोड़ जाने का दुःख हमारे मन को सदा टीसता रहा।

परिवार की कुलदेवता की पूजा एवं गाँव के मन्दिर के दायित्वों का भी प्रबन्ध करना था। 1967 में इसके लिए पुनर्विभाजन हुआ। मंदिर के दायित्वों से हमें अलग किया गया क्योंकि अपना निवास स्थान वहाँ से बहुत दूर था। गाँव के दायित्व-निर्वहण के लिए हमारे खानदान को बहुत बड़ी भू-सम्पत्ति पहले ही दी गई थी। (पुराने ज़माने में केरल के धनी मन्दिरों की यही रीति थी) 1956 में नये भू- नियम लागू होने पर वह सब नष्ट हो गये। घर की आमदनी रुक गई। अभी तक भगवान की कृपा से निश्चिन्त ऐश्वर्यपूर्ण जीवन बिताने वाले इनके परिवार में अब गरीबी का कठोर सत्य प्रकट होने लगा। मंदिर का काम करने के साथ उच्च शिक्षा प्राप्त कर नौकरी पानेवाले लोग इन घरों में कम थे। जो नौकरी पाने में समर्थ हुए उनकी बात तो अलग थी।

अपनी प्राथमिक शिक्षा माने चौथे दर्जे तक की

शिक्षा मलयालम भाषा के माध्यम से हुई थी। उसके बाद अंग्रेज़ी मिडिल स्कूल के प्रिपरेटरी क्लास में मेरी भर्ती हो गई थी। छठवीं की परीक्षा उत्तीर्ण होने पर मुझे इ. एस. एल. सी. (Elementary school leaving Certificate) की परीक्षा देनी थी और मैं वह पास हो गया था। जो पढ़ाई घर पर पहले थी वह अब भी जारी थी। हमारे अध्यापक के नाम था श्री.कृष्णनुण्णी। उनका व्यक्तित्व अत्यन्त सरल एवं निष्ठापूर्ण था। सबेरे ही वे नहा-धोकर भगवान के दर्शन करने जाते थे और लौट आकर नाश्ते के बाद हमें पढ़ाते थे। गणित, अंग्रेज़ी, इतिहास, विज्ञान आदि विषय अच्छी तरह वे पढ़ाते थे। उनके रहने का प्रबन्ध भी हमारे ही घर में किया गया था। उसी समय विदेशी शासन से भारत माता को मुक्त करने के लिए हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार होने लगा था। हमारे गाँव में भी हिन्दी भाषा पढ़ाने का प्रबन्ध हुआ था और अध्यापक का नाम था श्री. कुट्टन पिल्लै। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की विशारद परीक्षा पास होने वाले लोग स्कूलों में अध्यापक बन सकते थे। हिन्दी भाषा का प्रचार करने में श्री.कुट्टन पिल्ले का महत्वपूर्ण योगदान था। उनके अनेक शिष्य विद्यालयों में अध्यापक थे।

हमारे स्कूल के ड्रिल मास्टर श्री. सुब्रह्मण्य अय्यर के साथ श्री. वी. नाणुकुट्टन नायर, श्री. वी. नारायण पिल्लै आदि दूसरे अध्यापकों की भी मधुर स्मृतियाँ अब भी मेरे मन-पट पर हरी-भरी है जिनका प्यार एवं वात्सल्य कभी न भूला जा सकता है। उसी प्रकार कृष्पन नायर, शंकर अय्यर, सोमसुन्दरं पिल्लै, विजयलक्ष्मी, आर. पी. नायर आदि बहुत से सहपाठियों की भी यादें अब भी निरन्तर आती रहती हैं। जब हम फार्थ फाम (fourth form) में पढ़ रहे थे तब वार्षिक समारोह में विद्यार्थियों की भाषण- प्रतियोगिता हुई थी और उसमें मैं सर्वप्रथम आया। मुझे पुरस्कार में भारत के प्रथम प्रधान मंत्री पण्डित जवाहर लाल नेहरू की 'जीवनी' (autobioghaphy) नामक पुस्तक मिली। मैंने अब भी उसे सुरक्षित रखा है। अगले साल की भाषण-प्रतियोगिता में भी मैंने भाग लिया था, पर मैं उसमें दूसरा निकला। पुरस्कार स्वरूप 'महात्मागांधी के पत्र 'नामक पुस्तक मुझे दी गयी । उस साल के वर्षान्त परीक्षा में मैं जीत गया था। परन्तु प्रथम श्रेणी न पा सका।

हमारे स्कूल के पास रहने वाले एक ब्राह्मण हम बच्चों को रोज़ पानी पिलाता था जिन्हें हम प्यार से वाटर मैन (Waterman) कहते थे। मुद्र-लेखन (Type - writting) सिखाने की एक संस्था भी हमारे स्कूल के पास थी जिसका मालिक था श्री.अनन्तरामन। उसके निकट ही चेल्लप्पन पिल्लै की दुकान थी जहाँ हम विद्यार्थियों के लिए ज़रूरी पुस्तक, पेंसिल आदि के सिवा सोड़ा, शरबत, पान आदि भी मिलते थे। एक दिन की बात थी। मुझे अपने स्कूल के सामने खड़े हुए मेरे मामा जी ने मुझे देख लिया तो मुझ से पूछा 'कुछ चाहिए?' सकुचाते सकुचाते मैंने कहा -'एक कलम चाहिए।' बड़े उत्साह से उछल कूद कर अपने दोस्तों को कलम दिखाया; लेकिन शाम को यह जान कर माता-पिता क्रुद्ध हुए। उन्होंने कहा कि किसी से कुछ माँगना बिल्कुल अनुचित है, चाहे वह अपने मामा से ही क्यों न हो ! मेरा सारा सन्तोष मिट्टी में मिल गया। भविष्य में ऐसा अनुचित कोई काम न करने का दृढ़ व्रत मैंने अपने मन में लिया। अपने बचपन की ये सारी बातें अब मुझे कोई स्वप्न जैसा लगता है ।

हमारे ग्रामीण जीवन के उद्धार एवं विकास के लिए चाचा जी ने श्री.भास्करन मूत्तु ने बहुत कुछ किया। उनमें सबसे मुख्य है हमारे अंग्रेज़ी मिडिल स्कूल का हाई स्कूल बनाना। इसका नेतृत्व उन्होंने अपने कंधों पर लिया । इतना ही नहीं, उसके लिए जरूरी आर्थिक सहायता भी उन्होंने दी। अभी तक गाँव के बच्चों को मिडिल क्लास पास होने पर अपने आगे की पढ़ाई के लिए तीन-चार मील पैदल चल कर करुवाट्टा या मावेलीक्करा जाना था। हाई-स्कूल का उद्घाटन समारोह बड़े धूम-धाम से हुआ था। तिरुवितांकूर के मुख्यमंत्री श्री परवूर टी. के नारायण पिल्लै उद्घाटन किया था। दूरदर्शी प्रधान अध्यापकों एवं उनके सहायक दूसरे अध्यापकों के आत्मसमर्पण से हाई स्कूल की उत्तरोत्तर प्रगति हुई थी। उनमें प्रातः स्मरणीय है - श्री.

सुब्रह्मण्य अय्यर, वी. नाणुकुट्टन नायर, रामवर्मा तम्पुरान, वी. नारायण पिल्लै, सी. रामकृष्ण पिल्लै, के राघवन नायर, चेल्लप्पन पिल्लै, एवं शंकर वारियर।

हमारे चाचा श्री. भास्करन मूत्तत्तु ने गाँव के साधारण लोगों के जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन करना चाहा। इस के लिए बड़े उत्साह से उन्होंने राशन की दूकान, दूध की डायरी, दियासलाई की कम्पनी आदि खोली, लेकिन उनमें से एक भी अपने लक्ष्य तक न पहुँची। अपने खानदान के दायित्वों से वे बिलकुल उदासीन थे। घर के बड़े होने से परिवार का संचालन उनका कर्तव्य था। लेकिन वे तो अपने दोस्तों के साथ आधी रात तक निश्चिन्त ताश खेलते रहते थे। अतः मेरे पिता जी को घर का दायित्व अपने कंधों पर लेना पड़ा। चाचाजी के दोपहर का भोजन वे परोस देते थे और इसी बीच वे पारिवारिक बातें उन्हें सुनाते थे, आय-व्यय की लेखा जोखा उन्हें दिखाते एवं अगले दिन के लिए ज़रूरी पैसे उनसे लेते थे। क्योंकि घर के बड़े होने से सारे पैसे उनके हाथ में थे। नारियल, धान आदि की लेखा-जोखा के लिए अलग-अलग मुंशी थे। परिवार के हर अंग के धार्मिक आचार-अनुष्ठान, अतिथियों के स्वागत सत्कार का प्रबन्ध, मंदिर के दायित्वों का निर्वहण, घर के आध्यात्मिक कार्य, नौकर-नौकरानियों का वेतन, भवन का रखरखाव (Maintenance) या भरण-पोषण इत्यादि किसी बडे खानदान की अनगिनत ज़रूरी बातें हर दिन होती रहती थीं। तिस पर ओणम, विषु, तिरुवातिरा आदि का त्योहार शादी-ब्याह, जन्म-मरण जैसे सन्तोष एवं सन्ताप का भी औचित्यपूर्ण निर्वहण होना था। घर का इतना बड़ा दायित्व मेरे पिता जी सफलता पूर्वक करते थे। किसीसे कोई शिकायत कभी नहीं हुई थी। पारस्परिक प्रेम, विश्वास एवं सहयोग की भावना से परिवार में सन्तोष एवं शान्ति हमेशा बनी रही थी । ओणम जैसे त्योहारों की मीठी स्मृतियाँ अब भी मेरे हृदय में ताज़ा है। दोस्तों के साथ धूम-फिर कर रंग-बिरंगे फूल इकट्ठा करना, घर के सामने आँगन में फूलों की रंगोली बनाना - कितने उत्साह के दिन थे वे ! चिंगम के महीने में (भाद्र मास) अत्तम नक्षत्र के दिन से दस दिन तक यह रंगोली बनायी जाती थी। कैसे भूला जा सकता है वे आनन्द एवं उत्साह के दिन ! उत्राटम नक्षत्र के दिन सबसे बड़ी रंगोली बनायी जाती थी तथा उसके निकट केले का तना गाड कर उसे नारियल के फूलों के गुच्छे तथा अन्य रंग-बिरंगे फूलों से अलंकृत करते थे। तिरुवोणम के दिन (दसवाँ दिन) तृक्काक्करयप्पन (महाविष्णु) की प्रतिष्ठा की जाती थी, उनकी पूजा-अर्चना होती थी एवं नैवेद्य चढ़ाया जाता था। परिवार के लोगों को ही नहीं, नौकर-चाकर, किसान लोग आदि हमारे जीवन के साथ निकट सम्बन्ध रखनेवाले सभी को ओणप्पुटवा (नये कपडे) एवं ओणसद्या (दावत) दी जाती थी। किसान लोग अपने ज़मींदार को केले, विविध प्रकार की तरकारियाँ आदि भेंट में देते थे। इस प्रकार सबका मिलन-जुलन, खेल-कूद, नाच-गान, दावत-ओणम केरल का महोत्सव था और अब भी है। लोगों के बीच में कोई भेद-भाव नहीं।

पौष महीने में केरल की नारियाँ तिरुवातिरा महोत्सव मनाती हैं। आध्यात्मिक आचार- अनुष्ठान की पृष्ठभूमि पर रचित यह महोत्सव जन-साधारण स्वप्न - संकल्पों का चित्र भी प्रस्तुत करता है। यहीं विश्वास है कि पौष मास का तिरुवातिरा नक्षत्र भगवान शिवजी का जन्म-नक्षत्र है और देवी श्री पार्वती ने अपने पति की वर्षगाँठ सखियों के साथ कुछ विशेष ढंग से मनायी थी। व्रत-उपासना, नाच-गान, बड़े तडके सब मिल कर जलाशय में जल-क्रीडा - स्नान आदि करना, विशेष प्रकार का भोजन बनाना - इत्यादि बहुत सी बातें उस दिन होती थी। इसका देखादेखी केरल की नारियाँ करती हैं ताकि भगवान - भगवती प्रसन्न होकर उन्हें आशीर्वाद दें और अपना पारिवारिक जीवन मंगलपूर्ण हो । इस अवसर पर जो नृत्य होता है उसका नाम है तिरुवातिराक्कली अथवा कैकोट्टीक्कली। (कली का अर्थ है नाच)। शास्त्रीय संगीत - पद्धति पर रचित अनेक कीर्तन एवं विविध शैली के लोकगीत इस नाच के लिए रचे गये हैं। श्री. कुंचन नम्पियार जैसे अनेक प्रतिष्ठित कवियों ने इसके अनेक गीत रचे हैं जो केरल की महत्वपूर्ण संस्कृति का अक्षय भण्डार हैं।

केरल के इन आचार-अनुष्ठानों एवं त्योहारों का

कविता

नागरिक

राजपुष्पम पीटर

नागरिक होते हैं हर देश में
नागरिक कहना सब पसंद करते हैं
नागरिक का धर्म है बहुत बड़ा
इसके बारे में सोचनेवाले बहुत कम
जैसे माँ-बच्चा वैसा होना यह बंध
आजीवन देश-माता की रक्षा करना
यही है हर नागरिक का पहला धर्म
चाहे इसके लिए क्यों न दें अपनी जान ?
जननी जन्मभूमि हमारी पुण्य भूमि है
नागरिक को यब सदा याद रहे
ताकि विपत्तियों में निडर बनकर
बेशक कर्तव्य निभाते निकल जाएँ
लेकिन आज तो अपना कर्तव्य भूल कर
निश्चेष्ट रहनेवाले नागरिक कर्तव्य से दूर
स्वार्थता में लीन होकर झूठे मान की खातिर
देश द्रोहपूर्ण कार्य करने पर तुले हुए हैं

नागरिको ! आँखें ज़रा खोल कर देखो
माँ के हृदय की धड़कन सुन लो
कर्मवीरों की क्षोणित बिंदुओं से सिंचा हुआ
भारत देश के उत्थान के वास्ते मंगलकार्य करो।

मनमोहक चित्र मेरे मन-पट पहले ही अंकित था। वह अब भी उतना ही ताज़ा है जितना पहले था। अपने बालकपन के उन मीठे अनुभवों तथा दृश्यों को कोई कैसे भूल सकता है?

परिवार में होनेवाले विशिष्ट अवसरों पर जैसे विवाह, नन्हे बच्चों का अन्नप्राशन, लड़कों का उपनयन संस्कार आदि कुछ भी हो हमारे नाते-रिश्ते के सभी लोग घर आया करते थे। केवल मांगलिक अवसरों पर ही नहीं, बल्कि किसी की मृत्यु जैसे दुःख में भी भाग लेने वे आते थे। इस प्रकार हमारी फूफी एवं बहिनें आतीं तो उनके बच्चे भी आते थे जिनके साथ हमारी अटूट एवं स्थायी दोस्ती बनी थी। उन दिनों की यादों में मेरा मन डूब जाता है। उन मीठी स्मृतियों के साथ महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के ये पंक्तियाँ भी याद आती हैं। उन्होंने लिखा है-' ज़िन्दगी का वह काल अत्यन्त अव्यवस्थित था। हमारी यह पृथ्वी अपनी प्रारम्भिक दशा में स्थल-जल-मिश्रित हो अतीव पंकिल थी । उस समय यहाँ उभयचर कुरूप जीव-जन्तु थे। उसी प्रकार हमारा अपरिपक्व मन भी सन्ध्या के धूमिल प्रकाश में विकृत रूप धारण कर दुर्गम एवं दुर्घट आरण्य की छाया में इधर-उधर भटकता है। अपने इस मानसिक परिवर्तन-काल में जो कुछ मैंने सीखे हैं वे सब हमारे प्रामाणिक ग्रन्थों में अंकित किये हुए होंगे।" मुझे लगता है कि महाकवि का यह कथन मेरे बारे में भी सत्य है। भेद केवल इतना ही है कि अपने बचपन में बहुत लाड-प्यार पाने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ था।

प्रश्नोत्तरी

डॉ. एस. श्रीदेवी

1 दास्तलशफा उपन्यास के रचनाकार कौन है?

2 विश्व बाहु परशुराम नामक उपन्यास के रचयिता कौन है?

3 असलाह किस उपन्यासकार की कृति है?

4 जलता हुआ गुलाब के लेखक कौन है?

5 शीतांशु भारद्वाज की उपन्यास कृति कौन सी है?

6 शाल्मली की लेखिका कौन है?

7 अंधेरों के परे उपन्यास के लेखक कौन है?

8 अपना मोर्चा किस लेखक की कृति है?

9 जुगलबंदी उपन्यास के लेखक कौन है?

10 नदी बहती थी नामक उपन्यास के रचयिता कौन है?

11प्रेमचंद के किस उपन्यास को गोदान की पूर्वपीठिका माना गया है?

12गोबर प्रेमचंद के किस उपन्यास का पात्र है?

13यशपाल के किस उपन्यास में देश विभाजन की त्रासदी है ?

14 टोपी शुक्ला किस लेखक की कृति है?

15खंजन नयन उपन्यास हिंदी के किस प्रसिद्ध कवि के जीवनी पर आधारित है?

16 सुख-दुख उपन्यास के रचयिता कौन है?

17 राई और पर्वत उपन्यास के लेखक कौन है?

18 क्याप उपन्यास किस लेखक की कृति है?

19 वृंदावन लाल वर्मा के उपन्यास किस वर्ग के हैं?

20 जिप्सी उपन्यास के लेखक कौन है?

उत्तर

1. राधाकृष्ण मिश्र
2. विश्वंभर नाथ उपाध्याय
3. गिरिराज किशोर
4. तरसेम गुजराल
5. फिर वही बेखुदी
6. नासिरा शर्मा
7. सुरेंद्र वर्मा
8. काशीनाथ सिंह
9. गिरिराज किशोर
10. राजकमल चौधरी
11. प्रेमाश्रम
12. रंगभूमि
13. झूठा सच
14. राही मासूम रजा
15. सूरदास
16. अमृतराय
17. रांगेय राघव
18. मनोहरश्याम जोशी
19. ऐतिहासिक
20. इलाचंद्र जोशी

सभा के दीक्षांत समारोह में वरिष्ठ साहित्यकार श्री. के.जयकुमार आई ए एस भाषण दे रहे हैं।

सुगम हिन्दी पुरस्कार वितरण पूर्व मंत्री, श्री.जी.सुधाकरन आलप्पुष़ा जिले में कर रहे हैं।

श्री. पयट्टुविला सोमन द्वारा रचित 'मीठे अंगूर'
का प्रकाशन श्री.जोर्ज ओणक्कूर कर रहे हैं।

RNI No. 7942/1966
Date of Publication :15-08-2023
Date of posting : 20th of Every month

KERAL JYOTI

AUGUST 2023

Vol. No. 60, Issue No.05
Regn. No. KL/TV(S) 381/2022-2024
Price Rs. 25/-

A monthly Publication of Kerala Hindi Prachar Sabha approved for School Libraries by the Education Dept., Govt. of Kerala as per notification No. B-3 / 4036/83 SIE dated 20-9-1985
Approved by University of Kerala as per order No. Ac. A II / 1 / 31965 / Std. Journals/2013 / dtd : 27-6-2013

कोषिक्कोड जिले में सुगम हिन्दी परीक्षा पुरस्कार वितरण समारोह का उद्घाटन पूर्व मंत्री, श्री. के.मुरलीधरन एम एल ए कर रहे हैं। सान्निध्य प्रो.डॉ.जी.गोपिनाथन।

कोट्टयम जिले में सुगम हिन्दी परीक्षा पुरस्कार वितरण समारोह में पूर्व मंत्री मैथ्यू टी थोमस उद्घाटन भाषण दे रहे हैं।

स्वर्गीय के. वासुदेवन पिल्लै अनुस्मरण सम्मेलन में सभा के मंत्री अधिवक्ता बी. मधु भाषण दे रहे हैं।

केरल हिंदी प्रचार सभा, तिरुवनंतपुरम-695014 के लिए मंत्री अ.व. मधु बी द्वारा प्रकाशित; राष्ट्रवाणी मुद्रणालय, केरल हिंदी प्रचार सभा, तिरुवनंतपुरम-695014 में मुद्रित तथा प्रो.डी.तंकप्पन नायर द्वारा संपादित।

Published by the Secretary, Adv. B. Madhu for Kerala Hindi Prachar Sabha, Tvpm-695 014; Printed at Rashtravani Mudranalaya, Kerala Hindi Prachar Sabha, Tvpm-695 014 and edited by Prof. D. Thankappan Nair